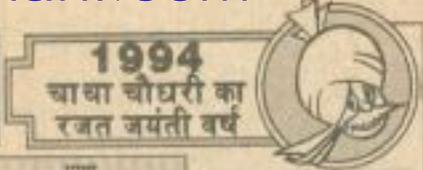


भारत में सर्वाधिक बिकने वाले कामिक्स
डायमण्ड कामिक्स



<p>प्राण चाचा चौधरी और बिंदू की कान</p>	<p>प्राण श्रीमतीजी और बूढ़ा</p>	<p>प्राण रमन और डाक्टर साहब</p>	<p>ज्वालाशुद्धी</p>
<p>फौलाबी सिंह और खतरनाक दलहन</p>	<p>अग्निपुत्र अभय और चम्पा चम्पा</p>	<p>11 से 16 डैंगल</p>	<p>डायमण्ड कामिक्स डायमण्ड सिन्ड्रेक-20</p>
<p>जेम्स बाण्ड-21</p>	<p>डायमण्ड कामिक्स डायमण्ड फैण्टम-32</p>	<p>रमना जीनी और ज्ञान</p>	

जीवन में भर लो रंग डायमण्ड कामिक्स के संग!

अंकुर बाल बूक क्लब के सदस्य बनें और अपने जीवन में छुटियाओं और मनोरंजन की बहार लाएं।
और कितना आसान है अपने इन पिय पाठों से मिलना!

आप एक बार 'अंकुर बाल बूक क्लब' के सदस्य बन जाइए फिर न ही बार-बार आपकी अपने सभी पाठों से डायमण्ड कामिक्स खाने से भिन्न कहना पड़ेगा और न ही बार-बार अपने पुस्तक विक्रेता को बार-बार दिखाना पड़ेगा, सब आपकी यह किल्ला की नहीं यह आपकी कि कहीं कल-कलिंग पर डायमण्ड कामिक्स समाप्त न हो जाय। क्लब का सदस्य बन जाने पर आपको विशेष लाभ यह रहेगा कि आपको आसानी से कामिक्स की मुफ्त की वहा समय मिलती रहेगी।

कितना सुख है 'अंकुर बाल बूक क्लब' का सदस्य बनना!
आप क्लब से भिन्न पाए क्लब की भरपूर और सस्ती शूल्क के रंग अपने डाक टिकट या मनीऑर्डर के रूप में भेज दें।

हर माह छः पुस्तकें एक साथ मंगवाने पर 4/- रुपये की विशेष छूट व डाक खर्च की (सामान्य 7/- रुपये) की सुविधा भी आवेगी। हर माह इन पांच छः पुस्तकें निश्चित करिने की आपकी

वह पुस्तकें पसन्द न हो तो डायमण्ड कामिक्स की सूची में से पांच छः पुस्तकें आप पसन्द करके भेजना सकते हैं लेकिन क्लब से कम पांच से छः पुस्तकें भेजना जरूरी है।

आपको हर माह Choice काई भेजा जाएगा। यदि आपको निश्चित पुस्तकें पसन्द हैं तो वह काई भेजकर इसे न भेजें। यदि निश्चित पुस्तकें पसन्द नहीं हैं तो अपनी पसन्द की क्लब से क्लब 7 पुस्तकें के साथ भेजें लेकिन कोई पुस्तक उपलब्ध न होने की स्थिति में उनमें से 5 या 6 पुस्तकें आपको भेजी जा सकें।

इस योजना के अंतर्गत हर माह की 20 तारीख को आपको दो पी. मनी आवेगी।

हो: है 'अंकुर बाल बूक क्लब' का सदस्य बनना आसानी/आसानी है और आपको द्वारा दो वर्ष निश्चितों को प्राप्त करना आसानी/आसानी है। मैंने निश्चितों को अच्छी तरह पढ़ लिया है। मैं हर माह की पी. पुस्तकें का सदस्य बनना/करती हूँ।

नाम _____
 पता _____
 डाक _____ जिला _____ जिल्ला _____
 सम्पत्ता शूल्क 10 रु. डाक टिकट मनीऑर्डर से भेज राह/रही हूँ।
 भेज काल _____
 नोट: सदस्यता शूल्क प्राप्त होने पर ही सम्पन्न बनाया जाएगा।

डायमण्ड कामिक्स प्रा. लि.
2715, दरियागांज नई दिल्ली-110002

120 रु.
के स्थान पर केवल 60 रु. में प्राप्त करें

डायमण्ड कामिक्स मैजिक फन बॉक्स

- 5 मल्टी आइमेंशनल कामिक्स मूल्य 30/-
- 10 डायमण्ड कामिक्स मूल्य 30/-
- 1 लंच बॉक्स मूल्य 20/-
- अनेक आकर्षक उपहार मूल्य 40/-

कुल मूल्य 120/-

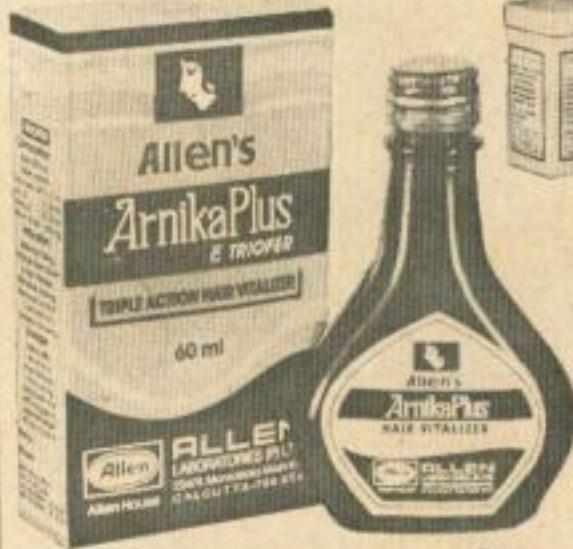
बालों की समस्या ?

बालों का गिरना? असमय पकना? खुश्की होना?

यह सब बालों की बिमारी है ही नहीं, यह केवल लक्षण मात्र हैं। इसलिए इनके उपचार के लिए बालों की जड़ों में औषधि लगाने के साथ-साथ सटिक खाने की भी औषधि नितान्त आवश्यक है। ...डा० सरकार



न हो खुश्की, घने काले बाल जगमगाते हों, तो आर्निकाप्लस लगाता और होगा ट्रायोफर खाना। इस दोनों के करने से बालों का गिरना होगा बन्द, असमय पकना रोकेंगा, और खुश्की होगी कसों दूर। सर में होगी ठंडक, पेट की गड़बड़ों होगी दूर, बालों में भी होगी मजबूती, बालों के बढ़ने में होगी मदद, सभी तों नये, घने और काले बाल बढ़ेंगे। इससे आपके रूप में उगेगी एक आभा नयी, डर नहीं क्योंकि होगा ही लाभ, नुकसान नहीं।



विश्व में पहली बार

बालों के सम्पूर्ण उपचार के लिए

डा० सरकार का-एक लाभकारी जविष्कार - आर्निकाप्लस-नेलविहीन हेयर लोशन और खाने के लिए होमियो हेयर टॉनिक-ट्रायोफर टेबलेट दोनों, एक ही पैकेट में।

पैक - ६० मि.लि. और १०० मि.लि.

आर्निकाप्लस-ट्रायोफर

ट्रिपल ऐक्शन हेयर वाइटलाइजर

बालों की समस्या के समाधान के लिए शोध से प्रभावित होमियो औषधि।

सेवन विधि :
पैकेट के नीचे

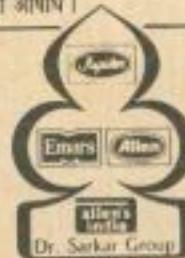
सीवोमीन निर्माता की

सहयोगी संस्था **Allen** का

होमियो रिसर्च का एक उपहार।

एलेन लेवोरेटरीज प्रा० लि०

एलेन हाउस, २२४/एच, मानिकतला मेन रोड,
कलकत्ता-५४, फोन : ३६-३०१६



एलोपैथिक
आयुर्वेदिक
होमियोपैथिक
औषधि निर्माता

जिनके प्रयत्न से ही मिले आपको आरोग्य और विश्वास।

Marketed by :

allen's india **Allen's India**
Marketing Pvt. Ltd.
ArnikaPlus Apartment, Sealdah
35, A. P. C. Road, Calcutta-9
Phone : 350-9026

Allen's Ad. India

84/77B, Narayan Bag, G. T. Road, Kanpur-208003, Ph-242844.

Branch Offices : Halwai Lane, Raipur-492001, Ph-26263

(Behind Post Office) East Boring Canal Road, Patna-800 001, Ph.-236078

छुट्टियां बिताने के लिए करना है कुछ काम पढ़ो ऐसी पुस्तकें जो दें खेल-खेल में ज्ञान!



- 50 फिल्म वर्ग पहेलियां
- 50 मनोरंजक वर्ग पहेलियां
- 50 दिमागी वर्ग पहेलियां
- 50 तेजतरार वर्ग पहेलियां

बताइए- 'गुनाह' के बेताब नायक, 'दामिनी' में पुरस्कृत। विश्व का सबसे छोटा देश। पोप के साम्राज्य की राजधानी? इन वर्ग पहेलियों में ऐसे ही अनेक दिलचस्प और ज्ञानवृद्धि करने वाले अनेक प्रश्नों के उत्तर खोजिए। फिल्म, खेलकूद, राजनीति, साहित्य, देश-विदेश-आदि सभी विषयों पर अपने ज्ञान की परीक्षा लेने और बहुत-कुछ नया सिखाने वाली रोचक पुस्तकें।

डिमाई आकार • प्रत्येक में 64 से 72 पृष्ठ • मूल्य 10/- प्रत्येक
• डाकखर्च 5/- प्रत्येक • चारों एक साथ लेने पर डाक खर्च माफ

501 रोचक तथ्य



पुस्तक में पढ़िए सीकड़ों सनसनी-खेल तथ्य जैसे-मनुष्य की रक्त-वाहिनियों की कुल लम्बाई 1,00,000

मील लम्बी होती है, फ्रोजर में रखी गर्म पानी की ट्रे ठण्डे पानी की ट्रे से पहले जमती है, आदि-आदि।

बड़ा आकार • मूल्य: 15/-
• डाकखर्च 5/-

101 दिमागी कसरतें



एक पेड़ पर दस कवूर बैठे थे। तभी गोली चली। एक कवूर मर गया। कितने कवूर बचे? "9"। नहीं जनाब! एक भी नहीं

बचा, क्योंकि बाकी 9 कवूर गोली की आवाज सुनकर उड़ गए। पुस्तक में आपको ऐसी ही पहेलियां पढ़ने को मिलेंगी।

डिमाई आकार • मूल्य: 20/-
• डाकखर्च 5/-

आओ जादू सीखें



प्रसिद्ध जादूगर श्री पट्टाभिराम द्वारा लिखित इस पुस्तक द्वारा आप जादूभरी ट्रिक्स सीख सकते हैं, जो करने में सरल

हैं और घर पर ही उपलब्ध सामग्री द्वारा की जा सकती हैं।

डिमाई आकार • मूल्य: 20/-
• डाकखर्च 5/-

सभी पुस्तकें अंग्रेजी में भी उपलब्ध

□ ताश के जादू □ हाथ की सफाई □ परछाई के खेल

पुस्तक ताश के जादू में सीखिए ताश के पत्तों की मदद से की जाने वाली अनेक ट्रिक्स। हाथ की सफाई आपको अर्चभित कर देने वाले जादू के अनेक करिश्में सिखाएगी। परछाई के खेल में हाथ और उंगलियों की मदद से परछाई चित्र बनाना सीखिए। सभी खेल सरल भाषा में क्रमबद्ध (step by step) तरीके से रंगीन चित्रों की मदद से सिखाए गए हैं। छुट्टियों में इन्हें सीख कर अपना 'शो' आयोजित करें और अपने मित्रों को बताएं कि आप भी एक अच्छे जादूगर हैं। अंग्रेजी में भी उपलब्ध

बड़ा आकार • मूल्य: 24/- प्रत्येक • डाकखर्च 5/- प्रत्येक



निकट के बुक स्टॉल, ए.एच. श्रीलक्ष्मी के रेलवे बक्स अगुओं के बुक स्टॉलों पर उपलब्ध। सी.पी.पी. द्वारा संग्रह का पता -

पुस्तक महल

10-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-110002 फोन: 3268292, 3268293
लखनऊ: • बम्बई फोन: 2010941, 2053387 • बंगलूर फोन: 2234025 • पटना फोन: 653644



आओ बात करें

औरंगाबाद जिले में जाम्ब गांव है। कई सौ साल पहले वहां राणूबाई ने एक बालक को जन्म दिया। नाम रखा नारायण। पांच बरस का होने पर नारायण का उपनयन संस्कार हुआ। बचपन में बालक बड़ा ऊधम मचाया करता था।

नारायण हनुमान जी का जाप किया करता। हनुमान जी प्रसन्न हुए। उन्होंने दर्शन दिए। कहते हैं, उन्होंने ही नारायण का नाम रामदास रख दिया। रामदास अभी बारह बरस का ही था कि भजन-पूजन में ज्यादा लगा रहता। माता-पिता को धिंता होने लगी—कहीं लड़का साधु न हो जाए। उन्होंने विवाह कर देने का निश्चय कर लिया।

विवाह संस्कार के समय पुरोहित बोलने लगे—'शुभ लग्न, सावधान, सावधान।' बस तभी रामदास ऐसे सावधान हुए कि वहां से भाग निकले। सगे-सम्बन्धी देखते रह गए, दूढ़ते रह गए—रामदास तो यह जा और वह जा। बारह बरस तक उनका कहीं कुछ भी पता न चल सका।

रामदास नासिक-पंचवटी में रहकर तप करते। फिर गुफा में रहकर राम-मंत्र का जाप करने लगे। धर्म-ग्रंथ भी बराबर पढ़ा करते। जप-तप का यह सिलसिला काफी समय तक चलता रहा। फिर वह भारत-भ्रमण को निकल पड़े। उन्होंने जगह-जगह देखा कि मुसलमान शासक हिंदुओं को सताते हैं।

धूमते-धूमते एक दिन रामदास ने पैठण में कीर्तन किया। वहां के लोगों ने उन्हें पहचान लिया। कहा—'आप तो निश्चित होकर तीर्थों में घूम रहे हैं। आपकी मां रो-रोकर अंधी हो गई है।' वह तुरंत जाम्ब गांव पहुंचे। वहां द्वार पर जाकर अलख जगाई। मां ने आवाज सुनी तो पूछा—'कौन, मेरा बेटा नारायण?'

'हां माता जी, मैं ही हूँ।'—रामदास बोले।

उन्होंने मां के पास पहुंचकर, उनके चरणों में मस्तक रख दिया। चौबीस बरस बाद मां का पुत्र से मिलन हो रहा था। आंखों से प्रेम के आंसू रुकते न थे। पुत्र ने मां की आंखों पर हाथ फेरा तो मां की आंखों में फिर से ज्योति आ गई।

रामदास ने मां को गीता सुनाई। फिर मां से आज्ञा लेकर गोदावरी की परित्रमा पर निकल पड़े। रामदास जहां-जहां भी जाते, मठ स्थापित करते चलते। उन्होंने सात सौ से अधिक मठ बनाए।

उन्हीं दिनों छत्रपति शिवाजी धर्म-राज्य की स्थापना में लगे थे। महाराज शिवाजी ने समर्थ रामदास को गुरु बनाया और गुरु मंत्र लिया। सज्जनगढ़ में गुरु रामदास रहते थे। शिवाजी अनेक बार उनके दर्शन करने आया करते थे। एक बार महाराज शिवाजी सतारा में थे। रामदास भिक्षा मांगते हुए राजद्वार पर जा पहुंचे। महाराज ने एक कागज इनकी झोली में डाल दिया। जिसमें लिखा था—'आज तक जो कुछ भी मेरा है, वह स्वामी के चरणों में समर्पित है।' दूसरे दिन सब छोड़-छाड़कर महाराज स्वयं झोली लटकाकर, गुरु के साथ भिक्षा मांगने लगे।

गुरु रामदास ने उन्हें समझाया—'राज्य करना ही तुम्हारा धर्म है।' तब महाराज शिवाजी ने फिर से शासन हाथ में लिया।

सौ साल पहले एक महापुरुष ने छोटे-से गांव पिलानी में रामनवमी को जन्म लिया—उनका नाम था घनश्याम दास। देश भर में उनकी शताब्दी मनाई जा रही है। उन्होंने देश में नए-नए उद्योग लगाए। शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए छोटी-बड़ी अनेक संस्थाएं स्थापित कीं।

यह अंक उन्हीं दादा जी की याद को समर्पित है। हम सब उनके आदर्शों को अपनाने का प्रयास करें। उनको नमन।

— तुम्हारे भइया

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय



कहां क्या है

कहानियां

विष्णु भट्ट	बड़ा भाई	८
रमाकांत 'कांत'	इधर-उधर	१२
दिलीपकुमार तेतरवे	हार में जीत	१४
हेमंतकुमार चावड़ा	बीरो भगत	१६
विभावरी सिन्हा	निकलो घर से	१८
श्रीनिवास वत्स	अधुरी रचना	१९
ईश्वरलाल प. वैश्य	चाल बेचाल	२७
दत्ता जंगम	बंदर का मुकुट	२८
अज्ञात	लासारी	२९
नयनकुमार राठी	फोटली में गहने	४५
उमा शर्मा	मत छुओ मुझे	४८
रूपक प्रियदर्शी	नाम का मोह	४८
मदुला हालन	गौरैया का उपहार	५०
विनोद पंत	पुहले की लाठी	५८
सुनीति	बोले नगराज	६३
डा. एम. एस. अग्रवाल	पधारो प्रभु	७३

कविताएं

विष्णु खन्ना, योगेन्द्र सिंह भाटी 'योगी', हरस्वरूप धंवर,
चंद्रकांता विश्वकर्मा, दिगाज मुरादाबादी ४७

इस अंक में विशेष

पिलानी में एक दिन	रंगीन झांकी	२२-२३
बसंतकुमार बिरला	पूज्य काकोजी : मधुर यादें	२४
दो देवियां	चित्र-कथा	३३-३६
किसका फोन	चित्र-कथा	४१-४४
कहें कहानी नई पुरानी	रंगीन झांकी	५५
बृजमोहन गुप्त	अजब-अनोखी दुनिया	७१

संक्षेप

एलबम ११ ; ऊपर कितने बुद्धिमान हैं २६ ; चटपट ५२ ;
तेनालीरम ५३ ; ज्ञान-पहेली ६१ ; चीटू-नीटू ६५ ; पत्र मिला
६७ ; पुरस्कृत कथाएं ६८ ; नई पुस्तकें ७० ; पत्र-मित्र ७४

आवरण : तिमिर दत्ता

सहायक सम्पादक : देवेन्द्रकुमार

मुख्य उप-सम्पादक : रत्नप्रकाश शील

वरिष्ठ उप-सम्पादक : क्षमा शर्मा; उप सम्पादक : डा.

चन्द्रप्रकाश; डा. नरेन्द्रकुमार ; चित्रकार : नारायण



एक गरीब ब्राह्मण था। वह अपना जीवन निर्वाह करने के लिए पूजा-पाठ के अलावा बच्चों को संस्कृत भी पढ़ाता था। उसके दो लड़के थे। बड़े का नाम भैरवप्रसाद और छोटे का नाम कामताप्रसाद था। उसने अपने दोनों बेटों को गुरुकुल में पढ़ने के लिए भेजा।

शिक्षा पूरी कर, दोनों भाई अपने घर लौट आए। पिता को उन्होंने विश्राम करने के लिए कहा और पूरे घर का भार संभाल लिया। वे पूजा-पाठ करवाने के लिए आसपास ही नहीं, दूर-दूर के गांवों में भी जाने

बड़ा भाई

—विष्णु भट्ट

लगे। उन दोनों का यश चारों ओर फैल गया। पहले तो दोनों भाई एक साथ एक ही दिशा में जाते। जब उन्हें प्रसिद्धि मिलने लगी, तो वे दोनों अलग-अलग दिशाओं में जाने लगे।

दोनों को प्रसिद्धि के साथ-साथ अच्छी आमदनी भी हो रही थी। वे दोनों जब घर लौटते तो अपनी पूरी आमदनी अपने माता-पिता के चरणों में रख देते। कभी बड़े भाई को आमदनी होती, तो कभी छोटे को।

नंदन । जून १९९४ । ८

लेकिन जो कुछ आमदनी होती उसी में पूरा परिवार बहुत सुखी था।

उनके दिन बड़ी अच्छी तरह से बीत रहे थे। दोनों भाइयों का विवाह भी हो गया। परिवार में दो सदस्यों की और वृद्धि हो गई। उनका भी खर्च चलाने के लिए उन दोनों को पहले से अधिक परिश्रम करना पड़ता था। दोनों बहुओं ने घर-गृहस्थी का काम संभाल लिया।

एक दिन, अचानक ब्राह्मण बीमार हो गया। गांव के वैद्य जी का इलाज करवाया गया। अपने पिता की देखभाल और सेवा में उन दोनों ने कोई कसर नहीं छोड़ी। इस कारण बाहर कमाई करने भी वे नहीं जा सके। धीरे-धीरे जो बचत थी, वह भी खर्च हो गई। इतना सब होने पर भी वे अपने पिता को बचाने में सफल नहीं हो सके। मरते-मरते उनके पिता ने कहा—“तुम दोनों भाई मिलकर रहना। कोई भी समस्या हो, तो उसे मिल-बैठकर सुलझाने का प्रयत्न करना। किसी के बहकावे में न आना।”

अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् वे दोनों भाई असहाय हो गए। उन्हें कुछ भी सुझाई नहीं दे रहा



था। उनकी पत्नियों ने उन्हें घर में सारा सामान समाप्त होने की सूचना दी।

तब दोनों कमाई करने के लिए चल पड़े। जब शाम को वे लौटे, तो उन्होंने माता से कहा—“अपनी आमदनी, पिता जी के बाद आपको दें तो कोई आपत्ति तो नहीं?”

मां ने कहा—“बेटो! पिता के बाद घर का मुखिया बड़ा बेटा होता है। इसलिए सारी आमदनी बड़े भाई भैरव को ही अपने पास सुरक्षित रखनी चाहिए। आवश्यकता के अनुसार दोनों भाई मिलकर खर्च करें, ताकि पूरे परिवार को किसी तरह की कठिनाई न हो।”

दोनों भाई मां की बात मान गए, लेकिन यह नियम कुछ ही दिन चल पाया। दुर्भाग्य से दोनों भाइयों की पत्नियां इस नियम को तोड़ने का कोई न कोई बहाना ढूँढ़ने लगीं। वे किसी न किसी बात पर बहस करने लगतीं। एक कहती उसका पति अधिक कमाता है, तो दूसरी कहती उसका पति अधिक कमाता है। इस प्रकार घर में अशांति बढ़ने लगी। दोनों ने अपने पतियों के कान भरने आरंभ कर दिए। कलह बढ़ती गई।

एक दिन उनकी मां बीमार हो गई। उनकी मां से घर में सुख-शांति की जगह, कलहपूर्ण वातावरण नहीं देखा गया। अपने पति की मृत्यु के बाद इतनी जल्दी

सुखद दिन दुख भरे हो जाएंगे, ऐसा वह सोच भी नहीं सकती थीं। वह ऐसी बीमार हुई कि कोई भी दवा कारगर साबित नहीं हुई। उनकी अमृतमय दवा थी—सब हिलमिल कर रहें। जो भी मिल रहा है, उसे आपस में मिल-बैठकर बड़े प्रेम से स्वीकारें। किंतु ऐसे हालात बनते जा रहे थे कि जैसा वह सोचती थीं, वह सम्भव नहीं हो पा रहा था। आखिर मां की मृत्यु हो गई।

मां के मरने के बाद दोनों भाई अलग-अलग हो गए। जब सम्पत्ति के बंटवारे की बात आई, तो बड़े भाई ने सब कुछ छोटे भाई को दे दिया। उसे इतने पर भी संतोष नहीं हुआ। उसने अपना पैतृक मकान भी मांग लिया। इस तरह बड़ा भाई घर विहीन होकर रह गया।

दुखी होकर उसने गांव छोड़ दिया। अपनी पत्नी को साथ लेकर, वह पास के किसी गांव में बसने के लिए चल पड़ा।

दोनों भूख से व्याकुल थे। अपनी थकान मिटाने के लिए वे बरगद के पेड़ की छाया में सुस्ताने लगे। तभी एक महात्मा जी अपने शिष्यों के साथ उधर से गुजरे। उनको वैसी हालत में देखकर वह समझ गए कि वे बहुत ही दुखी हैं। महात्मा जी उनके पास गए। लड़खड़ाते हुए दोनों उठे और महात्मा जी को सादर प्रणाम किया। तब महात्मा जी ने आशीर्वाद

दिया। उनसे सारी बात पूछी। भैरवप्रसाद ने आदि से लेकर अंत तक पूरी कहानी सुना दी। महात्मा जी ने बड़े भाई की बहुत प्रशंसा की। अपने पास से उन्हें भोजन कराया। कहा—“तुम्हारा त्याग कभी व्यर्थ नहीं जाएगा।”

महात्मा जी की बात से भैरव को बहुत शांति मिली। वह वहीं झोंपड़ी बनाकर रहने लगा। जल्दी ही सबको पता चल गया कि वह एक ईमानदार आदमी है, विद्वान पंडित भी है। बस, फिर क्या था! लोग उसके पास आने लगे। उसका काम फैलने लगा। घर में लक्ष्मी बरसने लगी।

उधर छोटे भाई कामताप्रसाद की बेईमानी की बात भी चारों ओर फैल गई। जो सुनता वही कामताप्रसाद को भला-बुरा कहता।

धीरे-धीरे लोगों ने कामताप्रसाद को पूजा-पाठ के लिए बुलाना बंद कर दिया। काम बंद हुआ तो घर में रोटी के लाले पड़ गए। कामताप्रसाद की हालत देख, गांव वाले कहते—‘बुरे का फल बुरा ही होता है। इसने अपने सीधे-सादे भाई को घर से निकाला। वह गया तो साथ-साथ इसके घर से लक्ष्मी भी चली गई।’ कामताप्रसाद सुनता और चुप रह जाता। गांव वाले कहते तो सच ही थे।

एक दिन भैरवप्रसाद को काम से दूसरे गांव जाना था। रास्ते में उसका अपना गांव भी पड़ता था।

जब वह अपने गांव के पास पहुंचा तो उससे रहा नहीं गया।

घर के सामने पहुंचा, तो चकित रह गया। थोड़े-से दिन में ही घर खंडहर हो चुका था। कामता बहुत कमजोर हो गया था। उसने भैरव को देखा तो फूट-फूटकर रोने लगा। उसकी पत्नी ने आकर भैरव के पैर पकड़ लिए। कहने लगी—“भइया, हमें माफ कर दो। आप यहां से गए तो सारी सुख-शांति चली गई। हम दाने-दाने को मोहताज हो गए।”

भैरव ने कामताप्रसाद को गले से लगा लिया। बोला—“चिंता किस बात की? मैं हूं न पगले।”

कामता और उसकी पत्नी जाकर भाभी को भी मना लाए। दोनों फिर पहले की तरह रहने लगे। ●

नंदन । जून १९९४ । १०

माटी की मूरत

—धनश्यामदास बिरला

महाभारत में एक कथा है कि निषादराज के एक लड़के को, जिसका नाम एकलव्य था, धनुर्विद्या सीखने की अत्यंत लालसा थी। धनुर्विद्या सीखने के हेतु वह द्रोणाचार्य जी के पास पहुंचा।

आचार्य ने बालक से पूछा—“तुम कौन हो?”
“मैं निषादराज का पुत्र हूं।”

इस पर द्रोणाचार्य ने कहा—“तुम शूद्र हो, अतः मैं तुम्हें यह विद्या नहीं सिखा सकता।” बालक यह सुनकर न तो दुःखित हुआ और न निराश ही हुआ। उसने वन में जाकर द्रोणाचार्य की एक मिट्टी की मूर्ति बनाई और उसे ही अपना गुरु मानकर, बिना किसी की सहायता के धनुर्विद्या का अभ्यास करने लगा।

एक दिन पांडव बालक उस वन की ओर आए थे। उनके साथ एक कुत्ता था, जो उस निषाद बालक को देखकर भौंकने लगा। इस पर उस निषाद ने कुत्ते पर ऐसी कारीगरी से बाण बरसाए कि कुत्ता मरा नहीं, पर उसका मुंह बाणों से भरकर बंद हो गया। पांडवों ने जब यह दृश्य देखा, तो उन्हें अत्यंत आश्चर्य हुआ और उन्होंने यह सारी कथा जाकर आचार्य से कही। उन्होंने यह भी कहा कि ऐसा कुशल धनुर्धारी तो हमने देखा नहीं।

यह सुनकर द्रोणाचार्य उन सबको साथ लेकर उस बालक के पास पहुंचे और उससे पूछा—“किस, यह विद्या तुमने किससे सीखी?”

उसने उत्तर दिया—“मेरा गुरु द्रोणाचार्य है, उसी से मैंने यह विद्या प्राप्त की है।” द्रोणाचार्य को आश्चर्य हुआ, क्योंकि उन्होंने कभी उसको दीक्षा दी हो, ऐसा उन्हें स्मरण नहीं था। ज्यादा प्रश्नोत्तर के बाद यह पता लगा कि उसने मिट्टी की मूर्ति को द्रोण का प्रतीक बनाकर उसी से यह विद्या प्राप्त की है।

प्रतीक की भी श्रद्धा और लगन के साथ पूजा करने से उस प्रतीक में एक उच्च शक्ति का आविर्भाव हो जाता है, वह उपासक को वांछित फल देता है।

जन्म शताब्दी के अवसर पर

नंदा एलबम : १२७



जन्म : रामनवमी १८९४
निधन : ११ जून १९८३

भारत के गौरव
घनश्यामदास बिरला

इधर-उधर

—रमाकांत 'कांत'

स्वामी श्रद्धानंद एक पहुंचे हुए महात्मा थे। उन्हें अनेक सिद्धियां प्राप्त थी। दूर जंगल में उनका आश्रम था।

दूर-दूर से भक्त उनके पास आते थे। स्वामी जी के दर्शन कर उन्हें अपने कष्ट बताते थे। स्वामी जी उनकी समस्याओं का निराकरण करते थे।

आश्रम में जो भी आता था वह खाना वही खाता था। भक्त आश्रम में चढ़ावा भी चढ़ाया करते थे। आश्रम के भंडार में कोई कमी नहीं थी। भंडार का नाम 'अक्षय भंडार' था। कई बार भक्त स्वामी जी से इस 'अक्षय भंडार' के बारे में प्रश्न करते थे। स्वामी जी

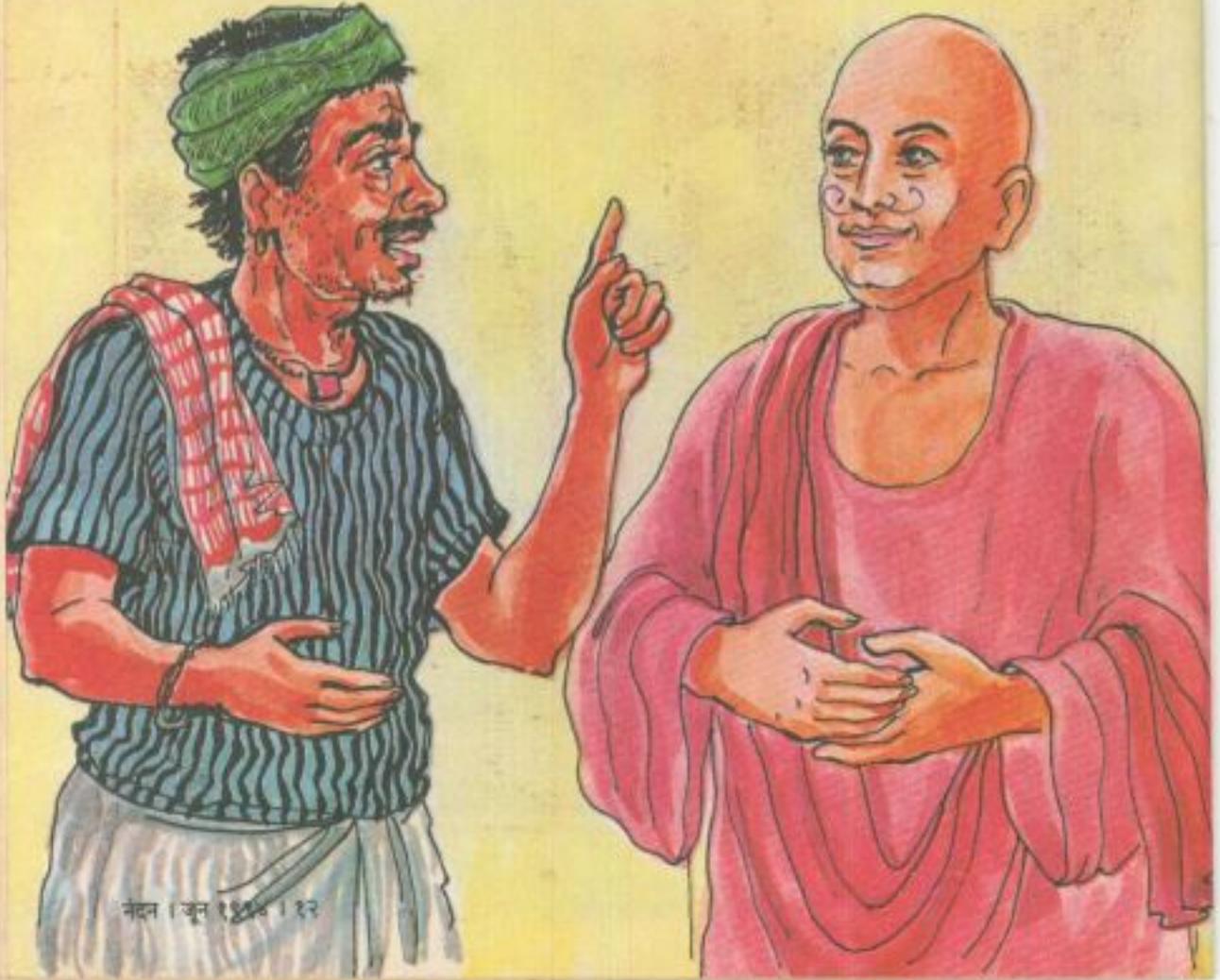
हंस कर कह देते— "मेरे पास सुखदा मणि है। यह साग चमत्कार उसी का है।"

एक चोर ने भी यह बात सुनी। उसने किसी भी तरह स्वामी की सुखदा मणि हथियाने की सोची।

फिर उसके दिमाग में आया कि साधु-महात्मा के यहां चोरी करना घोर पाप है। पर चोर को तो चोरी करनी ही थी।

एक रात चोर स्वामी जी की कुटिया में जा पहुंचा। उसने कहा— "बाबा, तुमने धन-दौलत देने वाली सुखदा मणि कहां छिपा रखी है? निकाल कर मेरे हवाले कर दो।"

—"बेटा इसमें क्या बात है? तुम जरूरतमंद हो। अतः तुम्हें सुखदा मणि मिल जाएगी। तुम दिन



में ही मुझ से मणि मांगते तो भी मैं आनाकानी नहीं करता।" स्वामी जी बोले।

—“साधु बाबा ! तुरंत सुखदा मणि भेरे हवाले करो। मैं यहां से जल्दी जाना चाहता हूं।”

“अरे भाई, मैं तुम्हें देने से कहा मना कर रहा हूं। सुखदा मणि को मैं कुटिया में नहीं रखता। वह चमत्कारी मणि है। बिना तप और साधना किए तुम इससे लाभ नहीं उठा सकते। मेरा कहना मानो और कुछ दिन कुटिया में रहो। विश्वास रखो, तुम खाली हाथ नहीं जाओगे।” —स्वामी जी ने समझाया।

—“बाबा, यह सब भेरे वश की बात नहीं है। आप सुखदा मणि मुझे जल्दी सौंप दें। उसके बाद मैं देख लूंगा।”

“आज तो मैं भी उस मणि को प्राप्त नहीं कर सकता। उसके लिए तुम्हें पूनम की रात में आना होगा।” —स्वामी जी ने कहा।

चोर को लगा कि स्वामी जी उसे बहका रहे हैं। स्वामी जी ने कहा— “विश्वास करो बेटा, मैं तुम्हें सुखदा मणि देना चाहता हूं। पर तुम्हें पूनम की रात में यहां फिर आना पड़ेगा।”

चोर कुछ सोच-विचार कर वहां से चला गया। पूर्णिमा की रात भी आ गई। चोर रात में स्वामी जी की कुटिया में पहुंचा। स्वामी जी वहां अकेले थे। चोर को देखते ही स्वामी जी बोले— “आओ बेटा, आओ। मैं तुम्हारा ही इंतजार कर रहा था।”

—“अब आप तुरंत सुखदा मणि का पता मुझे बता दें, ताकि उसे लेकर मैं चलता बनूं।”

—“सुखदा मणि के लिए तुम्हें आश्रम से उत्तर दिशा की ओर जाना होगा। जिस जगह भी चंद्रमा का प्रकाश तुम्हारे सिर पर एकदम सीधा पड़ने लगे यानि कि तुम्हारी परछाई सिमट कर तुम्हारे पैरों पर पड़ने लगे, तुम वहीं खुदाई कर देना। सुखदा मणि तुम्हें मिल जाएगी।”

स्वामी जी के कहे अनुसार चोर तुरंत उत्तर दिशा की ओर चल पड़ा। वह तब तक चलता रहा, जब तक चंद्रमा उसके सिर की सीध में नहीं आ गया। परछाई

सिमटी, उसने उसी स्थान पर खुदाई शुरू कर दी।

काफ़ी देर की खुदाई के बाद भी चोर को मणि नहीं मिली। उसके मन में विचार आया कि कहीं वह गलत जगह तो नहीं खोद रहा है। उसने फिर अपनी परछाई को देखा। तब तक परछाई फैल गई थी। वह भटकता हुआ इधर-उधर दौड़-भाग करने लगा। उसने जगह-जगह गड़दे खोद डाले। हताश होकर वह गुस्से में वहां से स्वामी जी के पास पहुंचा। स्वामी जी के चारों ओर भक्त बैठे थे। वह चिल्ला कर बोला— “स्वामी जी, मैंने तो सोचा भी नहीं था कि आप झूठ भी बोल सकते हैं। मैं रात भर परेशान रहा। जगह-जगह गड़दे खोद डाले, पर सुखदा मणि कहीं भी नहीं मिली।”

स्वामी जी हंस कर बोले— “बेटा, मैंने झूठ नहीं कहा था। तुम मेरी बात समझे ही नहीं।

“पूर्णिमा की शीतल, प्रकाशमय रात्रि का मतलब ज्ञान का प्रकाश है। इससे मन को संतोष मिलता है।

“यह सुखदा प्रकाश सदा मन में रहने पर तुम अज्ञान रूपी बुरे विचारों को खोद कर एक नहीं, अनेक सुखदा मणि ढूंढ़ सकते हो। तुम यह कर देखो। सुखदा मणि से तुम्हें धन ही नहीं वरन् ऐसे सुखों की प्राप्ति होगी, जो तुम्हें ढूंढ़े से नहीं मिल सकते।”

चोर अब स्वामी जी की बात का मर्म समझा। उसे लगा कि स्वामी जी जिस रास्ते की ओर इशारा कर रहे हैं, सचमुच उस पर चलने से सुख मिलेगा।

यह समझते ही अपने को धिक्कारने लगा। वह स्वामी जी के चरणों में गिर पड़ा। उसकी आंखों से आंसू बह चले। कांपते स्वर में बोला— “स्वामी जी, मैंने आज तक अपना जीवन व्यर्थ गंवाया। अंधेरे में ही भटकता रह गया। मुझ पर कृपा करें।”

महात्मा जी ने उसे स्नेहपूर्वक उठाया। मुसकराते हुए बोले— “पक्षताप के आंसुओं में तुम्हारा पाप धुल गया। मुझे विश्वास है, अब तुम्हें सुखदा मणि अवश्य मिल जाएगी।”

चोर को अंधेरे में प्रकाश दिखाई दे रहा था। ●

हार में जीत

—दिलीपकुमार तेतरवे

अंग प्रदेश में तलवारबाजी की प्रतियोगिता हो रही थी। मगध के राजकुमार चंद्रसेन ने मथुरा के राजकुमार वीरभद्र को छोड़कर अनेक वीरों को हरा दिया था। कल उसका वीरभद्र से अंतिम मुकाबला था। वीरभद्र तलवारबाजी में चंद्रसेन से अधिक अनुभवी और शक्तिशाली था।

चंद्रसेन ने चिंतित स्वर में अपने गुरु प्रचंड से पूछा— “गुरुवर, क्या मैं वीरभद्र को हरा सकता हूँ?”

गुरु प्रचंड ने कहा— “चंद्रसेन, अस्त्र-शस्त्रों के संचालन में शक्ति और अनुभव के अलावा युक्ति का भी महत्व होता है। कल के मुकाबले में तुमको युक्ति से काम लेना होगा। मैंने इसका प्रबंध कर दिया है। तुम्हारे लिए नई करामाती तलवार, ढाल और कवच की व्यवस्था कर दी है।”

चंद्रसेन ने तलवार, ढाल और कवच को देखा। ढाल में हीरा जड़ा था। तलवार चमक रही थी। उसने गुरु से पूछा— “गुरुवर, क्या मैं तलवार, ढाल और कवच का रहस्य जान सकता हूँ?”

गुरु प्रचंड ने बताया— “चंद्रसेन, कल सूर्य देवता तुम्हारी मदद करेंगे। जब तुम मैदान में उतरोगे, तब सूर्य की किरणें तुम्हारी तलवार, ढाल और कवच से टकराकर वीरभद्र की आंखों को चुंधिया देंगी। ऐसी दशा में वीरभद्र तुम्हारा मुकाबला नहीं कर सकेगा। तुम मौका मिलते ही उसे निहत्था कर देना।”

दूसरे दिन चंद्रसेन और वीरभद्र आमने-सामने थे। दोनों एक-दूसरे पर प्रहार करने लगे। अचानक वीरभद्र की आंखें चुंधिया गईं। उसने अपनी आंखें मीच लीं। चंद्रसेन ने मौका पाते ही वीरभद्र की तलवार के दो टुकड़े कर दिए। चंद्रसेन को विजयी घोषित कर दिया गया।

प्रतियोगिता में विजयी होने के बाद चंद्रसेन धमंडी हो गया था। उसके मित्र कृपाचंद्र और पुंगव भी नंदन। जून १९९४। १४



उसके दम्भ को बढ़ाते रहते थे।

एक दिन कृपाचंद्र ने चंद्रसेन से कहा— “युवराज, वीरभद्र प्रतियोगिता स्थल में प्रवेश करते समय भय से कांप रहा था। आप शेर की तरह वहां उपस्थित थे। आपकी तलवार बिजली की तरह चमकती थी।”

पुंगव ने भी कहा— “युवराज, वीरभद्र तो आपकी आंखों की चमक से डर गया था।”

अपने मित्रों की ऐसी बातें सुनकर चंद्रसेन फूला नहीं समाया।

एक दिन राजकुमार चंद्रसेन से उसके पिता महाराजा विचित्रसेन ने कहा— “मैं चाहता हूँ कि तुम मथुरा की राजकुमारी वसुंधरा से विवाह करो।”

चंद्रसेन ने पूछा— “मुझे इस विवाह के लिए क्या करना होगा?”

विचित्रसेन ने कहा— “चंद्रसेन, राजकुमारी वसुंधरा की शर्त है कि जो राजकुमार उसे तलवारबाजी में हराएगा, वह उसी से विवाह करेगा। तुम मथुरा जाओ और राजकुमारी को तलवारबाजी में हराओ।”

चंद्रसेन ने कहा— “पिता जी, मैं राजकुमारी को तलवारबाजी में अवश्य हराऊंगा। मैं उसके भाई युवराज वीरभद्र को तलवारबाजी की प्रतियोगिता में



पहले ही हरा चुका हूँ।”

अगले दिन, चंद्रसेन मथुरा को चल पड़ा। उसे वहाँ काले घोड़े पर सवार एक अन्य राजकुमार दिखाई पड़ा। चंद्रसेन ने अनुमान लगाया— 'यह राजकुमार भी वसुंधरा से विवाह करने के उद्देश्य से मथुरा जा रहा है।' वह राजकुमार की कोमल काया देखकर हंस पड़ा। उसने कहा— "ओ पिलापिले राजकुमार, वसुंधरा का सपना देखना छोड़ दे। मैं उससे विवाह करने जा रहा हूँ। अपने कमजोर हाथों से तुम तलवार कैसे उठाओगे? तुम जल्दी ही यहाँ से नौ-दो ग्यारह हो जाओ, वरना तलवार के एक ही वार से मैं तुम्हारा सिर घड़ से अलग कर दूँगा।"

काले घोड़े पर सवार राजकुमार यह सुन, घोड़े से उतर गया। उसने ध्यान से तलवार निकाली और राजकुमार चंद्रसेन की ओर देखा।

काले घोड़े वाले राजकुमार ने कहा— "अगर तुम्हारी मौत मेरे हाथों होनी होगी, तो भी मैं तुमको नहीं मारूँगा।"

यह सुन चंद्रसेन क्रोध से पागल हो उठा। दोनों की तलवारों झनक उठीं। चंद्रसेन ने अनेक दाँव, पैतरे और युक्तियों का सहारा लिया, पर काले घोड़े वाले राजकुमार को हरा नहीं पाया। वह उसे हरने की नई युक्ति सोच ही रहा था कि काले घोड़े वाले राजकुमार ने

ऐसा दाँव लगाया कि चंद्रसेन की तलवार के कई टुकड़े हो गए। वह जमीन पर गिर गया।

काले घोड़े वाले राजकुमार ने चंद्रसेन के सीने पर अपनी तलवार टिका दी और कहा— "आज आकाश में बादल छाए हैं। इसलिए सूर्य देवता तुम्हारी मदद नहीं कर पाए। तुम्हारी तलवार, ढाल और कवच प्रतिद्वंद्वी की आखें चुंधियाने के लिए हैं। खैर, तुमको किसी ने मुझसे पराजित होते नहीं देखा है। इसलिए शोक मत करो। जाओ, महल में राजकुमारी वसुंधरा तुम्हारा इंतजार कर रही होगी।" राजकुमार चंद्रसेन सिर झुकाए घोड़े पर सवार होकर महल की ओर बढ़ चला।

राजकुमार चंद्रसेन वसुंधरा के महल के द्वार पर पहुँचा। द्वारपाल को अपना परिचय दिया। द्वारपाल उसे महल में ले गया। वहाँ राजकुमार ने आसन पर काले घोड़े वाले राजकुमार को बैठा देखा, तो हैरान रह गया।

अपने सिर पर बंधी पगड़ी को उतारते और अपने घुंघराले बालों को खोलते हुए काले घोड़े वाले ने कहा— "मैं ही राजकुमारी वसुंधरा हूँ।"

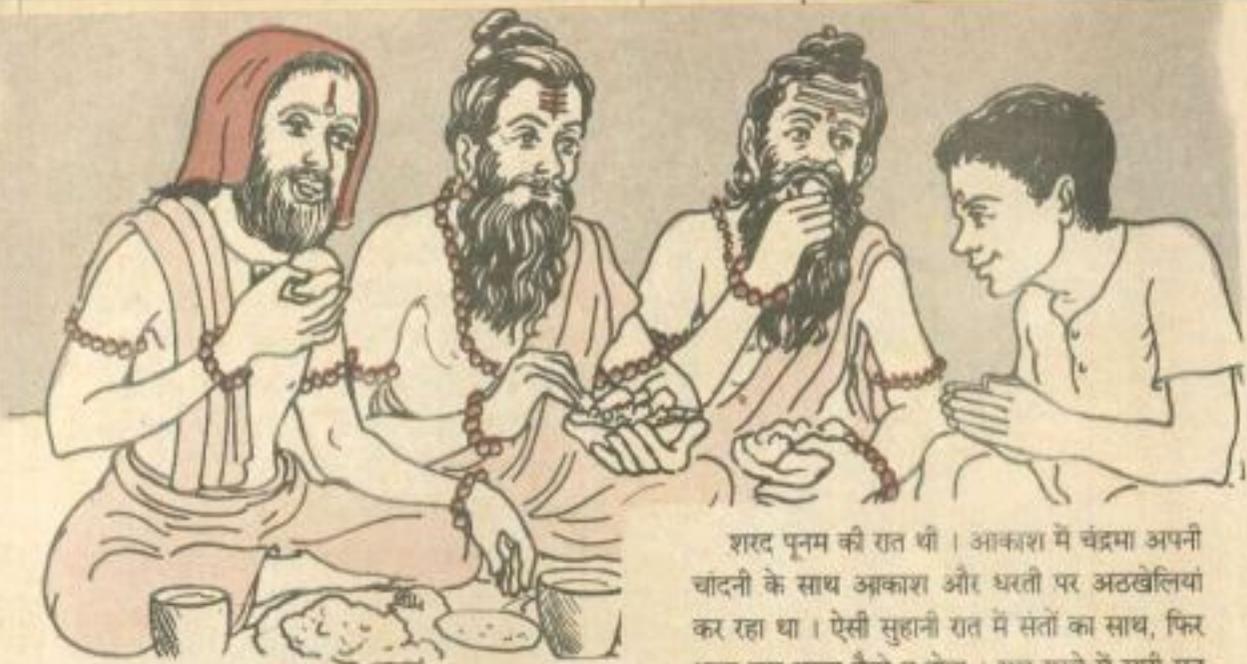
राजकुमार चंद्रसेन ने अपना सिर झुका लिया। उसने अपनी चमकदार तलवार, ढाल और कवच राजकुमारी वसुंधरा को सौंपते हुए कहा— "मेरा दम्भ टूट गया। मैंने तुम्हारे भाई वीरभद्र को प्रतियोगिता में छल से हराया था। मैं तुम्हारा और तुम्हारे भाई का अपराधी हूँ। मुझे उचित सजा दी जाए।"

वसुंधरा ने कहा— "तुम्हारी सजा यही है कि तुम ईमानदारी से श्रेष्ठ तलवारबाज बनकर एक वर्ष के अंदर मेरे सामने उपस्थित होओ।"

चंद्रसेन ने पूछा— "क्या तुम मुझे अपने गुरु का नाम बता सकती हो?"

वसुंधरा ने कहा— "हां, क्यों नहीं? मेरे गुरु राजकुमार वीरभद्र हैं।"

चंद्रसेन राजकुमारी वसुंधरा के महल से निकल कर वीरभद्र के महल में पहुँचा। और उसने वीरभद्र को अपना गुरु बनने के लिए राजी कर लिया। ●



वीरो भगत

—हेमंतकुमार चावड़ा

किसी समय गुजरात में मच्छु नदी के किनारे लुनसरिया नाम का एक गांव था। वहां वीरो भरवाड़ नाम का एक गरीब आदमी रहता था। वह गांव की गांयें चराकर अपनी गुजर-बसर किया करता था।

वीरो सुबह से ही गांव के जानवरों को जंगल ले जाता था। गाय, बैस जंगल में चरतीं और वीरो पेड़ की छाया में बैठ, राम नाम जपता रहता।

जैसा वीरो, वैसी ही उसकी पत्नी भी थी। वह गरीबी में भी संतोष मानकर अपनी गृहस्थी चलाती थी। खुद खेतों में मजदूरी किया करती थी। शाम के समय जब वीरो जंगल से लौटता, तो रास्ते में जो भी साधु-संत मिलते, उन्हें अपने घर लाता। उनकी सेवा करता। उनके साथ देर रात तक भजन-कीर्तन करता था।

एक बार वीरो शाम के समय घर आ रहा था, तो उसे रास्ते में संतों की मंडली मिल गई। वीरो पूरी मंडली को अपने घर ले आया। प्रेम पूर्वक उसने सबको भोजन कराया।

नंदन । जून १९९४ । १६

शरद पूनम की रात थी। आकाश में चंद्रमा अपनी चांदनी के साथ आकाश और धरती पर अठखेलियां कर रहा था। ऐसी सुहानी रात में संतों का साथ, फिर भला रास गरबा कैसे न होता। रास गरबे में सारी रात कैसे बीती, वीरो को पता भी न चल पाया।

लेकिन जब वीरो का जंगल में जाने का समय आया, तो वह अपनी पत्नी से बोला—“सुनती हो जी, संत मंडली को बिना खाए-पिए जाने मत देना। मैं गाय चराने जा रहा हूँ। हो सके तो मेरा खाना जंगल में ले आना।”

तब एक संत बोले—“अरे भगत, इस तरह कोई जाता है क्या? हमारे साथ प्रसाद लेकर जाना।”

वीरो ने उस संत को नम्रता से जवाब दिया—“महाराज, मुझे क्षमा कीजिए। अगर मैं यहाँ रुक गया, तो सारे जानवर जंगल में चले जाएंगे और खेतों का नुकसान भी करेंगे।”

संत बोले—“भगत, यदि हमारे साथ प्रसाद लिए बगैर ही तुम्हें जाना हो, तो हम भी नहीं रुकेंगे।” इसके बाद सारे संत हठ करने लगे।

यह सुन, वीरो निराश हुआ। वह सोचने लगा—“यदि संत मंडली बिना प्रसाद लिए और बिना भोजन किए चली जाएगी, तो यह अधर्म होगा। लेकिन यदि मैं यहाँ इनके साथ रह जाऊँ, तो वहाँ सारे जानवर खेतों में फसल को नष्ट करेंगे। मैं क्या करूँ?”

वीरो को चिंता में देख, उसकी पत्नी बोली—“इन

संतों का आगम
के धरोसे जी रं

पत्नी की व
उधर वीरो

लावारिस की
लगे। यह देख

जाकर शिका
—“बापू,

नहीं कर रहा है
नष्ट कर रहे

“ठीक है
खबर लेता

बापू घोड़ी
बापू को देख,

बोल उठा—
खुल गए जो

तब वीरो ने
पैरलाया।

बापू उस
ध्यान में रखते

मन ही मन ये
सब ठीक है।

देखभाल भी
बापू बोले

लगी है। कु
वीरो ने व

खाना है...
वीरो ने अ

खाना खाया
की ओर च

गांव की
देख, बापू

बोले—“अप
देखा है। पि

कौन है?’
पड़े—“वीरो

संतों का आग्रह है तो रुक जाइए। जब हम भगवान के भरोसे जी रहे हैं तो वह भी हमारी मदद करेगा।”

पत्नी की बात सुनकर वीरो भगत रुक गया।

उधर वीरो के न आने पर गांव के जानवर लावारिस की तरह खेतों में फसलों का नुकसान करने लगे। यह देख, सारे किसान बापू (जमींदार) के पास जाकर शिकायत करने लगे।

—“बापू, वीरो जानवरों की देख-भाल ठीक से नहीं कर रहा है। सारे जानवर खेतों में घुसकर फसल नष्ट कर रहे हैं।”

“ठीक है। तुम सब जाओ। मैं अभी वीरो की खबर लेता हूँ।”—बापू बोले।

बापू घोड़ी पर बैठ कर खेतों की ओर चल पड़े। बापू को देख, वीरो को आश्चर्य हुआ। वह खुशी से बोल उठा—“पधारिए बापू, पधारिए। मेरे तो भाग्य खुल गए जो आप यहां आए।” बापू जब पास आए, तब वीरो ने उन्हें बैठने के लिए अपना कम्बल फैलाया।

बापू उस पर बैठ गए। फरियादियों की बातों को ध्यान में रखते हुए उन्होंने खेतों पर नजर डाली। वह मन ही मन सोच रहे थे—“अजीब बात है! यहां तो सब ठीक है। वीरो मेरे सामने खड़ा है। जानवरों की देखभाल भी कर रहा है।”

बापू बोले—“वीरो, आज तो मुझे जोरों की भूख लगी है। कुछ है तैरे पास खाने के लिए!”

वीरो ने कहा—“हां बापू, आपके आशीर्वाद से खाना है...”

वीरो ने अपने खाने की पोटली खोली। बापू ने खाना खाया। इसके बाद बापू घोड़ी पर बैठकर गांव की ओर चल पड़े।

गांव की सीमा के पास वीरो को गांव से आता देख, बापू को आश्चर्य हुआ। वह मन ही मन बोले—“अभी तो जंगल में वीरो को जानवर चराते देखा है। फिर यह गांव से जाता हुआ दूसरा वीरो कौन है?” जैसे ही वीरो पास आया, बापू बोल पड़े—“वीरो, तू यहां कैसे? मुझे कुछ समझ में नहीं

आ रहा है। लोगों की शिकायत पर मैं जंगल गया, पर वहां भी मैंने वीरो को देखा। उसका दिया हुआ खाना भी खाया। फिर यह दूसरा वीरो कहां से आ गया!”

वीरो बोला—“बापू, वह वीरो मेरा भगवान...”

यह कहते हुए वीरो की आंखों से आंसू बहने लगे।

उसी पल वीरो भगत घर लौटा। उसने अपनी पत्नी से सारी बातें कहीं। अब वीरो भगत अपने पत्नी के साथ सामान बांध, दूसरे गांव जाने लगा।

यह देख, बापू बोले—“क्यों वीरो भगत, कहीं जा रहे हो?”

—“भगवान जहां ले जाए।”

—“क्यों, यहां क्या हो गए?”

—“बापू, यहां मेरे कारण भगवान को खाला बनना पड़ा। यह बात जब सारे संसार में फैल जाएगी, मुझसे सहन नहीं होगा। अब तो भगवान की भर्जी, वह जहां ले जाए, वहां जाऊंगा।”

यह सुनते ही बापू और गांव वाले उसके रास्ते पर लेंट गए। बोले—“वीरो भगत, जाना है तो हमारी पीठ पर पैर रखकर जाओ।”

आखिर वीरो भगत को उनकी बात माननी पड़ी, लेकिन वीरो नदी के उस पार केराड़े गांव में रहने चले गए। इस तरह वीरो भगत की बात रह गई और गांव वालों की भी।

वीरो भगत ने केराड़े गांव में ही प्राण त्यागे। आज भी वहां वीरो भगत की समाधि के दर्शन किए जा सकते हैं।



बातें करते-करते शिव-पार्वती एक ऐसे स्थान पर पहुंचे, जहां कोई महान योगी एक हजार वर्ष से तपस्या में लीन थे। तपस्वी का शरीर हड्डियों से बना ढांचा रह गया था। तपस्वी को ऐसी हालत में देखकर पार्वती से नहीं रहा गया। उन्होंने शिवजी से पूछा—“नाथ! यह तपस्वी कौन है? इनकी ऐसी हालत क्योंकर हुई?”

भगवान शिव ने बताया—“यह यक्ष कुल में जन्मा मेरा परम भक्त है। वर्षों तक मेरा कठिन तप करने के बाद अब मुझसे वर पाने का अधिकारी हो गया है।” वह तपस्वी और कोई नहीं, यक्ष हरिकेश ही था, जो वर्षों पहले पिता के कहने पर घर छोड़कर चला आया था।

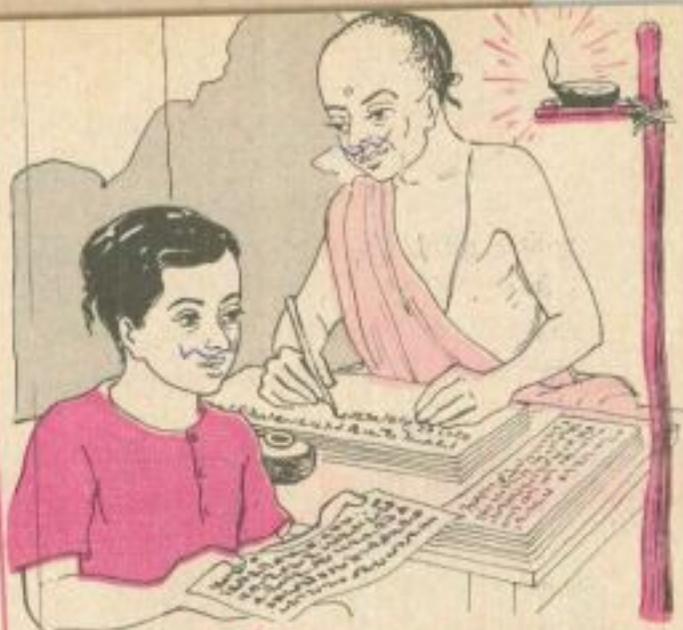
पार्वती ने पुनः उस शिवभक्त की ओर देखा। बोली—“भगवन्! घोर तपस्या में लीन इस परम भक्त का कष्ट देखकर भी आपने इसे अभी तक वर क्यों नहीं दिया? आखिर ऐसी कठोरता क्यों!”

भगवान शिव मुसकराए। वह तो यही चाहते थे और इसी कारण पार्वती के साथ इस स्थान पर आए थे। बस, वर देने की बात पार्वती के मुंह से सुनना चाहते थे। पार्वती की बात से सहमति प्रकट करते हुए वह जैसे ही हरिकेश के निकट गए, हरिकेश उनके चरणों पर गिर पड़ा। शिव की कृपा से उसका जर्जर शरीर स्वस्थ बन पहले जैसी ही स्थिति में हो गया। शिवजी ने प्रसन्न होकर कहा—“पुत्र! मैं तुम्हारी भक्ति से बहुत प्रसन्न हूँ। मांगो, क्या चाहते हो?”

हरिकेश हाथ जोड़कर विनीत स्वर में बोला—“भगवन्! यदि आप मुझे वर देना ही चाहते हैं तो मेरे मन में सदा आपकी अटल भक्ति व आस्था बनी रहे। मैं हमेशा आपका प्रिय रहूँ। मुझे सिद्धि, ज्ञान तथा मोक्ष प्राप्त हो जाए। मैं लोकों का अन्नदाता व गणों का अध्यक्ष तथा सभी सुखों का स्वामी बनूँ।”

भगवान शिव ने प्रसन्न होकर उमे वैसे ही वर देते हुए ‘तथास्तु’ कहा और पार्वती के साथ अंतर्धान हो गए।

(भक्त्य पुराण)



अधूरी रचना

—श्रीनिवास बत्स

कल्याणी के राजा इंद्रसेन विद्वानों का बहुत आदर करते थे। वह स्वयं भी शास्त्रों के ज्ञाता थे। वह नए-नए ग्रंथों को स्वयं पढ़ते। जो ग्रंथ उन्हें अच्छा लगता, वह उसके लेखक को पुरस्कार भी देते थे।

वहीं हरिदेव नामक एक ब्राह्मण रहता था। परिवार में पत्नी सुजाता और एक पुत्र था गोपाल।

एक बार इंद्रसेन ने हरिदेव को राजमहल में बुलाकर कहा—“विप्र! आप नीतिशास्त्र पर एक ग्रंथ लिखें। ग्रंथ पूरा होने पर आपको पुरस्कार स्वरूप दस सहस्र स्वर्ण मुद्राएं दी जाएंगी।”

अगले ही दिन हरिदेव ने पूजा-अर्चना के बाद ग्रंथ लेखन का कार्य शुरू कर दिया।

अभी पांच दिन ही बीते थे, एक रात अचानक सुजाता की तबीयत खराब हो गई। हरिदेव ग्रंथ को छोड़कर वैद्य को बुलाने गया। पर जब वह लौटा, तो सुजाता मर चुकी थी। हरिदेव को बहुत आघात पहुंचा। अब गोपाल की देखभाल का भार उस पर ही आ गया। इस कारण लेखन कार्य भी रुक गया था।

एक दिन एक मित्र ने हरिदेव को दूसरा विवाह करने की सलाह दी।

हरिदेव को मित्र की सलाह पसंद आई। उसने

नंदन । जून १९९४ । १९

अनुराधा नाम की कन्या से विवाह कर लिया।

अनुराधा शकल-सूत से सुंदर थी, पर उसका स्वभाव अच्छा न था। वह जब-तब गोपाल को डांट देती। हरिदेव ने एक-दो बार अनुराधा को समझाया। पर अनुराधा कहती— "अधिक लाड़-प्यार करने से बच्चे बिगड़ जाते हैं। इसलिए मैं समय-समय पर गोपाल को डांटती रहती हूँ। तर्किक वह बिगड़ न सके।"

हरिदेव चुप हो गया। वह नीतिशास्त्र के लेखन में व्यस्त रहने लगा। आलस्य के कारण अनुराधा पति का ध्यान भी नहीं रखती थी।

गोपाल पिता की सेवा करना चाहता था। पर अनुराधा उसे पिता के पास जाने से रोक देती थी। गोपाल मन मसोस कर रहा जाता। पर जब सौतेली माँ सो जाती, तो वह चुपचाप पिता के पास बैठ जाता और पिता द्वारा लिखे हुए पृष्ठों को पढ़ता।

अभी एक चौथाई ग्रंथ ही पूरा हुआ था कि हरिदेव भी चल बसा। अब तो गोपाल पर विपत्तियों का पहाड़ टूट पड़ा। सौतेली माँ ने उसे घर से निकाल दिया। गोपाल अपने पिता द्वारा लिखे पृष्ठों को साथ ले जाने लगा। अनुराधा ने वे पृष्ठ भी उससे छीन लिए। वह गोपाल को डांटती हुई बोली— "मैं ये पृष्ठ लेकर राजमहल में जाऊँगी और राजा से पुरस्कार प्राप्त करूँगी।" गोपाल उदास होकर चला गया।

एक दिन अनुराधा अधूरे ग्रंथ को लेकर राजमहल पहुंची। उसने राजा से कहा— "महाराज, मेरे पति का देहांत हो गया है। अब यह ग्रंथ पूरा नहीं हो पाएगा। आप अधूरे ग्रंथ पर ही मुझे पुरस्कार की धन राशि देने की कृपा करें।"

इंद्रसेन बोले— "देवी! ग्रंथ अधूरा है, इसलिए पूरी धन राशि नहीं दी जा सकती। मैं तुम्हें कुछ धन दक्षिणा में देता हूँ।"

राजा ने अनुराधा को एक सौ स्वर्ण मुद्राएं दे दीं। पुस्तक के पृष्ठ भी उसे लौटा दिए।

उधर विमाता द्वारा घर से निकाल दिए जाने पर गोपाल एक नदी के किनारे जाकर बैठ गया। थोड़ी

नंदन । जून १९९४ । २०

देर लहरों को देखता रहा। वह मन ही मन कुछ बुदबुदा रहा था।

उसी समय आचार्य अक्षयेंद्र अपने कुछ शिष्यों के साथ उधर से गुजरे। गोपाल अपने में खोया था।

आचार्य ने गोपाल से पूछा— "बेटा! तुम किससे बातें कर रहे हो?"

"स्वयं से।" —गोपाल ने उत्तर दिया।

शिष्य हंस पड़े। पर आचार्य गम्भीर हो गए। वह जानते थे कि विद्वान ही स्वयं से बातें कर सकता है। उन्होंने गोपाल से कहा— "चलो, तुम मेरे साथ चलो।"

गोपाल हंसा। बोला— "जब मां-बाप ही मुझे अपने साथ नहीं ले जा सके, तो और कौन मुझे अपने साथ ले जा सकता है?"

यह सुन, आचार्य ने गोपाल से कहा— "वत्स! मैं एक ग्रंथ की रचना कर रहा हूँ। तुम हमारे आश्रम में चलो।" मैं वहां तुम्हारी प्रतिभा का पूरा सम्मान करूँगा।"

आचार्य के कहने पर गोपाल उनके साथ आश्रम में आ गया। अक्षयेंद्र ने उसे वर्षों पढ़ाया। गोपाल विद्वान बन गया। उसकी प्रतिभा देख, सब वाह-वाह कर उठते थे।

एक दिन महाराज इंद्रसेन आचार्य अक्षयेंद्र के आश्रम में आए। वह आचार्य द्वारा लिखे नए ग्रंथ को पढ़ना चाहते थे। आचार्य ने इंद्रसेन को गोपाल से मिलवाया।

गोपाल की विद्वत्तापूर्ण बातें सुनकर राजा बहुत खुश हुए।

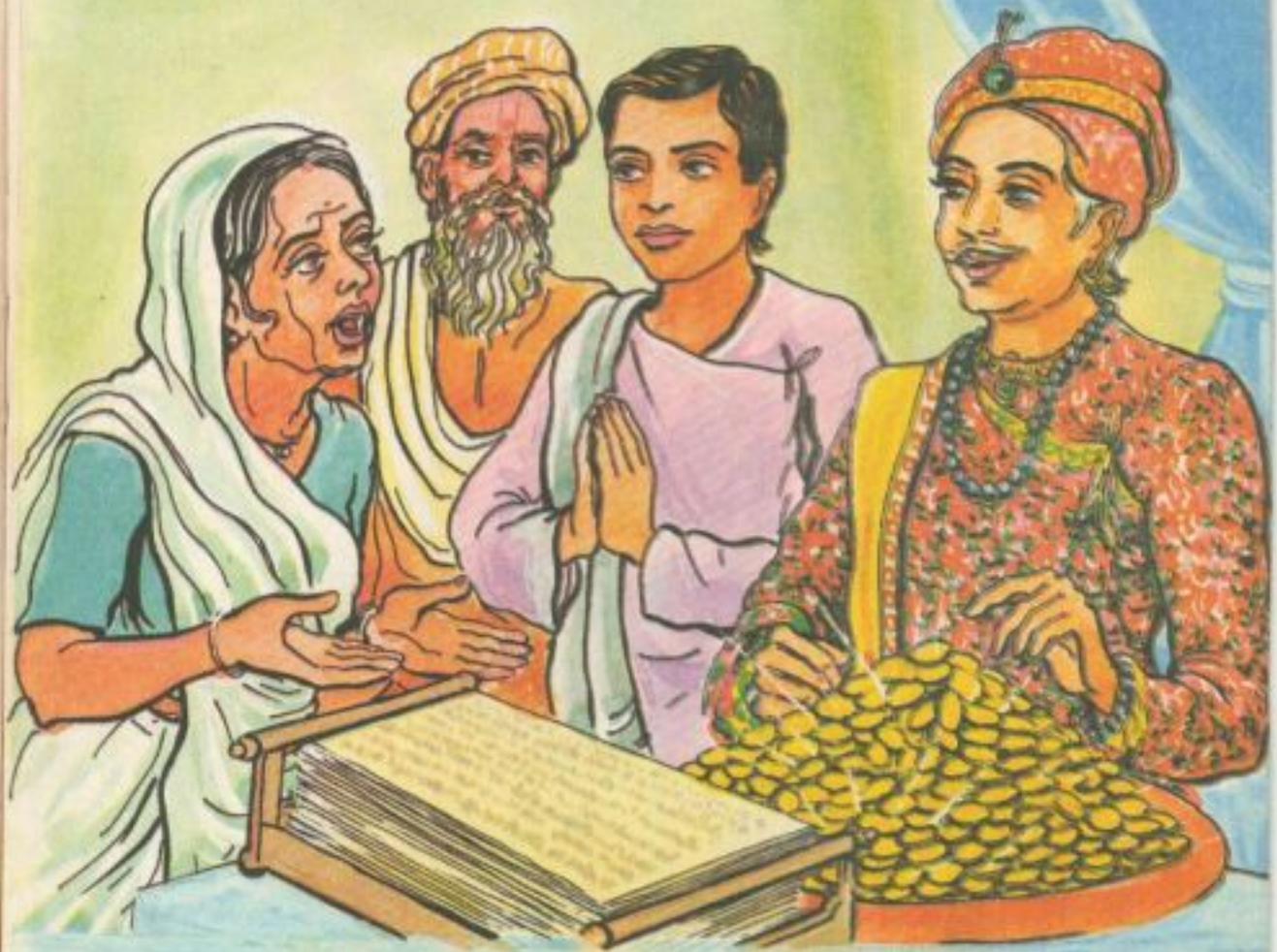
राजा ने पूछा तो उसने कहा— "मैं हरिदेव का पुत्र हूँ।"

राजा ने कहा— "हे युवा विद्वान! आप नीतिशास्त्र का वह ग्रंथ पूरा करें जिसे आपके पिता अधूरा ही छोड़कर चल बसे थे।"

गोपाल बोला— "पिता के अधूरे कार्य को पूरा कर मुझे बहुत खुशी होगी। आप पिता के अधूरे ग्रंथ के पृष्ठों को मुझे विमाता से दिला दें।" राजा ने उसे



आश्चर्य क
राजा ने
पृष्ठ मंगवा
"अब आप
सहस्र स्वर्ण
गोपाल
के कठोर
गोपाल
ग्रंथ को
अनमोल अ
पढ़कर प्रस
अगले
को ले राज
उनका स्वा



आश्चर्य कर महल की राह ली ।

राजा ने सैनिक भेजकर अनुराधा के घर से ग्रंथ के पृष्ठ मंगवा लिए । उन्हें गोपाल को सौंपते हुए कहा—
“अब आप ग्रंथ पूरा करें । मैं आपको पुरस्कार में दस सहस्र स्वर्ण मुद्राएं दूंगा ।”

गोपाल ने ग्रंथ लिखना प्रारंभ कर दिया । चार वर्ष के कठोर परिश्रम के बाद ग्रंथ पूरा हुआ ।

गोपाल ने ग्रंथ आचार्य को दिखाया । आचार्य ने ग्रंथ को पढ़ा । बोले— “बेटा ! तुम्हारी रचना अनमोल और श्रेष्ठ है । महाराजा इंद्रसेन अवश्य इसे पढ़कर प्रसन्न होंगे ।”

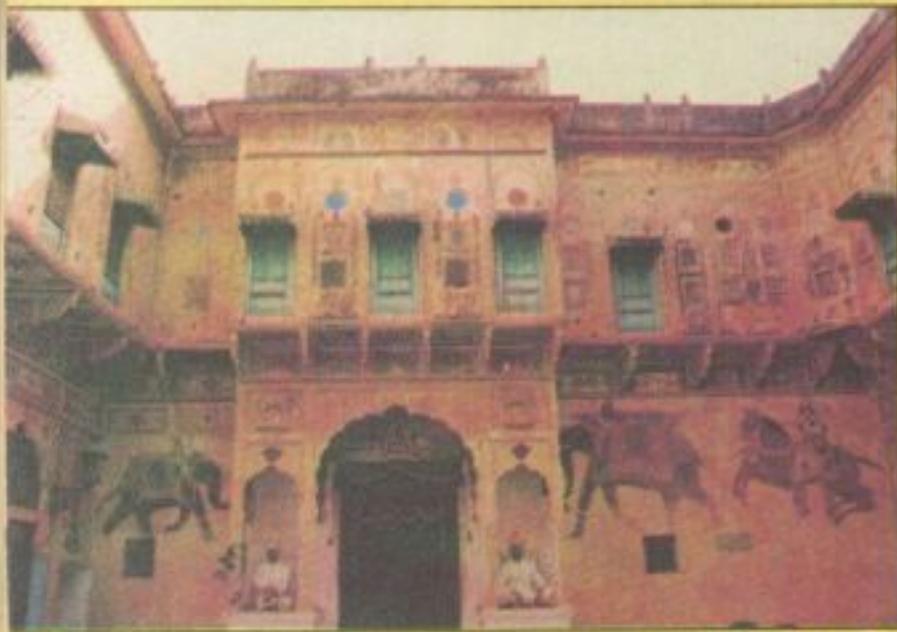
अगले दिन आचार्य और गोपाल नीतिग्रंथ को ले राजदरबार पहुंचे । दरबारियों के बीच राजा ने उनका स्वागत किया ।

आचार्य ने ग्रंथ के बारे में विस्तार से वहां सबको बताया । इंद्रसेन ग्रंथ को देख बहुत प्रसन्न हुए । उन्होंने मंत्री से कहा— “गोपाल को दस की बजाय ग्यारह सहस्र स्वर्ण मुद्राएं दे दो । मैं चाहता हूँ कि गोपाल आगे भी हमारे लिए ऐसी ही पुस्तकें लिखे ।”

जब अनुराधा को यह पता चला तो वह दौड़ी-दौड़ी राजदरबार में आई । गोपाल से अपने किए अनुरोध की क्षमा मांगने लगी ।

गोपाल ने कहा— “आप मेरी मां हैं । मुझे आशीर्वाद दीजिए । आपकी डांट-फटकार से ही मैं यह ग्रंथ पूरा कर सका हूँ ।”

यह सुन, अनुराधा ने बेटे को गले से लगाया । उधर सब गोपाल की जय-जयकार करने लगे । ●



पिलानी
में
एक
दिन

विराटा हवेली : दीवारों पर चित्र



हवेली में गद्दी



तालाब

शिव गंगा नहर

पंचवटी का एक दृश्य



विराटा पार्क



जी.



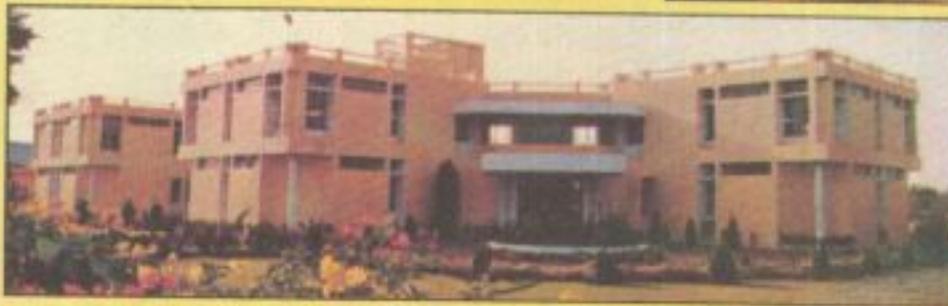
स्पृजियम के बाहर प्रतिमा ।
पीछे बिरला इंस्टीट्यूट आफ
टेक्नॉलॉजी एंड साइंस

बिरला संग्रहालय



बिरला पब्लिक स्कूल

बिरला बालिका विद्यापीठ



जी.डी. बिरला मैमोरियल
पॉलिटेक्निक



जी.डी. बाबू का
सायुधान

मधुर यादें

पूज्य काकोजी

बसन्त कुमार बिरला

पुराने से पुराने मेरी याददाश्त सोलन की है, जब मैं साढ़े चार साल का था। मां की तबोयत खराब थी। शिमला के पास सोलन एक सुंदर स्थान है। वहां का मौसम व हवा-पानी बहुत अच्छा माना गया था। मां के साथ हम सब भाई-बहन, पू. बड़े भाईजो, चंद्रकला बाई, भाई कृष्ण, अनुसूया, शांति तथा मैं—सोलन गए। चार-पांच महौने सोलन-शिमला में रहे।

सोलन में दो मकान किराए पर लिए—महेश विला और पूज विला। एक मकान ऊपर था, दूसरा डेढ़ सौ-दो सौ फीट नीचे। मकानों के पास एक छोटी-सी पहाड़ी थी। पंडित उदित मिश्र जी के साथ हम लोग वहां रोज जाते थे। पहाड़ी के ऊपर चढ़ जाते। डेढ़-दो घंटे तक पढ़ते-लिखते, खेलते-कूदते। पूज्य काकोजी पहाड़ी के नीचे घूमते। उन्हें देखते ही हम लोग प्रफुल्लित हो जाते। ऊपर से पुकारते—“का...को...जी...” वापस उनका उत्तर आता—“कृष्ण...जी, बसंत...जी।” प्रायः रोज ही यह क्रम रहता, पर मेरे लिए तो यह नित-नूतन आनंद था। यह दृश्य आज तक साफ-साफ याद है।

बचपन की बातें अनोखी होती हैं—सबसे निष्कपट प्रेम, मन में आनंद और संतोष। सोलन में मैंने कई भाई बनाए। बचपन की वह माया! पहाड़ भाई, वृक्ष भाई, जंगल भाई, कुत्ता भाई! सबसे प्रेम।

पूज्य काकोजी का जन्म शुभ संवत् १९५१, चैत्र शुक्ल नवमी, शुक्रवार तदनुसार सन् १८९४ में रामनवमी के पावन दिवस हुआ। कैसा मंगल मुहूर्त! बचपन पिलानी में बीता। पहाड़-लिखवाई मामूलो सी—हिंदी, गणित, पहाड़े तक सीमित। पहली शादी कुमारी दुर्गादेवी से १३ वर्ष की उम्र में। बारात में १००० व्यक्ति गए। खूब धूमधाम से शादी



मां महादेवी

हुई। इस शादी से एक संतान—पूज्य भाई लक्ष्मीनिकास जी। शादी के प्रायः चार वर्ष बाद पूज्य मां का स्वर्गवास। दूसरी शादी कुमारी महादेवी से—काकोजी १८ वर्ष के। इस शादी से पांच संतानें—चंद्रकला बाई, भाई कृष्ण, मैं, अनुसूया बाई और शांति बाई। मां का स्वर्गवास हुआ, १३ फरवरी, १९२६ को ओखला में।

सन् १९१० के आसपास काकोजी कलकत्ता आ गए थे। शुरू में जब अकेले आते थे, तो १८ मॉल्लिक स्ट्रीट स्थित एक तल्ले पर गद्दी में रहते थे। यह गद्दी अभी तक अपने पास है—भाड़े पर। फिर चौरंगी तथा मेफेयर स्थित अपने मकानों में तीन-चार साल रहे। वहां पर मां को पिलानी से बुलाया। सन् १९१५ के आसपास ६ नं. रैनी पार्क खरीदा। उस समय यह स्थान कलकत्ते के बाहर ही था। इसके आसपास बहुत कम मकान थे। इस मकान के साथ काफी जमीन थी। मेरा जन्म इसी मकान में हुआ था।

इस मकान जिंदगी का सब पिलानी की मकान-आधुनिक खानागार, शांति सामूहिक थे। रहता। पिलानी के पास पेड़-पौधे रैनी पार्क के मॉल्लिक टेलीफोन का काकोजी मां का होगा। उस मकान खासकर मां का लमा होगा।

एक आनंद खुद ही बनाए इंजीनियरिंग के तीन-तीन कमरों की व्यवस्था बनाया—विक्रम मकान तैयार परिवार के आए—कितना हवेली से यहाँ महामना माल लिए चंदा की। ३०-३ प्रतिष्ठित लोग काकोजी से प्रेम बड़ा अच्छा प्रस्ताव रखा मैं चंदा की मालवीय जी की उम्मीद थी खालियर ने काकोजी उदा

इस मकान में मां बहुत प्रसन्न थीं। मां की जिंदगी का सबसे अच्छा समय इसी मकान में बीता। पिलानी की हवेली के बाद अपना यह मकान-आधुनिक सुविधाओं के साथ। हवेली में स्नानागार, शौचालय आदि कमरों से काफी दूर तथा सामूहिक थे। कमरों में हवा और रोशनी का अभाव रहता। पिलानी में बिजली नहीं थी। उस समय हवेली के पास पेड़-पौधे-बगीचों उगाने की प्रथा भी नहीं थी। रैनी पार्क के मकान में ये सब सुविधाएं—बिजली, टेलीफोन का भी प्रबंध। पूरी स्वतंत्रता। पूज्य काकोजी, मां को इस मकान में कितना आनंद मिला होगा। उस समय तो यह मकान पूज्य काकोजी तथा खासकर मां को 'स्वर्ग का एक छोटा-सा टुकड़ा' ही लगा होगा।

एक आलीशान मकान की योजना। नक्शे प्रायः खुद ही बनाए। एक बंगाली फर्म एन. गुइन को इंजीनियरिंग के लिए रखा। एक-एक भाई के लिए तीन-तीन कमरे, दो-दो स्नानागार तथा एक लम्बे वरोंडे की व्यवस्था। मकान बाहर से बहुत सुंदर, भव्य बनाया—'विक्टोरियन स्टाइल' में। सन् १९२३ में मकान तैयार हुआ। पूज्य काकोजी, पूज्य मां तथा परिवार के और सब सदस्य इस मकान में आए—कितना आनंद आया होगा। पिलानी की हवेली से यह महल।

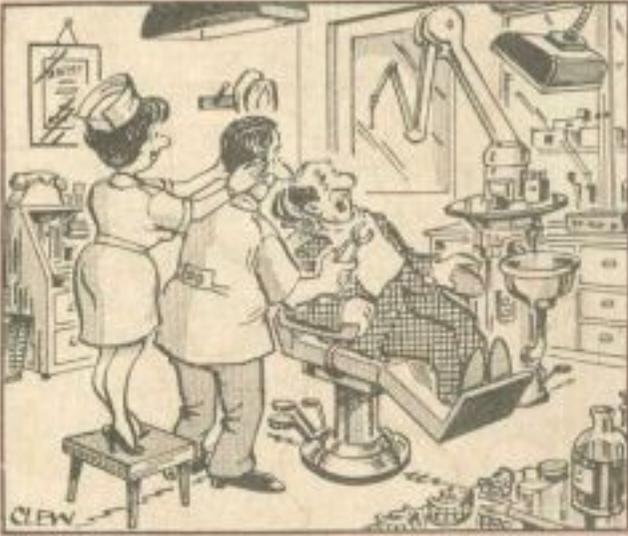
महामना मालवीय जी बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के लिए चंदा इकट्ठा कर रहे थे। एक बड़ी मीटिंग की। ३०-३५ राजा-महाराजा, जमींदार तथा अन्य प्रतिष्ठित लोगों को बुलाया। पूज्य मालवीय जी का काकोजी से प्रेम था। वह भी आए। मालवीय जी ने बड़ा अच्छा भाषण दिया। चंदा इकट्ठा करने का प्रस्ताव रखा तथा हरेक व्यक्ति से पूछकर, उसी मीटिंग में चंदा की घोषणा। पूज्य काकोजी की बारी आई। मालवीय जी ने उनसे पूछा। उनको एक लाख रुपयों की उम्मीद थी। चंदा देने वालों में सबसे ऊंचा नाम ग्वालियर नरेश का था—३ लाख के चंदा का। काकोजी उदार तो थे ही। जोश आया। सोचा, क्यों न

सबसे ऊंचे चंदा का मुकाबला करूं। मालवीय जी को आश्चर्य और प्रसन्नता। माइक पर घोषणा की—'हिंदुस्तान के एक बड़े विख्यात उद्योगपति तथा दानी श्री घनश्यामदास जी बिरला ने तीन लाख रुपए देने का वायदा किया है।' सब राजा-महाराजा अवाक रह गए। यह कौन व्यक्ति है, जो हमसे होड़ कर रहा है। किसकी इतनी शक्ति है कि तीन लाख रुपए दे सकता है? मीटिंग खत्म हुई। ग्वालियर नरेश की इच्छा कि काकोजी से मिलें। मालवीय जी ने परिचय कराया। इसके पश्चात् दोनों में बड़ा मेल-जोल हो गया। महाराजा साहब की प्रेरणा से ही मिल की स्थापना ग्वालियर में की।

काकोजी को हम लोगों की कितनी चिंता रहती थी।

जब कभी विदेश में साथ रहते—उनको चिंता रहती कि मैं शाम के ६ बजे के बाद बाहर घूमने के लिए नहीं जाऊं। यूरोप में मई-जून में अंधेरा रात ९ बजे के बाद ही होता है। दिन भर काम करने के बाद मैं साढ़े पांच बजे शाम को घूमने के लिए जाता। काकोजी को यह बिलकुल नापसंद। मैं भी जिद्द करता—'काकोजी, मैं ६० वर्ष का हो गया—जुग इतनी छोटी जगह है कि मैं खो जाने की चेष्टा भी करूं तब भी खो नहीं सकता। यहां पर इतनी शांति है कि झगड़ा-फिसाद, मारपीट कभी नहीं होती। अंधेरा अभी तीन घंटे नहीं होगा। शाम के खाने का समय ७ बजे का है। मैं ६.४५ तक वापस आ जाऊंगा।'

मेरी पत्नी से कहते—'बसंत मेरी बात कोनी माने, जिद्द करे है। अच्छा तो पाँच सात बजे तक पकड़ाई से वापस आ जाए। गलती मत करिए—हां कुणसे रास्ते से जावैगो और कुणसे रास्ते से वापस आवैगो?' सवा छह बजे से मेरी पत्नी से कहने लगते—'बसंत आये कोनी। ठीक टाइम पर आ जावैगो न?' साढ़े छह बजे से दरवाजे पर खड़े हो जाते, या खिड़की से रास्ते की ओर देखते रहते। मैं जो समय निर्धारित करता, उससे पहले ही आ जाता। कहते—'सब उम्र का खेल है। मेरी उम्र के होओगे, तो तुम भी बच्चों के लिए इतनी ही चिंता करोगे।'



आप कितने बुद्धिमान हैं ?

यहाँ दो चित्र बने हुए हैं। ऊपर पहले बनाया हुआ मूल चित्र है। नीचे इसी चित्र की नकल है। नीचे का चित्र बनाते समय चित्रकार का दिमाग कहीं खो गया। उसने कुछ गलतियाँ कर दीं। आप सावधानी से दोनों चित्र देखिए। क्या आप बता सकते हैं कि नीचे के चित्र में कितनी गलतियाँ हैं ? इसमें दस गलतियाँ हैं। सारी गलतियों का पता लगाने के बाद आप स्वयं इस बात का फैसला कर सकते हैं कि आपकी बुद्धि कितनी तेज है। १० गलतियाँ ढूँढ़ने वाला : जीनियस; ६ से ९ तक गलतियाँ ढूँढ़ने वाला : बुद्धिमान; ४ से ५ तक गलतियाँ ढूँढ़ने वाला : औसत बुद्धि; ४ से कम गलतियाँ ढूँढ़ने वाला : वह स्वयं सोच ले कि उसे क्या कहा जाए ?

सही उत्तर इसी अंक में किसी जगह दिए जा रहे हैं। आप सावधानी से प्रत्येक पृष्ठ देखिए और उत्तर खोजिए। आपकी बुद्धि की परख के लिए निर्धारित समय—१५ मिनट।

कहानी लिखो—१२७

सामने छपे चित्र के आधार पर एक कहानी लिखिए। उसे १५ जून तक कहानी लिखो—१२७, नंदन, हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ के पते पर भेज दीजिए। चुनी गई कहानी प्रकाशित की जाएगी। पुरस्कार भी मिलेगा।
परिणाम : अगस्त, १४ अंक

चित्र-पहेली—१२७

साबन के झूले : इस विषय पर चटख रंगों से एक चित्र बनाइए। चित्र के पीछे अपना नाम, आयु और पता साफ-साफ लिखिए। चित्र १५ जून, १९९४ तक नंदन कार्यालय में भेज दीजिए। चुना गया चित्र प्रकाशित किया जाएगा। पुरस्कार भी मिलेगा।

परिणाम : सितम्बर, १४ अंक



नंदन । जून १९९४ । २६

एक नगर में एक धनवान माने उनकी कोई सत एक रात सेठ में सो रही थी। सहसा उन्होंने सुनी। वह स कुते का भौं पड़े-पड़े चौकरी उन्होंने देखा कि खिड़की की रह छुटा था। सेठ सोचा— 'यदि चोर मुझ पर छु उन्हेन चतुर्पाई सेठ ने सेठ "अभी-अभी कहा कि मैंने तु जलाकर उससे सेठानी ने रेशनी में खम्भे मानो पहली बा ही वह बोल प कितना सुंदर चोर सोचने पुत्र की तरह मेरी हो जाएगी यह सोचक ओर बढ़ा। प्रेम से उसे ग लगे। फिर जाओ, बेटे जगदम्बा के

चाल बेचाल

—इश्वरलाल प. वैश्य

एक नगर में एक सेठ रहते थे। वह नगर में सबसे धनवान माने जाते थे। सेठानी बड़ी भली थी। उनकी कोई संतान नहीं थी। इसी से वे दुखी रहते थे।

एक रात सेठ पलंग पर लेटे थे। सेठानी भी पास में सो रही थी। पर सेठ को नींद नहीं आ रही थी। सहसा उन्होंने अपने कुत्ते की भौंकने की आवाज सुनी। वह सतर्क हो गए।

कुत्ते का भौंकना बढ़ता जा रहा था। वह पलंग पर पड़े-पड़े चौकन्नी निगाहों से चारों ओर देख रहे थे। उन्होंने देखा कि बरगमदे की ओर से कोई व्यक्ति खिड़की की राह घुस रहा था। उसके एक हाथ में बड़ा छुरा था। सेठ उसे देख कर घबरा गए। उन्होंने सोचा— 'यदि मैं चिल्लाऊंगा, तो हो सकता है कि चोर मुझ पर छुरा चला बैठे और मार ही डाले।' अतः उन्होंने चतुराई से काम लेने की सोची।

सेठ ने सेठानी को जगाया। सेठानी से कहा— "अभी-अभी सपने में मैं जगदम्बा ने आकर मुझे कहा कि मैंने तुम्हारे घर एक बेटा भेजा है। तुम दीप जलाकर उसका स्वागत करो।"

सेठानी ने खुश होकर दीप जलाया। दीपक की रोशनी में खम्भे के पीछे छिपे चोर को उन्होंने ऐसे देखा मानो पहली बार ही देख रहे हों। उसको देखकर तुरंत ही वह बोल पड़े— "सेठानी! देखो मां जगदम्बा ने कितना सुंदर बेटा हमारे लिए भेजा है।"

चोर सोचने लगा— 'यदि सेठ सचमुच मुझे अपने पुत्र की तरह अपनाते हैं, तब तो उनकी सारी सम्पत्ति मेरी हो जाएगी।'

यह सोचकर चोर भोला-सा मुंह बनाकर सेठ की ओर बढ़ा। छुरी उसने कोने में फेंक दी थी। सेठ ने प्रेम से उसे गले लगाया और उसके सिर पर हाथ फेरने लगे। फिर सेठानी से बोले— "देखती क्या हो? जाओ, बेटे को नहलाने के लिए पानी गरम करो। मां जगदम्बा के नैवेद्य के लिए प्रसाद तैयार करो।"

यह सुनकर चोर की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। सेठ उसके शरीर पर प्यार से हाथ फेरते रहे और वह चुपचाप खड़ा रहा। पानी गरम हो जाने पर उसे नहलाया। सुंदर कपड़े पहनाए। सोने के आभूषणों से उसे लाद दिया गया। अब सेठ उसे लेकर अपने पूजा-घर में गए। वह वहाँ जगदम्बा की पूजा करने लगे। चोर को विश्वास हो गया कि सचमुच सेठ ने उसे अपना पुत्र मान लिया है।

यों करते-करते सुबह हुई। सेठ ने चोर से कहा— "चलो बेटा, दुकान पर चलते हैं। मैं वहाँ का काम-काज तुम्हें समझा दूंगा।"

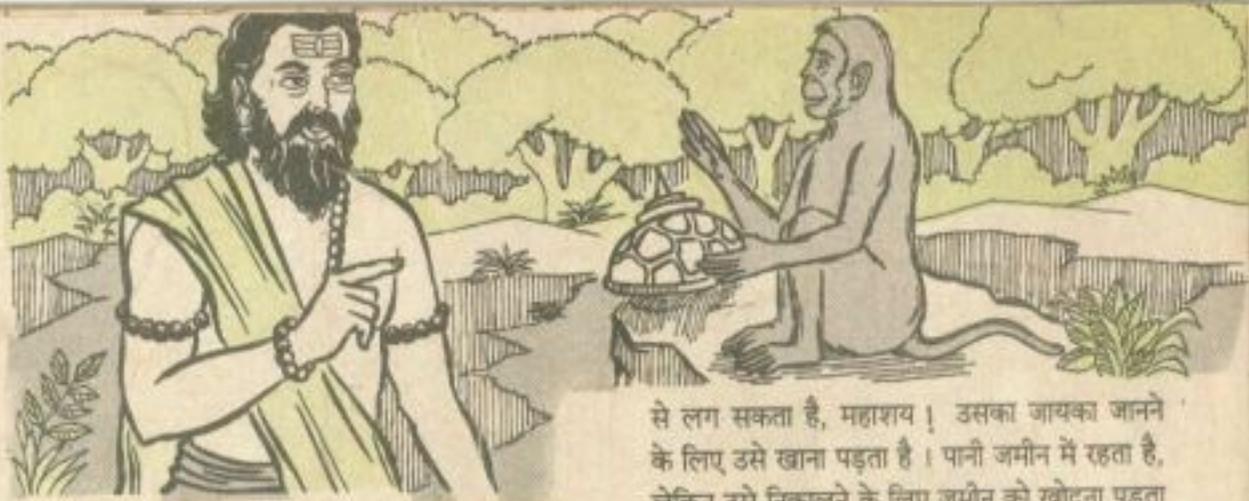
फिर सेठ चोर को दुकान पर ले गए। वहाँ उन्होंने चोर को गद्दी पर बैठा दिया। तिजोरी की चाबियाँ भी उसे धमा दीं। कौन-सी चाबी कौन से ताले की है और कहाँ क्या-क्या रखा है? सेठ ने यह सब कुछ उसे बता दिया।

बाजार में ग्राहकों का आना-जाना शुरू होते ही सेठ ने चोर से कहा— "तुम यहीं बैठो। मैं अभी घर से आता हूँ।"

चोर मन ही मन ख्याली पुलाव पका रहा था। उधर सेठ पुलिस थाने में पहुंचे। उन्होंने थानेदार से कहा— "मैंने एक चोर को पकड़ रखा है। आप दुकान में चलें और उसे गिरफ्तार कर लें।"

थानेदार कुछ पुलिस जवानों के साथ दुकान पर पहुंचा। जवानों ने चोर को घेर लिया। चोर पुलिस को देखकर सकपका गया। वह सेठ की चतुराई को समझ गया। तब चोरी करने वाले को फांसी पर लटका दिया जाता था। चोर गुस्से में भरकर सेठ से बोला— "तुमने बेटा बनाकर मेरे साथ धोखा किया है।"

सेठ ने हंसते हुए कहा— "बेटे! तुम मुझे मारने आए थे। तुम मेरी छाती में छुरा आरपार करने में जरा भी देर नहीं करते। अब तुम ये कपड़े-जेवर उतार दो और जेल की हवा खाओ। उसके बाद सूली पर चढ़ जाना।" चोर सिर झुकाए थानेदार के पीछे-पीछे चल पड़ा था। ●



बंदर का मुकुट

—दत्ता जंगम

एक ऊंचे पहाड़ पर जाने के लिए तलहटी से पगडंडी जाती थी। पगडंडी के एक ओर पहाड़ था, तो दूसरी ओर घना जंगल था।

एक दिन की बात है, राजा के कुछ सैनिक उस पगडंडी से गुजर रहे थे। रात का समय था और घना अंधेरा छाया हुआ था। एक सैनिक का थोड़ा पत्थर से टकरा गया। सैनिक धोड़े की पीठ से नीचे गिर पड़ा। सैनिक को भारी चोट तो नहीं आई किंतु कछुए की पीठ का घना उसका टोप लुढ़ककर जंगल में जा पड़ा।

दूसरे दिन वही टोप एक बंदर को मिला। कौन-सी चीज है, बंदर इसे नहीं जानता था। इसलिए वह एक चट्टान पर बैठकर टोप को पटकने लगा। उसी समय एक महात्मा पगडंडी से गुजर रहे थे। बंदर टोप को तोड़ रहा है, यह देख वह रुक गए।

“बंदर भाई, यह क्या कर रहे हो?”—महात्मा ने पूछा।

“मैं जानना चाहता हूँ कि यह क्या चीज है?”—बंदर बोला।

“किसी चीज को तोड़ने से उसके बारे में पता नहीं चलेगा, उल्टे वह नष्ट हो जाएगी।”—महात्मा ने कहा।

बंदर बोला—“आम की मिठास का पता ऊपर

से लग सकता है, महाशय! उसका जायका जानने के लिए उसे खाना पड़ता है। पानी जमीन में रहता है, लेकिन उसे निकालने के लिए जमीन को खोदना पड़ता है। क्या यह सच नहीं?”

“बंदर भाई, आपका कहना तो सच है...” महात्मा बंदर के पास जाकर कहने लगे—“लेकिन किसी भी वस्तु को तोड़ने से पहले किसी ज्ञानी की राय लेना भी उचित है। ऐसा करने से उस वस्तु का नाश नहीं होता।”

“क्या आप ज्ञानी हैं?”—बंदर ने महात्मा से पूछा।

“यह तो मैं नहीं कह सकता।” महात्मा हंसकर बोले—“लेकिन आप जिस वस्तु को पटक रहे हैं, वह वस्तु क्या है, यह मैं जानता हूँ।”

“बताइए, क्या है यह?”—बंदर ने पूछा।
—“यह एक टोप है।”

“यह किस काम आता है?”—बंदर ने फिर पूछा।

महात्मा बताने लगे—“यह युद्ध में काम आता है। जब शत्रु सिर पर तलवार का वार करता है, तो वह वार यह टोप झेलकर, सैनिक की रक्षा करता है। इसलिए इस टोप को मुझे दे दो। किसी सैनिक को दे दूंगा।”

“नहीं, नहीं, बिलकुल नहीं।” गर्दन हिलाकर बंदर बोला—“महाशय, इस जंगल में मुझे हमेशा जंग करनी पड़ती है। डर के कारण हमेशा पेड़ पर रहना पड़ता है। यह टोप मेरे काम आएगा।”

महात्मा चुपचाप आगे चले गए।
टोप मिलने के बाद बंदर बहुत इतराने लगा।

वह घमंडी बन
साथ झगड़ने ल
सम्मझने लगा थ
जंगल में घूमने
के सारे जानव
बंदर का रोब

एक दिन,

भेड़िए को भे
लिया। ऊंची
जंगल का राजा
सही है?”

बंदर शोर

क्यों? उसके
बोला—“हां

राजा क्यों नहीं

इस पर शोर

ज्ञान, शक्ति और
साथ-साथ यु

आवश्यक है

बंदर छल

है। इसमें ये

बंदर का
उसने बंदर को

का टोप हवा में

ने वह टोप

“अरे, मुझे

सैनिक इसका
ही है? पागल

और हाथ जोड़

मालूम नहीं

“क्षम

शोर ने
शोर के

गया था। उ

ही त्याग दि

वह घमंडी बन गया। जान बूझकर अन्य प्राणियों के साथ झगड़ने लगा। बंदर अब खुद को महा योद्धा समझने लगा था। वह टोप सिर पर रखकर आराम से जंगल में घूमता। उसके सिर पर टोप देखकर, जंगल के सारे जानवर उसे सलाम करते थे। इससे जंगल में बंदर का रोब छा गया था।

एक दिन, यह बात शेर तक पहुंची। शेर ने भेड़िए को भेजकर बंदर को अपने सामने बुलवा लिया। ऊंची आवाज में पूछा—“मैंने सुना है तू जंगल का राजा बनने वाला है। क्या जो सुना है, वह सही है?”

बंदर शेर की ऊंची आवाज से डरा नहीं। डरे भी क्यों? उसके सिर पर टोप जो था। वह गंभीर स्वर में बोला—“हां जी, यह बात सच है। मैं जंगल का राजा क्यों नहीं बन सकता?”

इस पर शेर बोला—“मूर्ख, राजा बनने के लिए ज्ञान, शक्ति और हिम्मत की जरूरत होती है। इसके साथ-साथ युद्ध और राजकाज का ज्ञान होना भी आवश्यक है। क्या ये सारे गुण तेरे पास हैं?”

बंदर छाती तानकर बोला—“मेरे पास यह टोप है। इसमें ये सारे के सारे गुण मौजूद हैं।”

बंदर का जवाब सुनकर शेर को क्रोध आ गया। उसने बंदर को एक जोर का तमाचा लगाया, तो बंदर का टोप हवा में उड़ गया और दूर जाकर गिरा। भेड़िए ने वह टोप लाकर शेर को दे दिया।

“अरे, मूर्ख... यह तो कछुए की पीठ है। युद्ध में सैनिक इसका इस्तेमाल करते हैं। यह राजमुकुट थोड़े ही है? पागल कहीं का...!”—शेर हंसकर बोला। और हाथ जोड़कर कहने लगा—“मुझे इसके बारे में मालूम नहीं था। इसीलिए ऐसा बर्ताव कर बैठा।”

“क्षमा करना महाराज!”—बंदर गिड़गिड़ाकर शेर ने बंदर को माफ कर दिया।

शेर के तमाचे के कारण बंदर का मुंह काला पड़ गया था। उसे छिपाने के लिए बंदर ने उस जंगल को ही त्याग दिया।

विश्व की महान कृतियां : स्पेन

लासारो

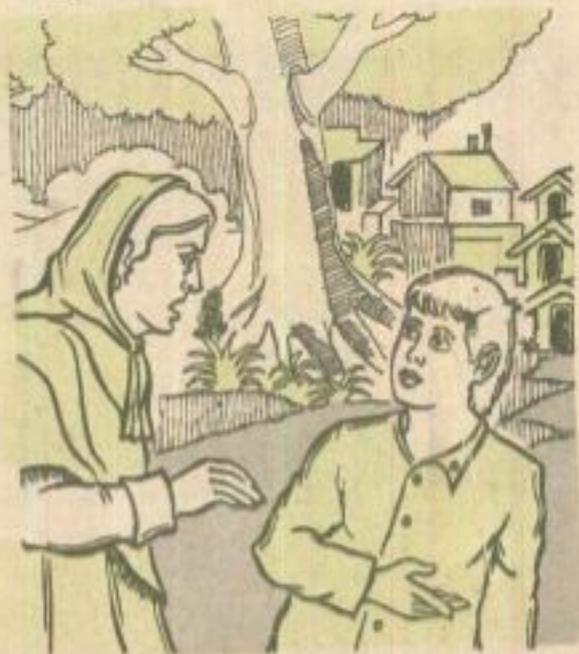
—अज्ञात

लासारो के माता-पिता सालामान्काके रहने वाले थे।

उसका जन्म हुआ था तोमेंस नदी पर एक यात्रा के दौरान। इसलिए वह कहलाया लासारो दे तोमेंस यानी तोमेंस का लासारो।

लासारो अभी सात वर्ष का ही था कि उसके पिता पर किसी ने अनाज की चोरी का आरोप लगाया। पुलिस उन्हें पकड़कर ले गई। उन पर मुकदमा चला और जेल हो गई। लासारो और उसकी मां बेसहारा हो गए। गांव वाले उसकी मां का अपमान करते, तो लासारो को गुस्सा आता, लेकिन वह कुछ कर न पाता।

एक दिन तंग आकर उसकी मां ने गांव छोड़ने का निश्चय कर लिया। शहर पहुंचकर वह दूसरों के घरों में चौका-बर्तन करके गुजारा करने लगी। लेकिन इससे दो जून का खाना भी न जुटता। कई बार मां-बेटे को भूखा ही सोना पड़ता।



विवश होकर लासारो की मां ने उसे एक अंधे भिखारी के साथ कर दिया। मां ने सोचा कि इससे लासारो को खाने-पीने की कमी नहीं रहेगी। अंधे भिखारी ने लासारो की मां को विश्वास दिलाया था कि वह बच्चे को अपने बेटे की तरह पालेगा। मां ने भारी मन से लासारो को विदा किया। लासारो उस समय केवल आठ वर्ष का था।

एक बार लासारो भिखारी के साथ बैल की मूर्ति वाले पुल से गुजर रहा था। भिखारी ने उससे कहा—“इस मूर्ति के साथ कान लगाओ। तुम्हें आवाजें सुनाई देंगी।” लासारो ने जैसे ही मूर्ति के साथ कान सटाया, भिखारी ने उसकी गरदन पर थपड़ मारा। लासारो का सिर मूर्ति से जोर से टकराया। वह दर्द से किलबिला उठा।

भिखारी बोला—“मैं तुम्हें जीवन की शिक्षा दे रहा हूँ।” “यह कैसी अनेखी शिक्षा है?”—दुखी लासारो सोचता रह गया। लासारो के जीवन का यह पहला कड़वा अनुभव था। भिखारी उसकी मां को दिया हुआ वचन भी भूल गया। वह लासारो को बहुत कम खाने-पीने को देता। धीरे-धीरे लासारो भी उसे चकमा देना सीख गया।

एक बार उन्हें किसी ने दया करके अंगूर दे दिए। भिखारी ने लासारो से कहा—“आओ, दोनों मिलकर खा लेते हैं। लेकिन एक-एक दाना खाएंगे।” दोनों ने अंगूर खाने शुरू किए। भिखारी ने एक साथ दो-दो दाने खाए, तो लासारो ने तीन-तीन। भिखारी ने अंगूर खत्म होने के बाद लासारो को डांटा—“तुम मुझे धोखा देते हो? तुमने तीन-तीन दाने क्यों खाए?”

“मैंने आपको धोखा नहीं दिया।”—लासारो ने कहा। “लेकिन आपने गिनती कैसे की?”

“क्योंकि मैंने दो-दो करके अंगूर खाए लेकिन तुमने इसका कोई विरोध नहीं किया।”—भिखारी ने कहा और हंस पड़ा।

यह लासारो के लिए दूसरा अनुभव था। भिखारी चालाकी से काम लेता, तो लासारो उसका जवाब ज्यादा चालाकी से देता। एक दिन भिखारी ने

लासारो को ढाँचे से खाना लाने के लिए पैसे दिए। लासारो ने रास्ते में ही खाना खा लिया और बचा-खुचा भिखारी को दे दिया। लेकिन भिखारी ने उसका मुँह सूँघकर पहचान लिया कि लासारो ने आज फिर उसे छक़ाया है। बस, उसने लासारो की अच्छी तरह पिटाई कर दी।

इसके बाद लासारो ने निश्चय कर लिया कि वह भिखारी के साथ नहीं रहेगा। एक दिन बारिश हो रही थी। वह भिखारी को नौका-घाट पर ले जाने के बहाने फिसलन भरी सड़ियों पर ले गया।

पर फिसलते महसूस कर भिखारी ने कहा—“मुझे सीधे रास्ते से ले चलो।”

लासारो ने उत्तर दिया—“यह रास्ता सबसे अच्छा है। इधर से हमें नाव जल्दी मिल जाएगी।” यह कहकर वह एक खम्भे के पीछे छिप गया और बोला—“बाबा, जल्दी से आ जाओ।”

भिखारी जैसे ही आगे बढ़ा, खम्भे से टकरकर गिर पड़ा। लासारो ने कहा—“तुम खाना सूँघ सकते हो, लेकिन खम्भा नहीं!” इतना कहकर वह वहाँ से भाग गया। इसके बाद भिखारी के पास नहीं लौटा।

भटकता-भटकता लासारो मकीदा नामक नगर पहुँचा। वहाँ उसे एक पादरी के घर में नौकरी मिल गई। पादरी बहुत कंजूस था। यहाँ तक कि वह रोटियों को भी एक संदूक में छिपाकर रखता था और संदूक पर ताला लगा देता था।

भूख से परेशान लासारो ने एक दिन मिखी से ताले की दूसरी चाबी बनवा ली। अब भूख लगने पर वह चुपचाप रोटियाँ निकाल कर खा लिया करता।

पादरी को शक होने लगा कि हो न हो लासारो उसके बाहर रहने पर संदूक में से रोटियाँ निकाल लेता है। अब वह रोटियाँ गिनकर रखने लगा। इधर लासारो ने भी भूख मिटाने का एक नया तरीका खोज निकाला। वह रोटियों को बीच से ऐसे कुतर लेता, जैसे चूहे कुतर गए हों।

‘इस घर में तो कभी चूहे नहीं थे।’—पादरी सोचता। एक रात खट की आवाज सुनकर पादरी

चौका। उसने सुनी? मुझे है?”

लासारो कहा—“मुझे खाने ले!” इसके बाद चाबी पादरी को मुँह में रखकर

एक रात फुफकारने की

आवाज का आवाज तो ला

चाबी होने के आवाज आ रहे

रोटियाँ कुतरने लासारो को उस

लासारो एव

धूमता-धामता व

उसे कोई काम

हुए उसकी भेंट

लासारो की त

के लिए किराए

दोनों साथ रहने

जाकर खाने को

ले आता। दोनों

दोनों को भूखा ही बीत रहे

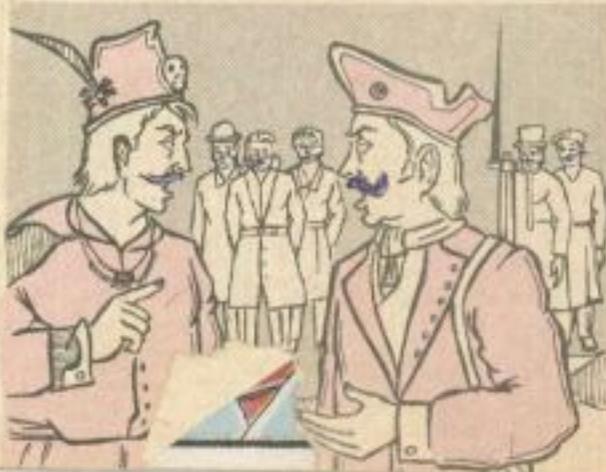


चौका। उसने पूछा—“लासारो, तुमने कोई आवाज सुनी? मुझे लगा जैसे कोई सांप इधर आया है?”

लासारो ने डर जाने का अभिनय करते हुए कहा—“मुझे डर लग रहा है, कहीं सांप मुझे काट न ले!” इसके बाद लासारो ने सोचा कि कहीं दूसरी चाबी पादरी को दिखाई न दे जाए, इसलिए वह चाबी मुंह में रखकर सोने लगा।

एक रात पादरी को लगा, जैसे कहीं से सांप के फुफ्फुकारने की आवाज आ रही है। वह डंडा उठाकर आवाज की दिशा में बढ़ा। लेकिन यह क्या! आवाज तो लासारो के मुंह से आ रही थी। मुंह में चाबी होने के कारण सांस चलने के साथ उसमें से आवाज आ रही थी। पादरी को पता चल गया कि रोटियां कुतरने वाला चूहा और सांप कौन हैं। उसने लासारो को उसी समय अपने घर से निकाल दिया।

लासारो एक बार फिर सड़क पर आ गया। धूमता-धामता वह तोलेदो नगर पहुंचा। कई दिन तक उसे कोई काम नहीं मिला। एक दिन बाजार में धूमते हुए उसकी भेंट एक बूढ़े सैनिक से हो गई। वह भी लासारो की तरह बेकार था, लेकिन उसके पास रहने के लिए किराए का एक मकान जरूर था। उस दिन से दोनों साथ रहने लगे। लासारो आस-पास के घरों में जाकर खाने को कुछ मांग लाता, तो कभी सैनिक कुछ ले आता। दोनों मिल-बांटकर खा लेते। कभी-कभी दोनों को भूखा भी रहना पड़ता। लासारो के दिन ऐसे ही बीत रहे थे।



‘बौटा दे लासारिल्यो दे तोमैस ई दे सूस फ्रेतुनास ई आदवेसो दादेस’ (लासारिल्यो दे तोमैस का जीवन तथा उसका सौभाग्य और दुर्भाग्य) सोलहवीं शताब्दी के किसी अज्ञात स्थानी लेखक का उपन्यास है। पहले-पहल १५५४ में प्रकाशित। अनेक भाषाओं में अनुवाद हुए। यह इसकी संक्षिप्त कथा दी जा रही है। —सं.

एक दिन सैनिक की बूढ़ी मकान मालकिन दो सिपाहियों के साथ आ धमकी। उसे पिछले दो महीने से किराया नहीं मिला था। बूढ़े सैनिक ने कहा—“आप थोड़ी देर बाद फिर आ जाएं। मैं बाजार जाकर नोट भुना लाता हूँ।” मकान मालकिन और सिपाही चले गए। लेकिन बूढ़ा सैनिक जो बाहर गया तो फिर लौटा ही नहीं। निराश लासारो ने चाबी मकान मालकिन को दी और बाहर चला गया।

लासारो कई दिन तक भूखा भटकता रहा। उसे काम की तलाश थी। आखिर उसे ताबीज बेचने वाले एक बाजीगर के पास नौकरी मिल गई। ताबीज बेचनेवाला पक्का धूर्त और बेईमान था। वह ताबीज देने के नाम पर भोले-भाले लोगों को ठगता था। इस काम में उसका सहायक था एक सिपाही। लेकिन लासारो उन लोगों की चालबाजी को जल्दी समझ नहीं पाया।

एक दिन उसने देखा कि ताश खेलते हुए दोनों में झगड़ा हो गया है। दोनों ने अपने-अपने हाथियार निकाल लिए। आसपास खड़े लोगों ने किसी तरह बीचबचाव कराया।

दूसरे दिन ताबीज वाला सड़क के किनारे ताबीज बेचने की कोशिश कर रहा था। तभी वह सिपाही वहां पहुंचा और चिल्ला-चिल्लाकर कहने लगा—“यह आदमी धूर्त है। ताबीजों की बिक्री बढ़वाने के लिए इसने मुझसे सहायता मांगी थी। इसने वायदा किया था कि लाभ में से हिस्सा देगा। लेकिन मेरा दिल बेईमानी के लिए नहीं माना। मैं आप लोगों को धोखा नहीं देना चाहता। इसलिए मैं घोषणा करता हूँ कि मेरा इस बेईमान के साथ कोई लेना-देना नहीं है।”

देखते-देखते भीड़ छंट गई। ताबीज वाला सिर पकड़े अकेला बैठा रह गया।

दूसरे दिन जब वह फिर मजमा लगाकर ताबीज बेचने की कोशिश कर रहा था, तो वही सिपाही आया और जमीन पर गिरकर तड़पने लगा। तड़पते हुए उसने ताबीज वाले से प्रार्थना की—“मुझ पर दया करो ! दया करो मुझ पर ! कल मैंने झूठ बोला था।”

आसपास जमा भीड़ ने ताबीज वाले से कहा कि सिपाही को क्षमा कर दो। ताबीज वाला पूजा की मुद्रा में बैठ गया। थोड़ी देर बाद उठा और सिपाही पर जल छिड़ककर बोला—“उठो, शैतान तुम्हारे सिर से उतर गया है। तुम्हें मुक्ति देने के लिए शैतान को मैंने अपने ऊपर ले लिया है। लेकिन वह मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकेगा।” उसने फिर कोई मंत्र पढ़ा। सिपाही कुछ ही क्षणों में उठ खड़ा हुआ। उसने कहा—“मुझे क्षमा कर दीजिए, महाराज ! कल मैंने जो कुछ कहा था, वह झूठ था। इसलिए शैतान मुझे सता रहा था। आपकी कृपा से अब मैं ठीक हूँ।”

उस दिन लोगों ने ताबीज वाले से बहुत ताबीज खरीदे। इसके बाद वह किसी दूसरे शहर को चल दिया। रास्ते में लासारो ने देखा कि वह सिपाही ताबीज वाले के साथ बात करते हुए कह रहा है कि उसने किस तरह लोगों को बुद्ध बनाया और फिर दोनों हंसने



नंदन । जून १९९४ । ३९

लगे।

ताबीज वाले की वास्तविकता पता चल जाने पर लासारो ने उसकी नौकरी छोड़ दी। वह शहर के बड़े पादरी से मिला। पादरी को भी काम के लिए एक नौकर की आवश्यकता थी। उसने लासारो को खच्चर पर लदे पानी के घड़े दिए और कहा—“बाजार जाकर पानी बेच आओ। तौस सिके मेरे होंगे, बाकी सब तुम्हारे।” शहर में पानी की कमी थी। इसलिए सारे घड़ों का पानी बहुत जल्दी बिक गया। हर रोज ऐसा ही होता। लासारो तौस सिके पादरी को दे देता और अपनी बचत के पैसे एक गुल्लक में जमा करता जाता। वह सोचता था—‘अब जीवन के अच्छे दिन आ रहे हैं।’

अगले चार वर्षों में उसके पास काफी पैसे जमा हो गए। उसे लगा कि अब कोई बेहतर काम करना चाहिए। वह सैन्य सामग्री बेचने वाली एक दुकान पर गया, एक पुरानी वर्दी और तलवार खरीद लाया।

वर्दी और तलवार से लैस होकर लासारो पुलिस में भरती हो गया। इस नौकरी में अक्सर उसका सामना चोर-उचकों से हो जाता। कई बार वह घायल भी हुआ। इसलिए यह नौकरी भी उसे रास नहीं आई। उसने पुलिस की नौकरी छोड़ दी। लासारो कोई ऐसा काम करना चाहता था, जिसमें वह आजादी से घूम-फिर सके। अब तक उसने कई मित्र भी बना लिए थे। एक मित्र की सहायता से उसे मुनादी करने का काम मिल गया।

इस नौकरी में उसे अलग-अलग शहरों में घूमने का अवसर मिलता था। अब तक लासारो जवान हो चुका था। एक दिन सान साख्खादोर नगर के गिरजे के बड़े पादरी ने उसे बुलाया। उसने लासारो के सामने अपनी नौकरानी से विवाह करने का प्रस्ताव रखा। लासारो ने सोचा—‘पादरी का प्रस्ताव स्वीकार करके मैं उनका आशीर्वाद प्राप्त कर सकूंगा और मेरा जीवन सुख से कटेगा।’ उसने पादरी की बात मान ली। विवाह करके पत्नी के साथ सुख से रहने लगा।

(प्रस्तुत : डा. सुरेश धींगड़ा)

सत्रहवीं शताब्दी
अदालत के ज
एक बेटी थी।
एक दिन...

रामनगर का ज



मगर वा
पागल... रोम
लिखी... म्द

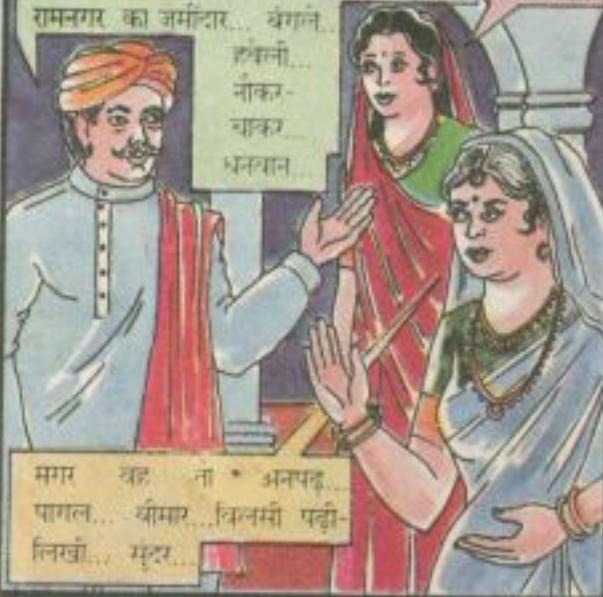
विलसी ने रि
एक दिन...



दो देवियां

सत्रहवीं शताब्दी। बंगाल की फौजदारों
अदालत के जज थे देवू चौधरी। उनके
एक बेटी थी। प्यार का नाम था विलसी।
एक दिन...

रामनगर का जमींदार... बंगले...

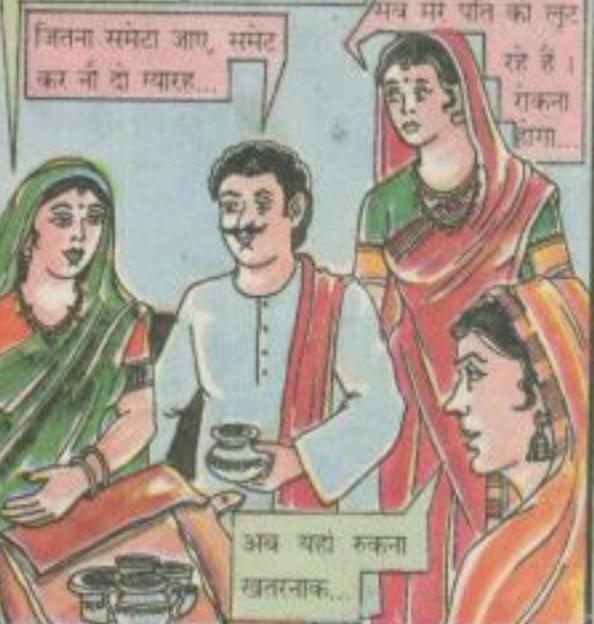


मगर वह तो * अनपढ़...
पागल... योमार... विलसी पढ़ी-
लिखी... सुंदर...

रिश्ता... गम
कर में...

मां-बेटी का विरोध बेकार गया। विलसी
की शादी वहीं हो गई। ससुराल का हाल
विचित्र था...

सुना है, वह बहुत समझदार है...



जितना समेटा जाए, समेट
कर नौ दो ग्यारह...

मक में पति को लुट
रहे हैं।
रुकना
होगा...

अब यहाँ रुकना
खतरनाक...

विलसी ने रिश्तेदारों की खबर लेनी शुरू की, किंतु
एक दिन...

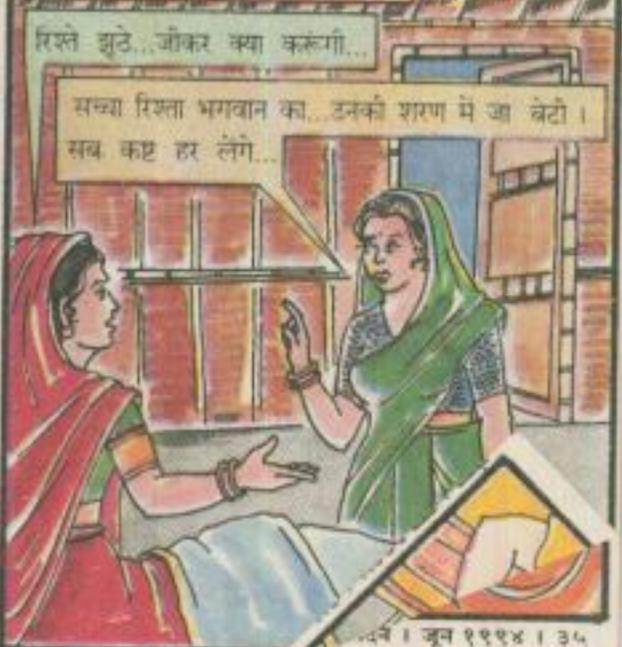


जमींदार बाबू घोंटे में गिर गए... नहीं
रहे मालकिन...

नहीं, ऐसा
नहीं...
अब देखते
हैं इसे...

मौका है... बेहोश
है...

लालची रिश्तेदार विलसी को गंगा में फेंक आए।
किंतु मछेरों ने उसे बचा लिया। होश में आ
विलसी ने अपनी व्यथा सुनाई...



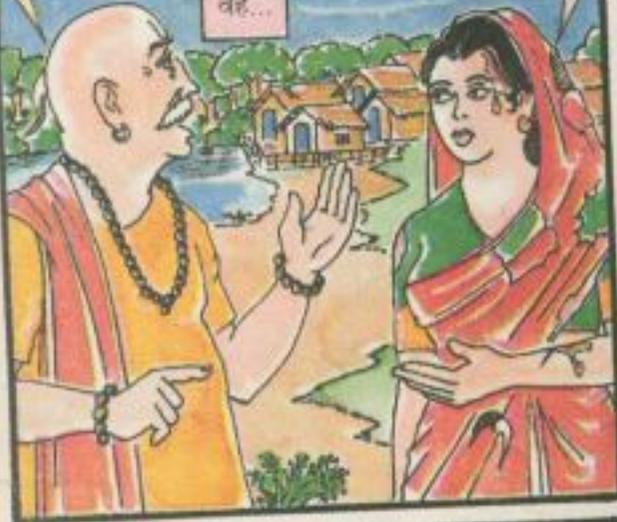
रिश्ते झूठे... जोकर क्या करूंगी...

सच्चा रिश्ता भगवान का... उनकी शरण में जा बेटी।
सब कष्ट हर लेंगे...

विलसी के मन की बात छु गई। उस रात जब सब सो गए, वह झोंपड़ी से निकल गिरती-पड़ती...

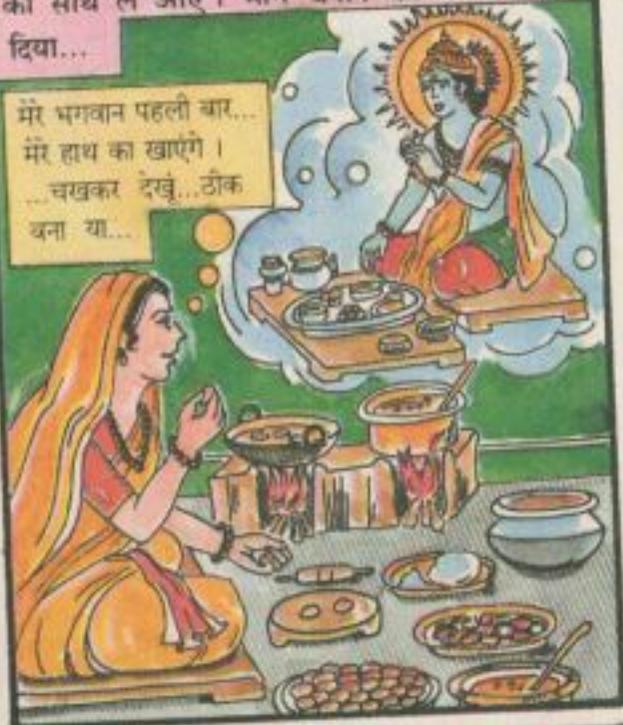
हाथ-पैर लहू लुहान... कपड़े फटे... कहाँ जा रही हो बेटो इतनी रात में...

भगवान की शरण में... कहाँ मिलेंगे वह...

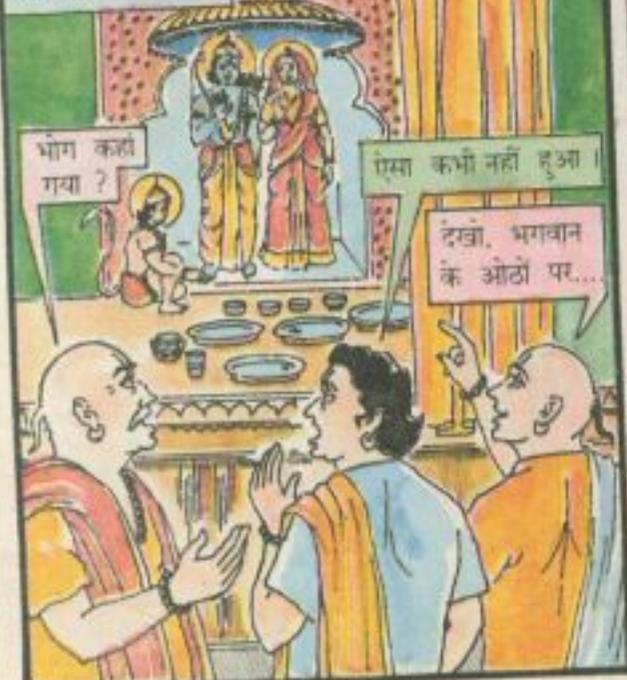


वह काशी के राम मंदिर में प्रधान पुजारी थे। विलसी को साथ ले आए। भोग बनाने का कार्य सौंप दिया...

मेरे भगवान पहली बार... मेरे हाथ का खाएंगे। ...चखकर देखू... ठीक बना या...



पुजारियों ने भोग भगवान को अर्पित किया। पटा हटाया, तो...



भोग कहा गया ?

ऐसा कभी नहीं हुआ।

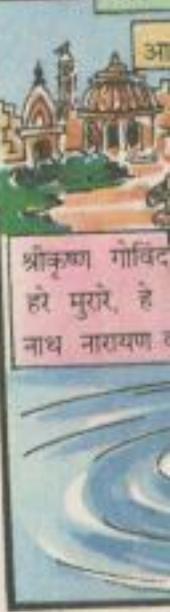
देखो, भगवान के ओठों पर...

कई बार ऐसा हुआ, तो चर्चा सारी काशी में फैल गई। विलसी के दर्शन करने भीड़ उमड़ने लगी। उसे अजपा मां के नाम से पुकारा जाने लगा...



तू ही गोविंद, तू ही नारायण, तू ही पालनहार...

एक दिन अजपा कण-कण में वृंदावन जा पा में... अरी



श्रीकृष्ण गोविंद हरे मुरारे, हे नाथ नारायण

वृंदावन में दर्शन करने उनका स्वागत

हक-हक मां हकहकी मां

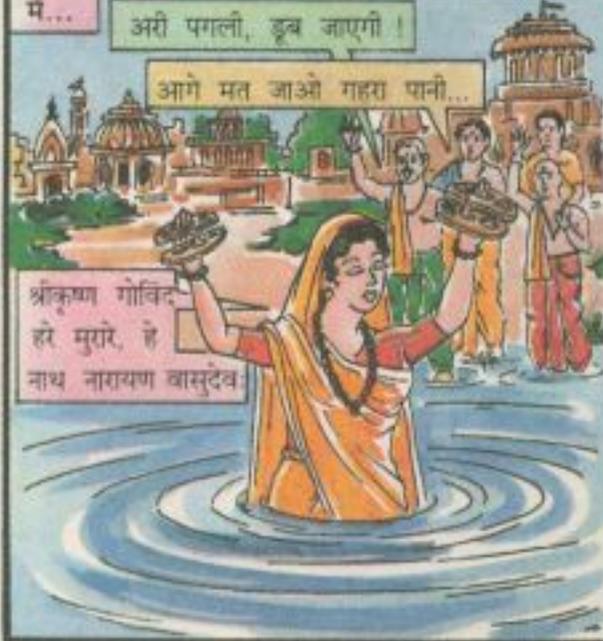


एक दिन अजपा ने वृंदावन की महिमा सुनी—वहां कण-कण में श्रीकृष्ण का वास है। अजपा वृंदावन जा पहुंची। आराध्य के दर्शन पाने यमुना में...

अरी पगली, डूब जाएगी!

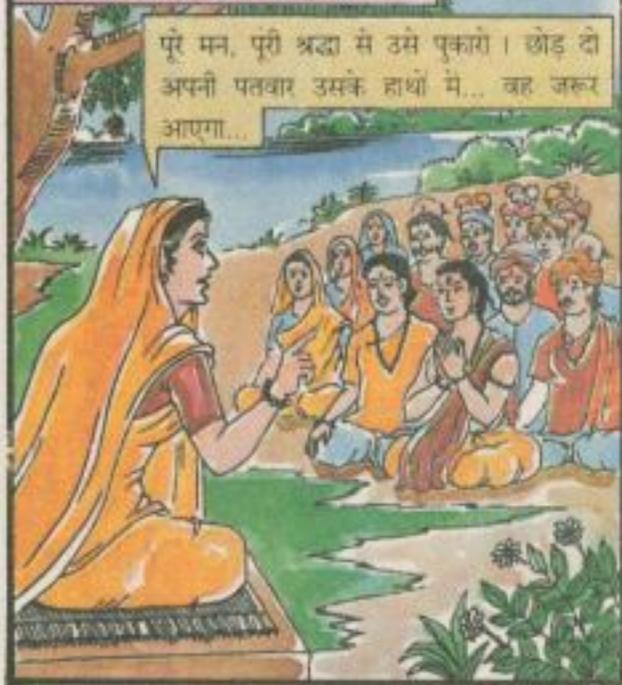
आगे मत जाओ गहरा पानी...

श्रीकृष्ण गोविंद
हरे मुरारे, हे
नाथ नारायण वासुदेव



यमुना की गहराई कमर तक ही रही। लोग अजपा की चरण-रज लेने को आतुर हो उठे।

पूरे मन, पूरी श्रद्धा से उसे पुकारो। छोड़ दो अपनी पतवार उमके हाथों में... वह जरूर आएगा...



वृंदावन में कुछ दिन ठहर अजपा मां भवानी के दर्शन करने चिंतामणि तीर्थ गई। मंदिर के पुजारी ने उनका स्वागत किया। मार्ग में...

हक-हक माने अमर...। इसी से इन्हें हकहकी माता कहते हैं। जो बोलती है, हमेशा सच होता है...

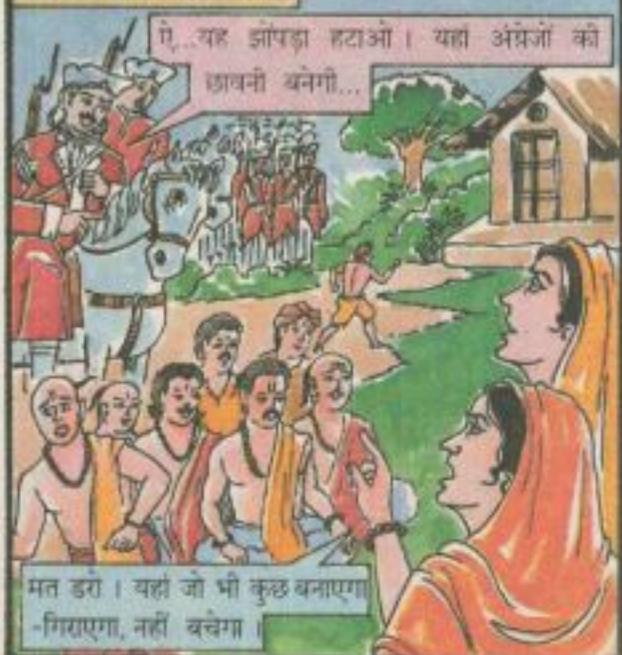
प्रणाम मां

हक, हक, हक...
तु आ गई... यहाँ
हमारा काम
खत्म...
चलो नौशेरा...



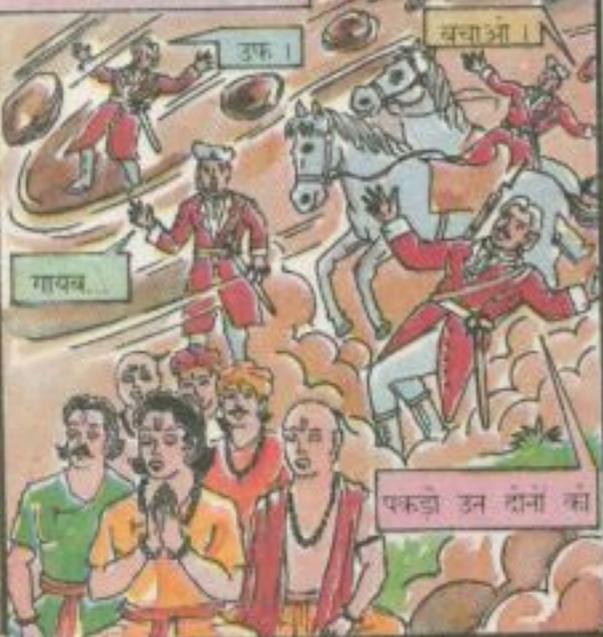
अजपा के पैर जैसे बंध गए। हकहकी माता के साथ वह नौशेरा (पंजाब) आई। आश्रम बनाकर रहने लगीं। एक दिन...

ये... यह झोपड़ा हटाओ। यहाँ अंग्रेजों की छावनी बनेगी...

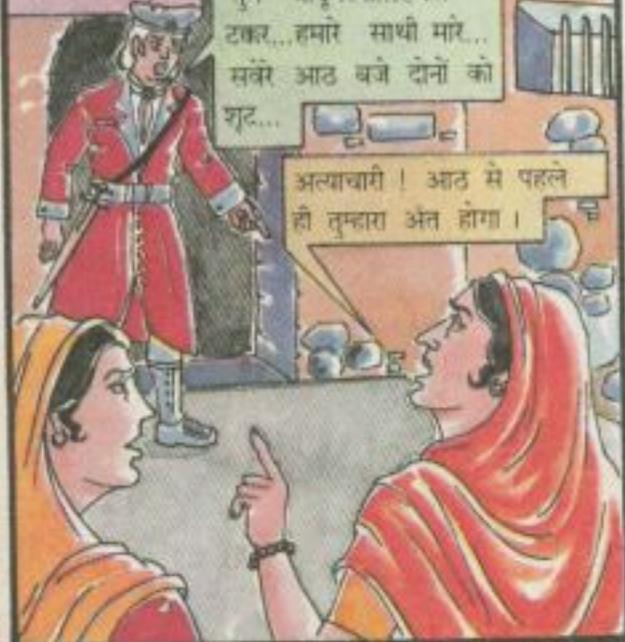


मत डरो। यहाँ जो भी कुछ बनाएगा - गिराएगा, नहीं बचेगा।

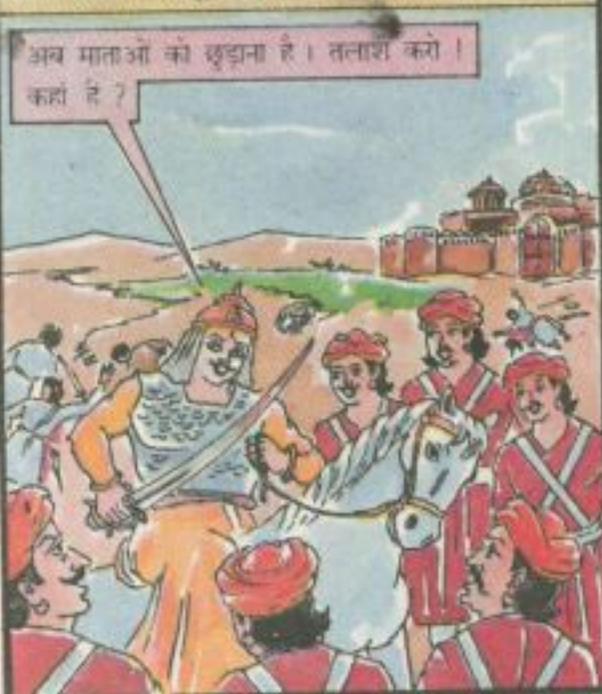
अंगरेज अधिकारी मनमानी करने पर उतर आया।
दोनों देवियों को पकड़ने का आदेश दे आश्रम तोड़
डालने को कहा ही था कि...



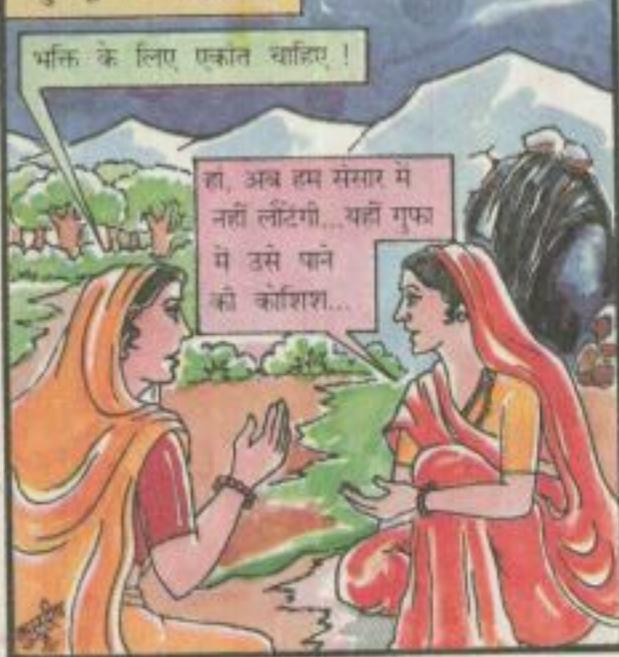
किंतु वे दोनों वहां से बहुत दूर नागों के घेरे में ध्यानमग्न
थीं। अंग्रेज सैनिक धोखे से उनको पकड़कर किले
में ले आए...



हुआ भी ऐसा ही। छह बजते न बजते हजारों सशस्त्र
लोग किले पर टूट पड़े। सारे सैनिक मारे गए...

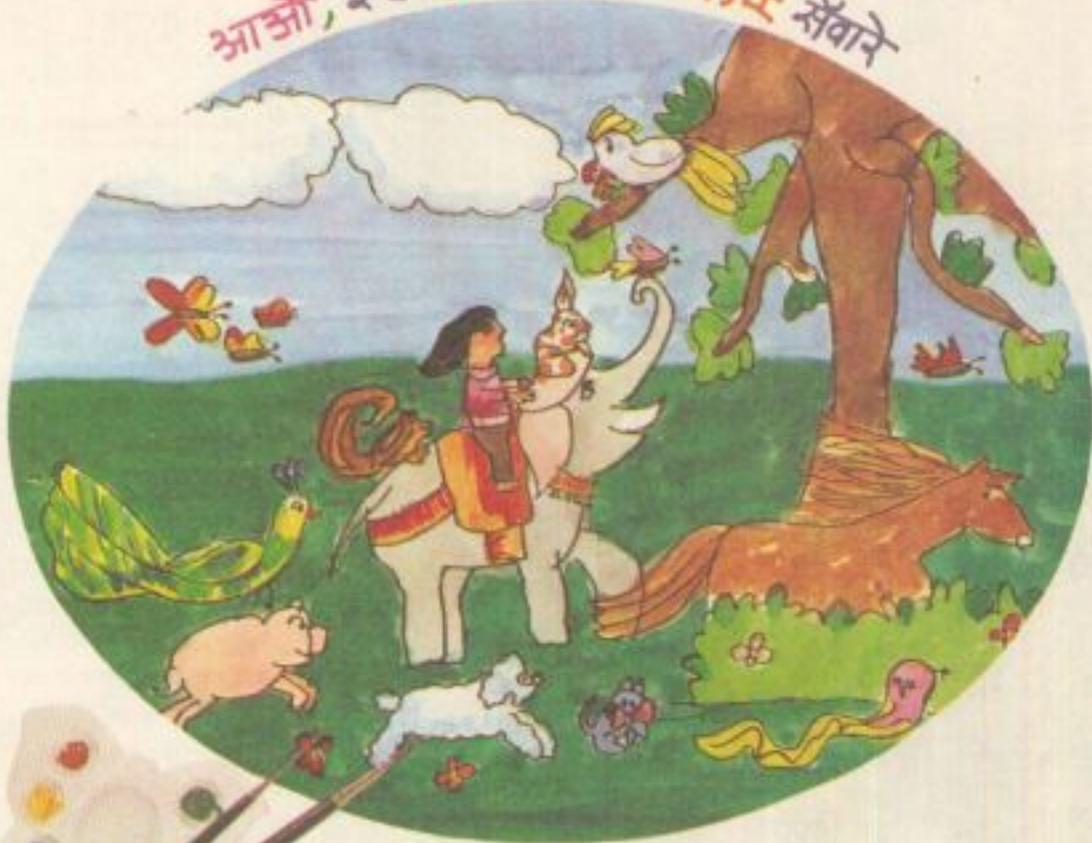


पूरा किला छान मारा गया, किंतु न अजया मिली, न
हकहकी मां। मिलती भी कैसे? वे तो वहां से
बहुत दूर हिमालय पर...



मुझे रिकवरी न
मार्टिन में परि
उत्कृष्ट शुद्धता
स्क्रोबल और
चॉकलेट ए
लेक्टोबोनबॉ
आह्ला! कव

प्यारे प्यारे ये साथी हमारे
आओ, इन्हें हम सब के लिए सँवारे



कोरस के मक्खनवन उजले रंगों में सुंदर चित्रों में
रंग भरिए, हमेशा के लिए उन्हें अपने पास रखिए।

रोमांचक आर्ट मटीरियल का भरपूर सज्जाना - चॉस्टर कलर, वॉटर कलर,
पेंसिल, फ्लोरोसेंट और प्लैस्टिकेयोज। अपनी मक्खनवन सामग्री लीजिए: चॉस्टर,
बर्थ-डै कार्ड, वीटिंग कार्ड बनाइए, स्कूल प्रोजेक्ट को सज्जिए।



कोरस

मुफ्त!

देश भर के लिए
आकर्षक रोमांचक रेखाचित्र,
अपने नाम व पते के साथ 1-रुपये वाला
एक टिकटिका यहाँ भेजिए
कोरस (इंडिया) लि.,
पोस्ट बॉक्स-6558, बंबई-400 018

कोरस स्टूडेन्ट्स आर्ट मटीरियल लाइए अपनी दुनिया रंगीन बनाइए

नेदन 1 जून १९९४ | 36

MA30-98

हिन्दुस्तान टाइम्स
का
प्रकाशन

चित्र में बाएँ
हुए श्री अटल

नई दिल्ली
का जन्म भारत
बने। देश में
उल्लेखनीय य
सफलता अर्जि
अर्जित किया
कूट-कूटकर
भावभीनी श्रद्ध
समारोह में
बिरला ज
कृष्णकुमार बिरल
जी पर गांधी जी,
तथा भगवद् गीत
श्री बिरला
पिता जी ने सर्भ
रामायण का अ
अपनी समस्याओं
खोज करते थे।
नं. बा. स. इ

वर्ष ३०, अंक : ८, जून '९४ नई दिल्ली; ज्येष्ठ-आषाढ़, शक सं. १९१६



चित्र में बाएं से दाएं : श्री कृष्णकुमार बिरला, श्री आदित्य बिरला और दीप जलाते हुए श्री अटल बिहारी वाजपेयी।

वह सचमुच भारत रत्न थे

नई दिल्ली। "इस बात की बहुत खुशी है कि श्री घनश्यामदास बिरला का जन्म भारत में हुआ। वह इस देश की स्वतंत्रता की लड़ाई में सहभागी बने। देश में नए-नए उद्योग लगाए। उन्होंने विज्ञान व संस्कृति के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान किया और कठोर परिश्रम व पराक्रम के बल पर सफलता अर्जित की। उन्होंने जो कुछ मन में ठान लिया उसे पूरी शक्ति से अर्जित किया। वह सचमुच भारत रत्न थे। उनमें परोपकार की भावना कूट-कूटकर भरी थी।"—इन शब्दों में श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने भावभीनी श्रद्धांजलि दी। वह स्वर्गीय श्री घनश्यामदास बिरला के जन्म शती समारोह में बोल रहे थे।

बिरला जी के सुपुत्र, सांसद कृष्णकुमार बिरला ने कहा कि उनके पिता जी पर गांधी जी, अपनी पत्नी महादेवी जी तथा भगवद् गीता का गहरा असर पड़ा।

श्री बिरला ने अग्रे कहा — "मेरे पिता जी ने सभी धर्मग्रंथों, उपनिषदों व रामायण का अध्ययन किया था। वह अपनी समस्याओं का हल भगवद् गीता में खोज करते थे। गांधी जी उन्हें अपने पुत्र ने. वा. स. ३६ अ

की तरह मानते थे। उनका मानना था कि तकनीकी शिक्षा और उच्च नैतिक मूल्यों के बल पर ही भारत महान बन सकता है।"

इस अवसर पर पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैलमिह, सी. सुब्रमण्यम तथा दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति डा. उपेन्द्र बक्षशी ने भी घनश्यामदास जी को श्रद्धांजलि दी।

श्रीमती सरला बिरला ने भी अपने विचार व्यक्त किए। श्रीमती शोभना भरतिया और मेजुश्री ने विशिष्ट अतिथियों का स्वागत किया। श्री आदित्य बिरला ने कार्यक्रम का संचालन किया।

अंतरिक्ष में विज्ञापन

वाशिंगटन। जार्जिया की एक कम्पनी ने सोचा कि क्यों न वैज्ञानिकों की मदद से अपनी चीज का विज्ञापन भी कर दिया जाए। ओजोन का पता लगाने के लिए एक बहुत बड़ा प्लेटफार्म बनाया गया। उसी पर कम्पनी ने अपनी चीज का विज्ञापन लगा दिया। वैज्ञानिकों और अंतरिक्ष से जुड़ी संस्थाओं ने इस बात का बहुत विरोध किया। उनका कहना था कि अंतरिक्ष को इस तरह व्यापार का केन्द्र नहीं बनाया जाना चाहिए। वैसे भी ये चीजें दूरबीनों तक का रस्ता एक लेंगी और वैज्ञानिक अंतरिक्ष को नहीं देख पाएंगे।

पीपल के जंगल

तेलअबीव। इस्राइल के वैज्ञानिक चीन और जर्मनी में पहाड़ी पीपल के जंगल लगाएंगे। चीन में लकड़ी की बहुत कमी है। वहाँ जंगल भी खत्म हुए हैं। पहाड़ी पीपल तेजी से बढ़ता है, लकड़ी की कमी भी पूरी करता है।

लम्बी नाक वाले

जकार्ता। बोर्नियो के जंगल में विचित्र किस्म के बंदर पाए जाते हैं। इनकी नाक चेहरे के ऊपर किसी फल की तरह लटकती होती है। ये बंदर नदियों के किनारे पेड़ों पर रहते हैं।

पाठक अपने प्रखबार से लीचकर अलग निकाल लें।

जंढन ताल समाचार

दीन सबहि को लखत है, दीनहि लखै न कोय,
जो रहौम दीनहि लखै, दीनबधु सम होय। —कविवर रहीम

मेमना और भेड़िया

एक मेमना कहीं पाने पो रहा था। भेड़िया वहां अन्धा। बोला—“ऐ फुटके मुझे गाली देता है?” बोला मेमना बोला—“अंकल, मैं आपको ज्ञानता नहीं, भला गाली क्यों दूंगा?” भेड़िया तो भेड़िया, उसकी नीयत खराब। बोला—“तेरे बाप ने गाली दी थी।” और मेमने पर दूट पड़ा।

फिछले दिनों कई समाचार छपे—जब पाँच-छह या आठ-दस साल के बच्चे को उठा लिया गया। मोटी रकम मांगी गई। रकम मिल गई, तो बालक को छोड़ दिया गया। लगता है, हम भेड़ियों से घिरे हों। बच्चों को तो पूरी सावधानी रखनी ही चाहिए। मौका पड़ने पर साहस से काम लेना चाहिए। बड़ों को भी सावधानी चाहिए कि वे अपने पापों में बेकसूर बच्चों को भागीदार न बनाए।

इन
से
मि
ल
ए



दिल्ली के पास छोटे-से गांव हस्तमाल में जन्मे मुरारीलाल त्यागी चालीस साल से अध्यापक हैं। एक दर्जन से अधिक स्कूल स्थापित कर चुके हैं। एक दर्जन उपन्यास छप चुके हैं। लेकिन प्रचार से दूर-दूर रहे। एजधानी में पब्लिक स्कूल कॉमिन्स के संरक्षक हैं, कई संस्थाओं के अध्यक्ष भी।

आज छोटे-से छोटा आदमी भी बालक को पब्लिक स्कूल में भर्ती कराना चाहता है। इन स्कूलों में बड़िया अनुशासन, सफाई, और अच्छी पढ़ाई होती है इसलिए। कई बार इनके खिलाफ शोर मचता है, अक्सर तब जब दाखिलों के दिन होते हैं। दाखिला चाहने वाले हजारों होते हैं। जिनके बच्चे नं. बा. स. ३६ ब

दाखिल नहीं हो पाते, प्रायः वे ही शोर मचाते हैं। लखी जी का कहना है कि ऐसे पब्लिक स्कूल भी हैं जो बच्चों का ध्यान कम रखते हैं, अपना लाभ अधिक देखते हैं। यह अपराध है, पाप भी है।

स्कूल की संपत्ति के बारे में लखी जी कहते हैं—“स्कूल किसी की जमीन-जायदाद नहीं है। सरकार का पूरा नियंत्रण रहता है। यदि कोई स्कूल बंद करना पड़े तो काबू से सरकार को सौंपना होगा।”

रस्सी पर पिल्ले

ब्रिस्टल। जेनेट स्मिथ को कुत्ते पालने का बहुत शौक है। उसने बूलडॉग नस्ल के प्यारह पिल्ले पाल रखे हैं। मगर ये पिल्ले इतने शरारती हैं कि जेनेट को कुछ काम ही नहीं करने देते। तब आकर जेनेट ने पिल्लों से निबटने का असोखा तरीका निकाला। जब वह काम में लगी होती है, तो पिल्लों को अलग-अलग थैले में रख, कापड़े सुखाने वाली डोरी पर लटक देती है। पिल्ले बिना शरंगुल किए लटके रहते हैं।

जन्म दिन मुबारक

म्युनिख। टांगा का जन्म १९३४ में हुआ था। उसके साठवें जन्म-दिन पर उसके लिए एक बड़ा-सा केक बनवाया गया। केक सज्जियों से बना था। टांगा एक माटा दरियाई घोड़ा है। यहां के विडियापर में रहने वाली वह सबसे अधिक उम्र की दरियाई घोड़ी है।

बिना तले चिप्स

स्टाकहोम। अलू के मसालेदार चिप्स मोटे लोग कैसे खाए। एक तो आलू, ऊपर से तल हुआ। एक कम्पनी ने इन चिप्स को तैयार करने की नई विधि निकाली है। इनमें तले बिना तैयार किया जाता है। मसाले का स्वाद भी भरपूर मिलता है।

बच्चों के लिए

नई दिल्ली। बच्चों को कठिन कामों से छुटकारा दिलाने के लिए एक सौ नौ नोबल पुरस्कार विजेत सामने आए हैं। ये एक संगठन 'चाइल्ड राइट वर्ल्ड वाइड' के अंतर्गत काम करेंगे। इनमें प्रमुख होंगे मिखाइल गोर्बाचोव, टेसमंड डूट, दलाई-लामा आदि। करोड़ों बच्चों की मुक्ति के लिए दुनिया भर में अभियान चलाया जाएगा।

मुखिया कौन

टोकियो। रान की उम्र है पचीस वर्ष। अपने परिवार के चवालीस सदस्यों में वह सबसे बड़ा है। रान एक बंदर है। वह अपने परिवार के साथ चिडियाघर में रहता है। इन्हीं बंदरों में है—सोतोईमो। उसने रान की सत्ता को चुनौती दी है। वह अक्सर उससे लड़ता-झगड़ता है। जबकि किसी और बंदर ने ऐसा कभी नहीं किया। ऐसा लगता है कि जल्दी ही रान की जगह सोतोईमो बंदरों के इस झुंड का मुखिया बन जाएगा।

अजंता-एले

औरंगाबाद। अजंता की देखभाल और नए दो अरब रुपये योजना के तहत लगाए जाएंगे। जाएंगे तथा सां जाएगा। हवाई जाएगा जिससे पर्यटक वहां आ

शेरों व

रीको। यहां पाए दुनिया भर में राजधरान इन मदद देता रहा राजकुमार है। है। वह सफेद बना रहे हैं। बि बनेगी।

बिच्छू ने

नासिक। बिच्छू और कुछ बच्चे अचानक बिच्छू जहां बच्चों को दिखाई दिया। हुए थे। बच्चों इसकी खबर विशेषज्ञों को सोलहवां से

तोत

संदन। इंग्लैंड बहुत अच्छे ल में चालीस तो ने इस बात की दी। उनका मचाते हैं। कहा कि यह इसमें पक्षियों अधिकार है, को चहकने नं. बा. स.

अजंता-एलोरा का विकास

औरंगाबाद। अजंता-एलोरा की गुफाओं की देखभाल और विकास के लिए जापान ने दो अरब रुपए की मदद दी है। इसी योजना के तहत अजंता के आसपास वन लगाए जाएंगे। सड़कों की मरम्मत की जाएगी तथा साफ पानी का प्रबंध किया जाएगा। हवाई अड्डे का भी विकास किया जाएगा जिससे कि अधिक से अधिक पर्यटक वहां आ सकें।

शेरों का इतिहास

रीवां। यहां पाए जाने वाले सफेद शेर दुनिया भर में मशहूर हैं। रीवां का राजपरिवार इन शेरों के विकास में बहुत मदद देता रहा है। पुष्पराज सिंह रीवां के राजकुमार हैं। वह विधानसभा सदस्य भी हैं। वह सफेद शेरों के इतिहास पर फिल्म बना रहे हैं। फिल्म हिंदी और अंग्रेजी में बनेगी।

बिच्छू ने सिक्के दिलाए

मसिक। बिच्छू आगे-आगे भाग रहा था और कुछ बच्चे उसके पीछे भाग रहे थे। अचानक बिच्छू एक ऐसे स्थान पर पहुंचा, जहां बच्चों को जमीन में एक कलश दिखाई दिया। इसमें चांदी के सिक्के भरे हुए थे। बच्चों ने अपने परिवार वालों को इसकी खबर दी। परिवार वालों ने विशेषज्ञों को खबर की। ये सिक्के सोलहवीं से अठारहवीं सदी तक के हैं।

तोतों का शोर

लंदन। इंग्लैंड में एक व्यक्ति को तोते बहुत अच्छे लगते थे। उसने अपने बग में चालीस तोते पाल रखे थे। पड़ोसियों ने इस बात की शिकायत अदालत में कर दी। उनका कहना था कि तोते बहुत शोर मचाते हैं। अदालत ने अपने फैसले में कहा कि यह दुनिया हम सबके लिए है। इसमें पक्षियों को भी उठना ही रहने का अधिकार है, जितना हमें। इसलिए तोतों को चहकने से कोई नहीं रोक सकता।
नं. बा. स. ३६

सिक्कों के शौकीन

नई दिल्ली। मयूर विहार में रहते हैं महावीर शंकर माथुर। उनके पास दो सौ देशों के पंद्रह हजार सिक्के हैं। इस पूर्व पहली सदी से लेकर भारत में मुगलों द्वारा चलाए गए सिक्के तक मौजूद हैं। उनके पास सूडान के एक सिक्के पर हाथी, नेपाली सिक्के पर गाय, तंजानिया के सिक्के पर खरगोश बना है। उनके पास सबसे बड़ा सिक्का अफगानिस्तान का है। पांच रुपए का यह सिक्का चांदी का है।

बंदरों के नए घर

नई दिल्ली। यहां के अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में बंदरों ने बहुत उत्पात मचा रखा है। अब उन बंदरों को पकड़ा जाएगा। इन पकड़ने में बंदर विशेषज्ञ इकबाल मलिक तथा अन्य पशु विशेषज्ञों की मदद ली जाएगी। इन बंदरों के लिए नए घर तैयार किए हैं। कोशिका की जाएगी कि बंदरों के पूरे परिवारों को एक जगह छोड़ा जाए। परिवार से बिछड़ने पर वे हिंसक हो उठते हैं।

ओजोन कम नहीं

नई दिल्ली। भारत के ऊपर फैली ओजोन गैस की परत कम नहीं हो रही है। यह बात महासागर विज्ञान विभाग की सालाना रिपोर्ट में कही गई है। ओजोन परत कम होने से सूरज की किरणें धरती पर रहने वाले प्राणियों पर घातक असर करती हैं। वैज्ञानिकों ने ऐसी तकनीक निकाली है कि हर पांच मिनट में ओजोन की कमी के बारे में पता किया जा सकता है।

जूले वर्न पुरस्कार

नई दिल्ली। दूरदर्शन पर विज्ञान सम्बंधी कार्यक्रम आता है—टॉनिंग ड्राइट। इसे विज्ञान के बारे में नए ढंग से जानकारी देने के लिए जूले वर्न पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

नूतने समाचार

□ भारत में चालीस नए रेडियो स्टेशनों का निर्माण किया जा रहा है।

□ राष्ट्र संप में दक्षिण अफ्रीका का नया राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया।

□ ऑस्ट्रेलिया में सिडनी के पास समुद्र में एक यात्री विमान गिर पड़ा। विमान डूब गया, पर यात्री तथा पायलट बचा लिए गए।

□ अमरीका में न्यू ऑर्लिंस में दो लुटेरों ने एक भिक्षुणी पर गोली चलाई। गोली उसके हाथ की प्रार्थना पुस्तक में घंस गई। उसके प्राण बच गए। सब कह रहे हैं—उसे ईश्वर ने बचाया।

□ किसी ने कबाड़ी की दुकान से पुराना कालीन कौड़ियों के मोल खरीदा। बाद में पता चला, वह तो मुगल बादशाहों के महल में बिछा करता था। बाद में वही कालीन पचीस लाख रुपयों में बिका।

□ लगातार चलने वाली लड़ाई के कारण काबुल का चिड़ियाघर सुनसान हो गया है। वहां बस पांच बच बचे हैं।

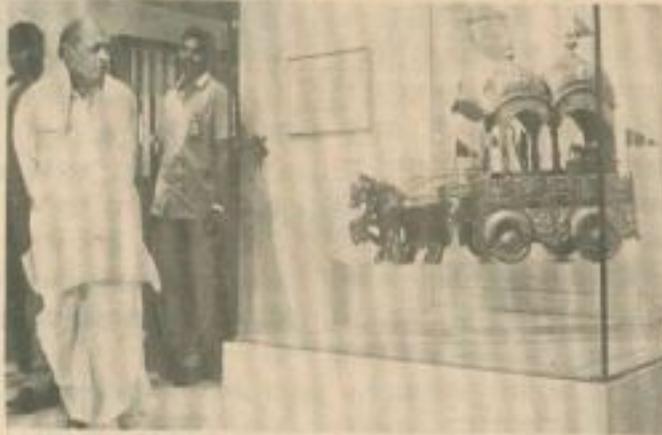
□ रूस के एक टायर कारखाने में मजदूरों को तनखाह के रूप में वहां बने टायर दिए गए क्योंकि कारखाने में पैसे की कमी थी।

□ कुवैत में 'भारत सप्ताह' घुमघुम से मनाया गया। मेले में आए हजारों दर्शकों ने भारतीय हीरो-जवाहरातों को बहुत सराहा। भारतीय जेवरों की प्रदर्शनी लगी। इस प्रदर्शनी को देखने बहुत-से अमीर लोग आए। एक हार सादे प्यारह लाख रुपए में बिका।

□ पिछले वर्ष भारत में ढाई लाख से अधिक मोटर कारें बनाई गईं।

□ भारत में बनी रेल पटरियां नौ देशों को निर्यात की जाते हैं।

□ दिल्ली में महिलाओं द्वारा एक पेट्रोल पम्प सफलतापूर्वक चलाया जा रहा है।



राष्ट्रीय कला संग्रहालय में प्रधानमंत्री श्री नरसिंह राव ने अभूषण शोधिका का उद्घाटन किया। चित्र में सोने का अर्जुन रथ देखते हुए प्रधानमंत्री।



↑ हिंदुस्तान टाइम्स द्वारा आयोजित कार्टून प्रतियोगिता में हैदराबाद के संजय अष्टपुत्रे के कार्टून को प्रथम पुरस्कार मिला।



↑ बाल भजदूतों की दशा की ओर ध्यान खींचने के लिए बावन सौ कि.मी. की यात्रा गांधी जी की समाधि पर समाप्त हुई। यात्रा कन्याकुमारी से शुरू हुई थी।

↓ ट्रेन-२०००—यह मशीन फुटबाल खिलाड़ियों को खेलना सिखाती है। इसे बनाने वाले जॉन पियरे को अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनों में पुरस्कार दिया गया है।



↑ बर्लिन (जर्मनी) में अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन मेला। भारतीय कलाकारों द्वारा प्रस्तुत मणिपुरी नृत्य।



↑ राष्ट्रपति भवन में बाल स्कूटों और गाइडों की राष्ट्रीय रैली।

बैटरी



दुधर...
खिलौने उधर!

अब आसुगा खब मजा! जरा सोचो,
बिना बैटरी के बैटरी से चलने वाले
खिलौने मला किस काम के?
इस भलभुलैया में बैटरी को
(पेंसिल द्वारा) खिलौने से
जोड़ो. खेल के अंत में एक
शानदार ईनाम कर रहा है इलेक्ट्रॉन!



ले-एन-एन
अंडे देने वाली
मुर्गी जी
उठी!

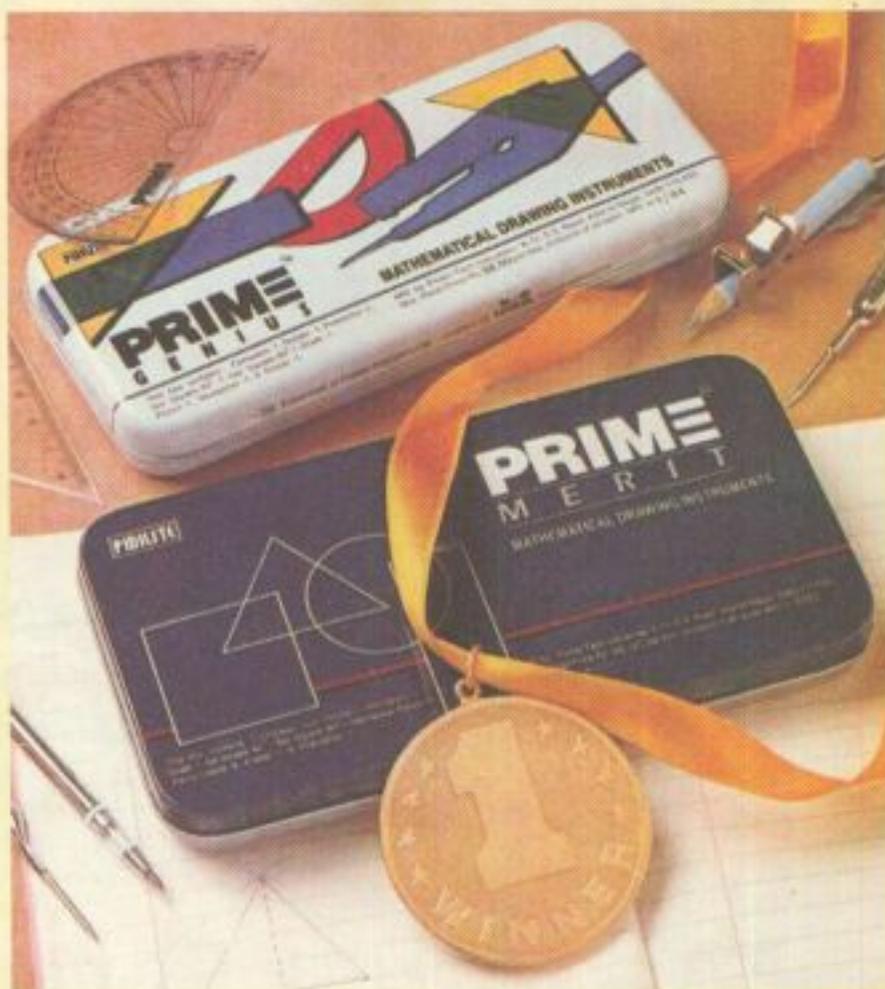
बुलेट ट्रेन
सीट धामकर बैठो, बुलेट
ट्रेन की असली तेज़
रफ्तार देखो!

गैज़ प्री
गैज़ प्री टैंक पर कारों को सरघट दौड़ाओ, अंत
मौज़ उड़ाओ!

मुबारक! सारे खिलौने चार्ज हो गए. अब प्राई शानदार ईनाम (मूलतः खेल कोटर) की
वारी... इस पत्र के काटकर इस पते पर भेजिए:-
ब्लो प्लास्ट लिमिटेड (एचएल एलएलएल),
लिफ्ट हाउस, 89-सी,
ओल्ड प्रोग्रेस रोड,
कयड - 400025.



यही है प्राइम की विजेता रेखा.



आँ जाए प्राइम जीनियस और प्राइम मेरिट. उत्कृष्ट दर्जे के कम्पास बॉक्स, सह अयूक कामगिरी, संपूर्ण विद्योन्नयन एवं उत्कृष्ट कार्यकुशलता के लिए आस तौर पर तैयार किए गए हैं.

तो दीजिए अपने बच्चों-मुर्खों को प्राइम, जिसके सहारे वो बढ़ता जाए कामयाबी की सीढ़ियाँ, और बने विजेता.

PIDILITE
PRIME GENIUS **PRIME MERIT**
 MATHEMATICAL DRAWING INSTRUMENTS
 A PIDILITE PRODUCT

स्कूल में वार्षिक छात्रों को पुर

पेडाल



उसी शाम क

मदन को ब

मुझे इनम



किस का फोन

स्कूल में वार्षिक उत्सव था। होनहार छात्रों को पुरस्कार दिए जाने थे। अचानक...

रंग में भंग...

पुलिस आई। बम नहीं मिले

पंडाल में दो बम... दस मिनट में विस्फोट...



बाप रे!

फोन की आवाज पहचानते हैं ?

किसी पर संदेह है ?

संदेह... आवाज... नहीं...

उसी शाम को

मदन की बात संच... उसी ने तो कहा था...

मुझे इनाम नहीं मिला तो किसी को नहीं लेने दूंगा...

कहीं उसी ने तो फोन...

योजना बनाकर वे तीनों...

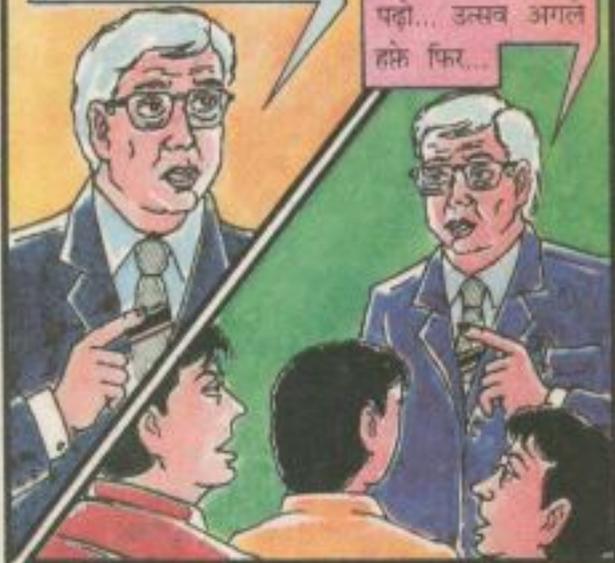
मदन, पुलिस का कहना है, वह फोन तुमने किया था।

अरे वाह, मैं क्यों करने लगा ऐसा... पुलिस जो चाहें करें...

बच्चों ने प्रधानाचार्य से बात की। किसी तरह मदन से उन्हें फोन कराया, किंतु

नहीं, नहीं, मदन की आवाज... उस फोन जैसा नहीं थी...

तुम, इस पचड़े में मत पड़ो। जाओ पढ़ो... उत्सव अगले हफ्ते फिर...



अगले हफ्ते फिर ऐसा ही हुआ, तो...

लगता है, हम समारोह कभी नहीं कर पाएंगे...

फिर कौजिए स्कूल हाल में। हम चौकसी करेंगे

काई ऐसा वैसा लगा, तो पकड़ लेंगे...

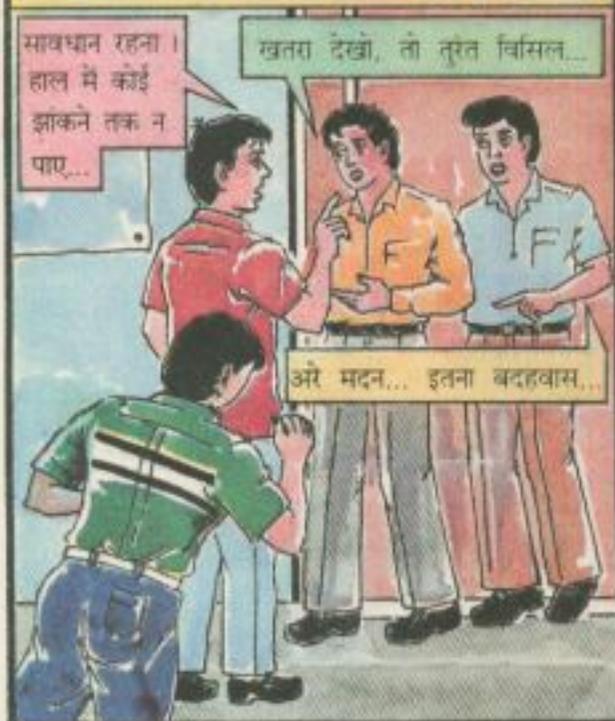


तीसरी बार उत्सव की घोषणा की गई। इस बार...

सावधान रहना। हाल में कोई झाकने तक न जाए...

खतरा देखो, तो तुरंत विमिल...

और मदन... इतना बदहवास...



मदन पास आया, तो...

वह पठान में पीछे पड़ा है। पूछे तो कह देना- इधर कोई नहीं आया...

उधरो, हाल में... उफ चला गया। तुम भी अंदर जाओ... उस पर नजर रखो...



एक मिन्ट ब

ऐ... वह छोकर जल्दी बताओ

छोकरा कौन



तुरंत पठान

ने दबोच लिये

बंद कर दो

शायद इसी ने

मम को खबर

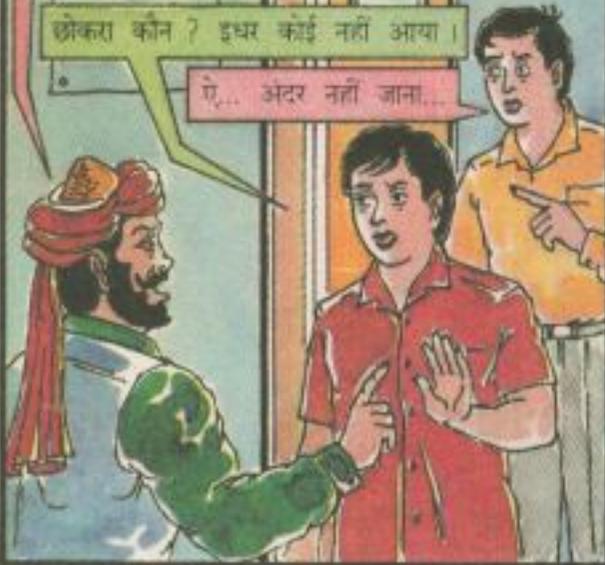


एक मिनट बाद

ऐ... वह छोकरा किदर गया... हरी कमीज जल्दी बताओ...

छोकरा कौन ? इधर कोई नहीं आया।

ऐ... अंदर नहीं जाना...



हट जा मच्छर... वरना कचुमर... दीड़ो... बचाओ...

सी 55 सी 55 सी 55

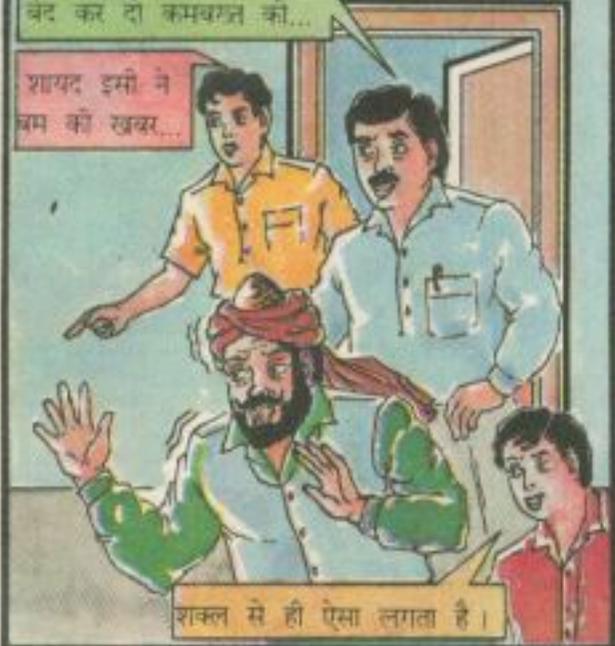
सी 55 सी 55 सी 55



तुरंत पठान को अध्यापकों और विद्यार्थियों ने दबोच लिया। एक कमरे में...

बंद कर दो कमचरन को...

शायद इसी ने बम की खबर...



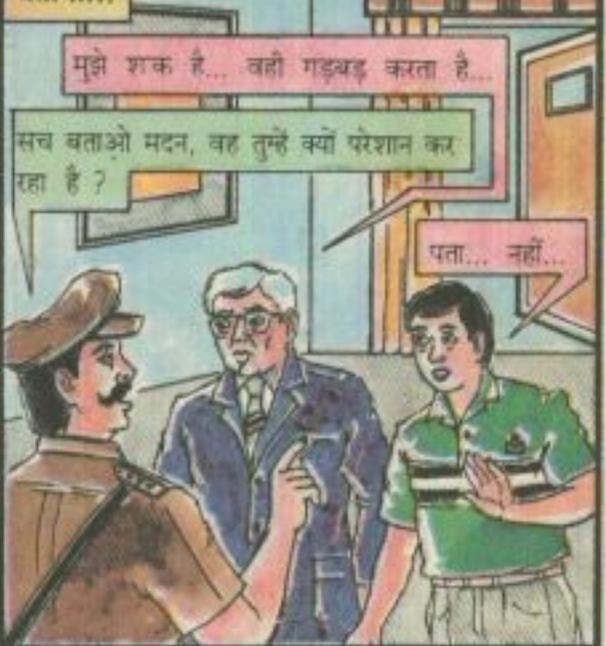
शकल से ही ऐसा लगता है।

प्रधानाचार्य डरे-सहमे मदन को ले कार्यालय में आए। पुलिस इंस्पेक्टर को बुलाकर सब कुछ बताया...

मुझे शक है... वही गड़बड़ करता है...

सच बताओ मदन, वह तुम्हें क्यों परेशान कर रहा है ?

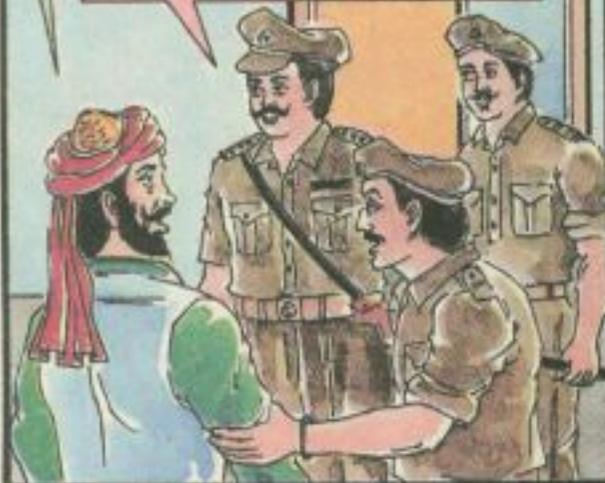
पता... नहीं...



पुलिस ने उस पठान को गिरफ्तार कर लिया ।

हमें क्यों पकड़ा साब ? हम शरीफ... नौकरी करता, पेट भरता...

थाने चलो । वहीं कहना, जो कहना हो...

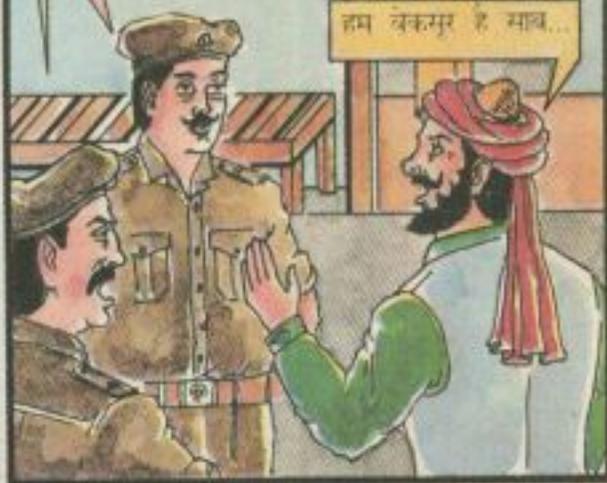


थाने में...

तुम मदन को जान में क्यों माग्ना चाहते हो ?

तुमने मना करने पर भी हाल में घुमने की कोशिश क्यों की...

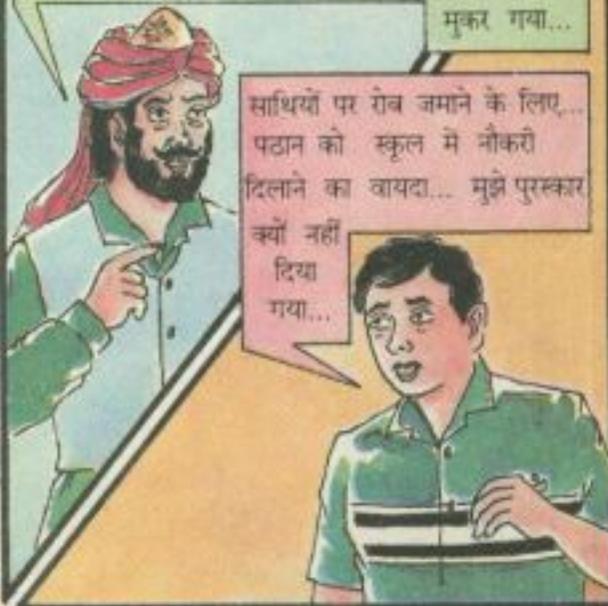
हम बंकरमूर है साब...



आखिर पठान दूट गया...

उस छोकरे ने हमें धोखा दिया । झूठ बोलकर हमसे फोन कराए—हाल में बम रखे हैं । फिर वायदे से मुकर गया...

साथियों पर रोब जमाने के लिए... पठान को स्कूल में नौकरी दिलाने का वायदा... मुझे पुरस्कार क्यों नहीं दिया गया...



और अगले दिन...

इस शैतानी के लिए तुम्हें स्कूल से निकाला जाना चाहिए... मगर एक मौका और देता हूँ । पुरस्कार योग्य काम करोगे, तभी तो...

मैं अब अच्छा बनने की कोशिश... इस बार क्षमा कर दें ।



पोट

दरसों पहले कि...
के साथ रह...
इससे उसका...
किसानों को...
करती—“मेरी...
विवाह हुआ ।
सुख नहीं दिया...
की औरतों के...
दी गई सोने के...
किशन उसे...
अच्छे दिन आ...
रही है, यह क...
है ।” कृष्णा मु...
बात को लेकर...
एक रात द...
कृष्णा किशन...
के पास पहुंच...
बोली—“वि...
दोनों परिया...
को बुलाया ।
बुनो कि कृष्...
करना छोड़ दे...
हो गई ।



पोटली में गहने

—नयनकुमार राठी

द्वारसों पहले किसी गांव में किरान अपनी पत्नी कृष्णा के साथ रहता था। थोड़ी-बहुत खेती-बाड़ी थी। इससे उसका गुजारा हो रहा था। गांव के धनी किसानों को देख, कृष्णा हमेशा उसे टोका करती—“मेरी किस्मत ही खराब थी जो तुम्हारे साथ विवाह हुआ। विवाह के बाद आज तक तुमने मुझे सुख नहीं दिया। गांव में सभी सुखी-सम्पन्न हैं। सभी की औरतों के पास डेरों गहने हैं। मेरे पास मायके से दी गई सोने की चूड़ियों के सिवाय कुछ नहीं है।”

किरान उसे समझाता—“कभी न कभी हमारे अच्छे दिन आएंगे। आज हमें दो वक्क की रोटी मिल रही है, यह क्या कम है। हम किसी के कर्जदार नहीं हैं।” कृष्णा मुंह बिचका देती। वह किसी न किसी बात को लेकर रोज उसे परेशान करती।

एक रात दो परियां उनके घर के बाहर खड़ी थीं। कृष्णा किरान को कोस रही थी। दोनों परियां परी रानी के पास पहुंचीं। सारी बात बताई। हंसते हुए वह बोली—“किरान की समस्या शीघ्र हल हो जाएगी।” दोनों परियां वहां से चली गईं। परी रानी ने स्वप्न परी को बुलाया। सारी बात बताकर बोली—“ऐसा स्वप्न बुनो कि कृष्णा ठीक हो जाए। किरान को परेशान करना छोड़ दे।” हामी भरकर स्वप्न परी वहां से रवाना हो गईं।

दूसरे दिन परी रानी के पास पहुंचकर खुश होते हुए वह बोली—“रानी जी, मैंने सपना बुन दिया है। किरान के दिन फिर आएंगे।”

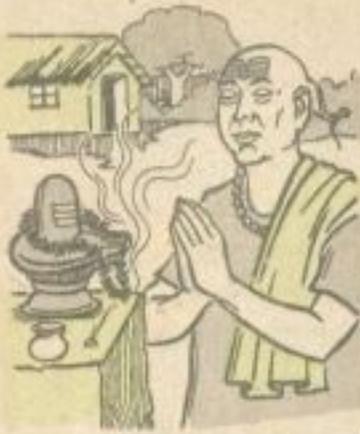
दूसरे दिन सुबह जल्दी उठकर कृष्णा ने नहा-धोकर खाना बनाया। मनुहार करके किरान को खिलाने लगी। किरान की समझ में कुछ नहीं आ रहा था। वह आश्चर्य में था। कल तक उसे दुत्कारने वाली पत्नी आज उसे किराना प्यार दे रही है। वह कुछ पूछता, इससे पहले वह बोल पड़ी—“आज सुबह मुझे बहुत प्यारा सपना आया है। हम लोगों के पास बहुत धन हो गया है। गांव के अमीरों में हम गिने जाने लगे हैं। कल तक गांव के लोग तुम्हें देख मुंह बिचका लेते थे, आज नमस्कार कर रहे हैं। गांव की औरतें भी मुझे प्यार कर रही हैं।” कहते-कहते वह हंसने लगी।

समझाने के अंदाज में किरान बोला—“सुनो, सपने की बात पर मत जाओ। सपने कभी सच नहीं होते हैं।” कृष्णा हंसते हुए बोली—“मैंने सुना है, सुबह का सपना सच ही होता है।” किरान खेत पर चला गया। दिन भर काम करता रहा।

शाम को घर लौटते हुए उसने सोचा—“अजीब सपना आया है। अगर सपने की बात पर कृष्णा अड़ी रही, तो रोज मुझे परेशान करेगी। इससे बेहतर है घर न जाऊं।” वह अनजान रास्ते पर चल पड़ा। रात होने पर एक बियाबान जंगल में पहुंच गया। चारों ओर सन्नाटा था। जंगली जानवरों की भयानक आवाजें सुनाई पड़ रही थीं।

एक जगह बैठकर मन ही मन भगवान को याद करके बोला—“हे भगवान! तुमने किस मुसीबत में डाल दिया। पहले ही परेशान हूँ, अब और ज्यादा परेशान हो गया। मेरी पत्नी को इतना सुंदर सपना क्यों दिखलाया?” अचानक शेर की आवाज सुन, डरकर वह तेजी से भागने लगा। पैर में कांटे चुभ गए। चप्पल टूट गई। फिर भी बेपरवाह होकर वह दौड़ता रहा। बहुत दूर पहुंचने पर एक झोंपड़ी के करीब पहुंचा। दरवाजा खटखटाया, एक बूढ़े ने दरवाजा खोल दिया। घबराकर उसने सारी बात बताई। रात

नंदन । जून १९९४ । ४५



मत छुओ मुझे

—उमा शर्मा

एक ब्राह्मण था। काशी से विद्या पढ़ करके आया था। गांव में उसके पास केवल एक झोंपड़ी थी। उसी के सामने एक पत्थर पर शिवजी की मूर्ति रख पूजा अर्चना करता। उसे देखकर गांव के दूसरे लोग भी वहां आरती करते थे। जल चढ़ाने लगे। धीरे-धीरे भौड़ बढ़ने लगी। पत्थर की पटिया वाला शिव मंदिर नाम से वह स्थान प्रसिद्ध हो गया। दूर-दूर के गांव वाले वहां मनौती मांगने आने लगे। पुजारी ब्राह्मण की गुजर-बसर बहुत अच्छी होने लगी। बढ़ती आमदनी को देख उसके शत्रु पैदा हो गए।

नाम का मोह

—रूपक शिष्यदर्शी

अठारहवीं शताब्दी के मध्य में दक्षिण भारत में एक संगीतज्ञ हुए। वह थे महात्मा त्यागराज। वह संगीतज्ञ होने के साथ-साथ भगवान के भक्त और समाज सुधारक भी थे।

उन्हीं दिनों त्रिभुवन स्वामीनाथ अय्यर कर्नाटक संगीत शैली के विद्वान कलाकार भी थे। वह आनंद भैरवी नामक शास्त्रीय राग को बहुत पसंद करते थे। इस राग को वह स्वयं भी बहुत अच्छा गाते थे। चारों ओर उनका नाम था। किंतु इतने से ही वह संतुष्ट न थे। वह इस राग में और अधिक प्रसिद्धि चाहते थे।

स्वामीनाथ अय्यर की अपनी संगीत मंडली भी थी। वह हमेशा उस मंडली के साथ जगह-जगह घूमते रहते। एक बार वह महात्मा त्यागराज के

नंदन। जून १९९४। ४८

उसी का एक मित्र गंगादत्त भी काशी से पढ़कर आया था। उसके कटु स्वभाव के कारण गांव वाले उससे नाराज रहते थे।

एक दिन मौका देख गंगादत्त ने अपने मित्र पर मंदिर में धोखाधड़ी करने का आरोप लगाया।

उसने कहा— “पंडित जी, मंदिर में रखी चीजें चुराकर ले जाते हैं और बेच देते हैं।” उसने कई लोगों को लालच देकर अपनी ओर मिला लिया। उन्होंने पंडित जी के खिलाफ झूठी गवाही दे दी।

इस पर पंचायत ने पुजारी को गांव से निकल जाने का फैसला सुना दिया। उस मंदिर का पुजारी गंगादत्त को बना दिया। गंगादत्त तो यहाँ चाहता था।

ब्राह्मण पुजारी को गांव छोड़ने और मंदिर छूटने का बहुत दुःख हुआ। उसने रास्ते में एक टूटा-फूटा खंडहर देखा। अपनी ज्योतिष विद्या से हिसाब लगाया। पता चला कि हजारों साल पहले यहाँ एक विशाल शक्तिपीठ थी। पुजारी वहाँ रुक गया।

गृहनगर तिरुवैयार पहुंचे। लोगों ने एक दिन स्वामीनाथ अय्यर से आनंद भैरवी राग सुनाने का आग्रह किया। लोगों के अनुरोध पर स्वामीनाथ अय्यर ने आनंद भैरवी राग सुनाया। लोग उनका संगीत सुन, झूम उठे।

श्रोताओं की भौड़ में महात्मा त्यागराज के कुछ शिष्य भी थे। वे स्वामीनाथ अय्यर का आनंद भैरवी राग का गायन सुनकर बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने महात्मा त्यागराज को इसकी सूचना दी। स्वामीनाथ अय्यर के गायन की प्रशंसा सुनकर त्यागराज को भी उनका गायन सुनने की इच्छा हुई। त्यागराज स्वयं भी इस राग के पंडित थे और कुछ रचनाएं भी इसमें की थीं। वह वेश बदलकर कार्यक्रम स्थल पर पहुंचे, ताकि उन्हें कोई पहचान न ले। स्वामीनाथ अय्यर ने गाना आरंभ किया। लोग गायन सुनने में लीन थे। वह बहुत प्रसन्न थे। त्यागराज भी उन्हें बधाई देने के लिए अधीर होने लगे।

दिन-रात मेहनत देवी की प्रतिमा को उसने जैसी आंधी-बरसात में बरसात नहीं कि यह सब चको को उस ब्राह्मण निकाला है, तो

गांव वालों का सारा भार संभाल लिया। जब से खुशहाल हो

एक दिन की तरह मंदिर यह हालत देख उसके पास ग

गंगादत्त पु माफ कर दो भ

कुछ देर किया। त्यागराज और बढ़ने ला स्वामीनाथ अय्यर उतर कर उनके

“महात्मन, मैंने अलापने की क्षमा कर दीजिए लगाया। कहा

कि तुम यहाँ गायन में कुश है।” कहते हुए के सिर पर रख

ने कहा— “य तो मैं आपसे मुसकराते हुए स्वामीनाथ

दिन-रात मेहनत करके उसने एक दिन खंडहर में दबी देवी की प्रतिमा को खोज निकला। देवी की प्रतिमा को उसने जैसे ही पहाड़ी पर रखा, तेज आंधी-बरसात शुरू हो गई। कई सालों से उस गांव में बरसात नहीं हो रही थी। गांव वालों को पता चला कि यह सब चमत्कार देवी शक्ति का है। देवी प्रतिमा को उस ब्राह्मण पुजारी ने दिन-रात खुदाई करके निकाला है, तो वे सब बहुत प्रसन्न हुए।

गांव वालों ने ब्राह्मण पुजारी को मंदिर की व्यवस्था का सारा भार सौंप दिया। चंदा करके मंदिर का निर्माण किया। जब से वह ब्राह्मण पुजारी आया था, पूरा गांव खुशहाल हो गया था।

एक दिन गंगादत्त को बहुत बुरी दशा में भिखारी की तरह मंदिर के सामने पुजारी ने देखा। गंगादत्त की यह हालत देखकर, पुजारी को बहुत दुःख हुआ। वह उसके पास गया। हाल-चाल पूछने लगा।

गंगादत्त पुजारी से माफी मांगने लगा— "मुझे माफ कर दो भाई, मैं बहुत बड़ा पापी हूँ। मैंने तुम्हारे

ऊपर झूठे आरोप लगाए थे। उसी की सजा भुगत रहा हूँ।"

— "तुम तो शिवालय के पुजारी बन गए थे, फिर यह दशा।"

"तुम्हारे जाने के बाद मैं मंदिर में मन-चाही करने लगा था— गांव वालों को अधिक से अधिक चढ़ावा चढ़ाने के लिए मजबूर करता। धीरे-धीरे मैं योगी से भोगी बन गया। एक दिन देखा, शिवलिंग गायब है। वह धीरे-धीरे धरती में समाता जा रहा था। जैसे ही मैंने उसे पकड़ने के लिए हाथ बढ़ाया, आवाज आई— "मुझे मत छू पापी। तू आज से इस लायक नहीं रहेगा जो किसी मूर्ति को छू सके। और तब से ही मेरे हाथ..."— कहकर वह घेने लगा।

ब्राह्मण पुजारी को उस पर दया आ गई। उसने गंगादत्त को अपने साथ रख लिया। ब्राह्मण पुजारी की संगत में रहकर दुष्ट गंगादत्त का स्वभाव बदल गया।

कुछ देर बाद स्वामीनाथ अय्यर ने गायन बंद किया। त्यागराज स्वयं को रोक न सके। वह मंच की ओर बढ़ने लगे। त्यागराज को अपनी ओर आता देख स्वामीनाथ अय्यर ने उन्हें पहचान लिया। वह मंच से उतर कर उनके चरणों में बैठ गए। वह बोले— "महात्मन, मैंने आपकी उपस्थिति में आनंद भैरवी राग अलापने की धृष्टता की है। इसके लिए आप मुझे क्षमा कर दीजिए।" त्यागराज ने उन्हें उठाकर गले लगाया। कहा— "मुझे अपने शिष्यों से पता चला कि तुम यहाँ आए हुए हो। तुम आनंद भैरवी राग के गायन में कुशल हो। मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है।" कहते हुए उन्होंने अपना हाथ स्वामीनाथ अय्यर के सिर पर रख दिया। यह सुनकर स्वामीनाथ अय्यर ने कहा— "यदि आप मेरे गायन से सचमुच प्रसन्न हैं तो मैं आपसे कुछ मांगना चाहता हूँ।" त्यागराज ने मुसकराते हुए कहा— "अपनी इच्छा बताओ।"

स्वामीनाथ अय्यर ने कहा— "मैं चाहता हूँ कि

आज के बाद आप आनंद भैरवी में कोई नई रचना नहीं करेंगे। न ही इस राग की शिक्षा किसी को देंगे। अब तक आपने आनंद भैरवी राग में तीन ही रचनाएं की हैं। अब भविष्य में लोग यह पूछेंगे कि त्यागराज जैसे विद्वान ने आनंद भैरवी राग में तीन ही रचनाएं क्यों की? तब इसके उत्तर में लोग आज की इस घटना को याद करेंगे। इस प्रकार आपके नाम के साथ मेरा भी नाम हमेशा के लिए जुड़ जाएगा।"

स्वामीनाथ अय्यर की बात सुनकर लोग स्तब्ध रह गए। कुछ लोगों ने स्वामीनाथ अय्यर को बुरा-भला कहा। त्यागराज के शिष्य भी उत्तेजित होने लगे। पर महात्मा त्यागराज ने लोगों से शांत रहने को कहा। "मैं अब वहीं करूंगा जैसा स्वामीनाथ अय्यर ने कहा है।"—इतना कहकर त्यागराज वहाँ से चले गए।

कहा जाता है कि उस दिन के बाद महात्मा त्यागराज ने न तो किसी शिष्य को आनंद भैरवी राग सिखाया और न ही इसमें कोई रचना की।

गौरैया का उपहार

—मुदला हालन

छोटी गुड़िया-सो पायल स्कूल से लौटी, तो वह धक गई थी। भूख भी लगी हुई थी। घर में घुसते ही मां ने पूछा— "पायल, आज स्कूल में तुमने क्या पढ़ा?"

"ओह मां! यह सवाल बाद में। हमें भूख लगी है।"— पायल दुनकी।

थोड़ी देर बाद पायल मां के हाथ से खाना खा रही थी। साथ में वह स्कूल की बातें भी मां को सुना रही थी।

मां ने कहा— "बातों से ही पेट भर लेगी। कुछ खा भी तो सही।"

"बस मां! पेट भर गया।"— कहते हुए पायल ने मुंह पर हाथ रख लिया।

— "अजीब लड़की है। अभी भूख-भूख चिल्ला रही थी। एक कड़ली भात खाने से ही पेट भर गया। ऐसे आधा पेट खाने से भला काम चलेगा?"

पायल बोली— "मेरा पेट क्या रामू काका का थैला है, जितना चाहो, टूस-टूस कर थैले में भर लो?"

रामू कबाड़ी था। हर महीने वह मां से अखबार, शीशी, डिब्बे, प्लास्टिक आदि ले जाता था। पायल उससे कहती— "जो मिलता है, इसी थैले में टूस लेते हो रामू काका!"

पायल उठ गई, लेकिन जूठा भात तो नाली में नहीं फेंका जा सकता था। मां ने कुछ सोचा। फिर रसोई की खिड़की खोलकर, बाहर निकले एक पत्थर पर भात रख दिया।

सहसा मां चीं...चीं...की आवाज सुन चौंक उठी। गर्दन घुमाकर देखा, तो मुसकराई। दो छोटी-छोटी गौरैया वही भात खा रही थीं। "इन्हें कैसे पता लग गया कि यहाँ खाने को मिल जाएगा?"— मां ने सोचा।

रसोई में खाना बनता है। सब खाते हैं। पर भूख नंदन। जून १९९४। ५०



ही तो है। कभी किसी ने कम खाया, कभी ज्यादा खाया। हर दिन कुछ न कुछ तो थाली में बच ही जाता था। अब मां को सोचना नहीं पड़ता था कि वह बचे भोजन का क्या करे? खिड़की खोली और भोजन पत्थर पर रख दिया।

अब मां रसोई में काम करती तो, देखती गौरैया पत्थर पर फुदक रही हैं। पास खड़ी पायल कह उठती— "मां, इनको कुछ खाने को दो। अरे! कुछ भी दे दो। इन्हें भूख लगी होगी।"

और मां कभी रोटी, कभी आटा, बिसकुट, डबलरोटी कुछ न कुछ वहाँ जरूर रख देती। खुशी से फुदक-फुदक कर जब गौरैया खाना खाती, तो मां और पायल दोनों मुसकरा उठतीं।

"अरे! यह क्या कर रही है।"— मां ने एक दिन पायल को टोका।

"देखो मां! गौरैया को खाने के बाद प्यास भी तो लगती होगी। मैं यह बात भी भूल गई। मां तुमने भी यह याद नहीं दिलाया। अब मैं इस प्याले में पानी रख देती हूँ।"

'हे भगवान! यह पायल तो मुझे किसी दिन पागल कर देगी।'— उसकी मां ने सोचा।

हुआ यह था कि पायल चाय के मंहगे सैट के

एक प्याले में खैर! अब हॉटल टूटा हुआ सुबह-शाम प्या

जो खाना-पै उसके अनेक कौआ आदि स पायल को वे क मोटे ताजे कवृत्त खाने चले आते छोटी-छोटी गौर नहीं है।"—

मां और बेटे खिड़की खुली आंखें घुमा-घुमा पायल को नजदी थीं। पर अब

पायल कभी आतीं, चहककर उड़कर उसके ह खातीं और उड़ बहुत दिनों त



एक प्याले में पानी रख रही थी।

खैर ! अब पक्षियों के पानी पीने के लिए एक हैंडिल टूटा हुआ प्याला ढूँढ़ लिया गया। पायल सुबह-शाम प्याले में पानी भर देती।

जो खाना-पीना गौरिया से शुरू हुआ था, इधर उसके अनेक भागीदार बन गए थे। कबूतर, मुर्गा, कौआ आदि सभी खाने की टोह में वहां आ जाते। पायल को वे कतई नहीं सुहाते। "देखो तो मां ! इन मोटे ताजे कबूतरों और कौओं को, यहां मुझ का खाना खाने चले आते हैं। उफ ! यह भी नहीं सोचते कि इन छोटी-छोटी गौरियों का खाना छीन लेना अच्छी बात नहीं है।" — फिर वह उनको वहां से भगा देती।

मां और बेटी की गौरिया से दोस्ती हो चली थी। खिड़की खुली पाकर गौरिया रसोई में चली आतीं। आंखें धुमा-धुमा कर इधर-उधर ताकतीं। शुरू में तो पायल को नजदीक आते देख गौरिया फुर्र से उड़ जाती थीं। पर अब सब दोस्त बन गए थे।

पायल कभी हथेली पर चुग्गा रख लेती। गौरिया आतीं, चहककर पायल की तरफ देखतीं। फिर फुर्र से उड़कर उसके हाथ पर आ बैठतीं। एक-एक दाना खातीं और उड़ जातीं।

बहुत दिनों तक गौरिया को खाना खिला-खिलाकर



मां ने उनके बारे में बहुत कुछ जान लिया था। उन्हें केक बहुत पसंद था। उसके बाद बिसकुट, दाल या चावल का दाना। मां कहतीं— "गौरिया भी आधुनिक हो गई हैं। केक का स्वाद जुबान पर चढ़ गया है।"

कुछ दिन ऐसे ही बीत गए। फिर आया पायल का जन्मदिन। मां ने पायल के सभी मित्रों को बुलावा भेज दिया। पायल के लिए सफेद लेस की फूलों-फूली, गुड़िया-जैसी फ्राँक खरीदी गई। बालों में सफेद रिबन का फूल टांका गया। सब मित्र आए। गाना-बजाना हुआ। पायल को अनेक उपहार मिले।

पर आज पायल अपनी गौरिया को भूल गई थी। सुबह से उन्हें दाना-पानी नहीं मिला था।

बच्चों का खेल खत्म हुआ। मां ने आवाज दी— "पायल, केक काटो अब।"

सब बच्चे मेज के चारों ओर घेरा बनाकर खड़े हो गए। पायल ने 'हेप्पी बर्थडे टू यू' गाने के शोर में केक काटा। मां ने केक का एक टुकड़ा पायल के मुँह की ओर बढ़ाया। बोलतीं— "पायल को केक बहुत अच्छा लगता है।" यह सुनते ही पायल चौंकी।

"क्या हुआ पायल?"—मां ने पूछा।

"मुझे थोड़ा केक और दो मां। तुम्हें तो पता है गौरिया को केक बहुत अच्छा लगता है। मैंने आज सुबह से उसे कुछ भी नहीं खिलाया।"— हाथ में केक का टुकड़ा लेकर कहते हुए वह तेजी से रसोई में जा पहुंची।

"मां!"— पायल जोर से चीखी।

— "क्या हुआ बेटी?" कहती हुई मां पायल के मित्रों के साथ वहां आ पहुंचीं।

— "मां देखो ! आज गौरिया भी मेरे लिए उपहार लाई हैं।"

मां ने देखा— उन गौरियों के साथ उनका नन्हा बच्चा भी फुदक रहा था।

पायल ने खिड़की खोली, तो फुदककर गौरिया उसके कंधों पर आ बैठी।

बच्चों ने तालियां बजा दीं। वे बहुत प्रसन्न थे। ●



□ एक आदमी— डाक्टर साहब, मुझे स्वास्थ्य प्रमाणपत्र चाहिए।

डाक्टर— ठीक है, कल आना। क्योंकि आज मेरा ही स्वास्थ्य ठीक नहीं है।

□ मोहन— यदि मैं ड्राइवर बन जाऊँ, तो...

सोहन— डाक्टरों की आमदनी बढ़ जाएगी।

□ हलवाई— वाह साहब! आपको कैसे मालूम कि जलेबियाँ कम मीठी हैं?

ग्राहक— क्योंकि इन पर कम मक्खियाँ भिनभिना रही हैं।

□ डाक्टर— ओरे भाई, जब तुम यहाँ आए थे तब तुमने पेट में दर्द बताया था। पर अब सिर में दर्द बता रहे हो।

रोगी— हाँ, डाक्टर साहब। यदि थोड़ी देर और आपकी बातें सुनता रहा, तो बुखार भी हो सकता है।

□ एक खिलाड़ी— तुम बड़े सुस्त खिलाड़ी हो। मुझे देखो, मैं कैसे खेलता हूँ?

दूसरा खिलाड़ी— तभी तो शरीर पर जगह-जगह पट्टियाँ बंधी हैं।

□ एक आदमी— डाक्टर साहब, मेरे बबलू के कान कुछ छोटे हैं, क्या करूँ?

डाक्टर— स्कूल भेज दो, मास्टर साहब रोज उसके कान खींचकर बड़े कर देंगे।

□ एक मुर्गा— आज कल तुम सुबह बाँग भी नहीं देते, बहुत आलसी हो गए हो।

दूसरा मुर्गा— आलसी मैं नहीं, मेरा मालिक हो गया है। वह समय से घड़ी में अलार्म ही नहीं लगाता।

□ पर्यटक— कुछ ऐसी चीज लाओ कि तबियत हरी हो जाए।

होटल मैनेजर— बैरा, साहब को होटल के पीछे लान में ले जाओ। वहाँ हरियाली बहुत है।

नंदन। जून १९९४। ५२

□ ज्योतिषी (गुस्से से)—तुम अगले जन्म में कंदर बनोगे।

एक आदमी— कोई बात नहीं, मैं फल तोड़कर आपको खिलाया करूँगा। अब तो आप खुरा हो जाइए।

□ अध्यापक— सोनू, तुम्हारे पिता इतने बड़े डाक्टर कैसे हो गए?

सोनू— क्योंकि अक्सर वह मरीज को दवा देने से पहले खुद उस दवा को चखकर देखते हैं।

□ नौकर— मालिक, मैंने आपकी बहुत सेवा की। देखिए, मेरे काले बाल सफेद हो गए।

मालिक— लेकिन मेरे तो सारे बाल ही उड़ गए।

□ दारोगा— तुम माफ़ी माँग लो, जेल से छुट्टी मिल जाएगी।

चोर— आपसे या जिसके यहाँ चोरी की है, उससे माफ़ी माँगूँ।

□ एक श्रोता— तुम जोर-जोर से ताली क्यों बजा रहे हो?

दूसरा श्रोता— क्या करूँ, यहाँ के मच्छर बहरे हैं। धीरे बजाता हूँ, तो ये सुनते ही नहीं।

□ अध्यापक— मोहन, तुम्हारा रुमाल इतना गंदा क्यों है?

मोहन— सर, भूल से मैं आज सोनू का रुमाल ले आया हूँ।

□ माँ— बेटा, तुम जान-बूझकर इतनी गलतियाँ क्यों करते हो?

बेटा— क्योंकि अनजाने में तो इससे भी ज्यादा गलतियाँ हो जाती हैं।

□ कवि— आज के कवि सम्मेलन में बहुत भौड़ है।

आयोजक— हाँ, क्योंकि श्रोताओं को बताया गया था कि इस बार आप नहीं आएंगे।

□ पिता— बेटा, तुम्हें जब खर्च के लिए कितने रुपए चाहिए।

बेटा— बिना रुपए खर्च किए भला मैं यह कैसे बता सकता हूँ।

दरवा
को

घुटने
बड़ा-
अपने
मुख



एक
से बो

जिस
हंसी
सुनी



तेनालीराम

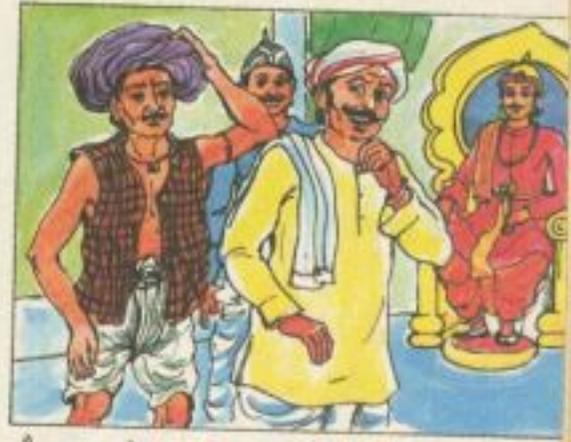
३१४

पगड़ में कागज

राजा कृष्णदेव राय सप्ताह में एक दिन आम दरबार लगाते थे। उसमें कोई भी व्यक्ति आकर राजा को अपनी परेशानी बता सकता था।

एक दिन दरबार में एक बूढ़ा देहाती आया। घुटनों तक की धोती। बिना बांह की बंडी। सिर पर बड़ा-सा पगड़। पैरों में फटी जूतियां। आते ही वह अपने पगड़ को टटोलने लगा। उसकी विचित्र वेशभूषा और हरकत देख दरबारी मुसकराने लगे। देहाती उन्हें मुसकराता देख बिना कुछ कहे लौट गया।

सारा दरबार सन्न। यह तो एकदम अपमान था। मंत्री ने कहा—“ऐसे बेहूदा व्यक्ति को दंड दिया जाना चाहिए।”



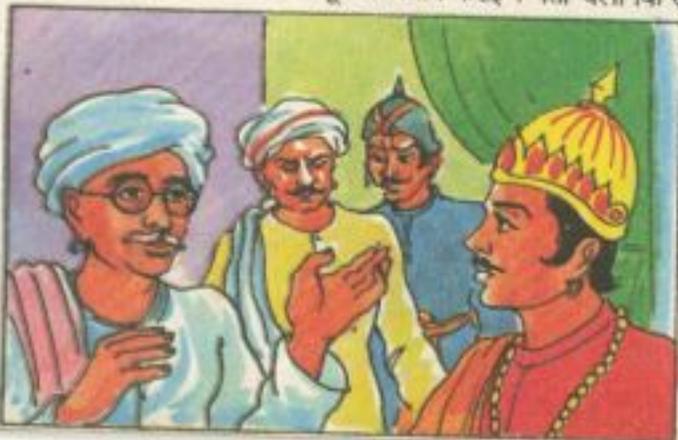
देहाती की तलाशी ली गई। उसके पगड़ से एक कागज निकला। राजा ने उसे पढ़ा, तो देहाती से बोले—“ऐसा था तो तुम चुपचाप क्यों जाने लगे !”

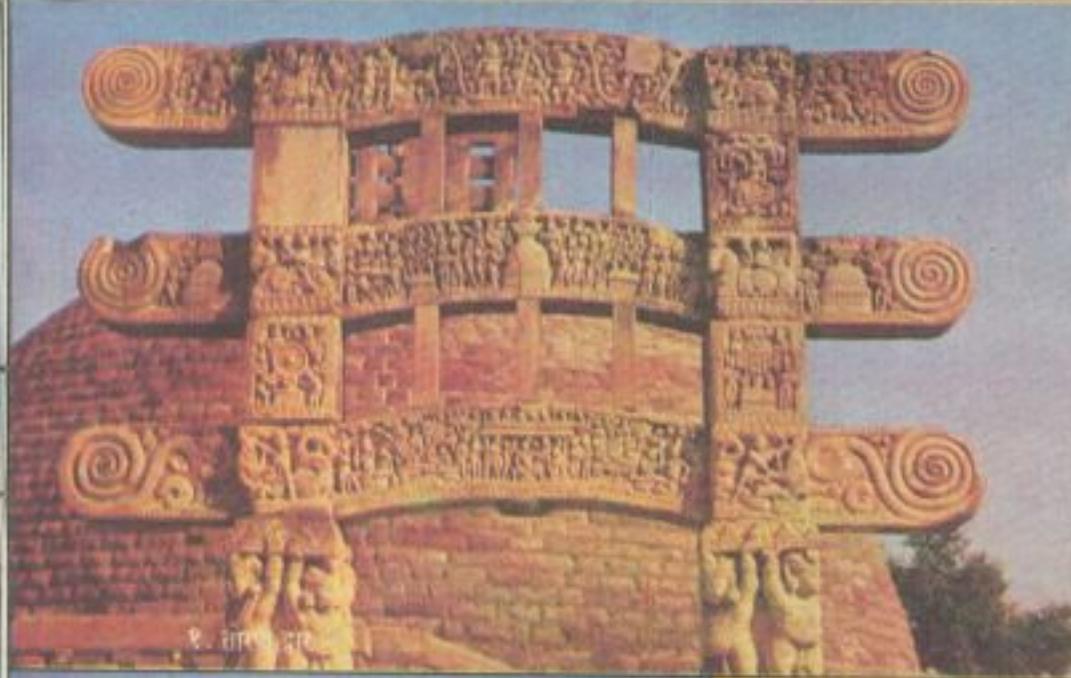
देहाती हाथ जोड़कर बोला—“महाराज, जिसका अन्न खाते हैं, आपके सामने सब उसी की हंसी उड़ाने लगे। मैंने सोचा कि मेरी बात यहां भी नहीं सुनी जाएगी। इसीलिए वापस जा रहा था।”

राजा ने पूरी छानबीन कराई। पता चला कि राज्य के कारिंदे लगान वसूली के लिए किसानों पर अत्याचार करते थे।

मुंह खोलने पर दंड की धमकी देते थे। व्यवस्था में सुधार का आदेश दे, राजा ने तेनालीराम से पूछा—“तुम्हें कैसे पता चला कि देहाती ने पगड़ में कुछ छिपा रखा है ?”

“उसके व्यवहार से।”—तेनालीराम बोला—“वह परेशान-सा टटोल रहा था राजन् ! किसी पर इस तरह हंसना बुद्धिमानी नहीं।”





चित्र : देववत बनजों,
तिरिमिर दत्त

कहें कहानी नई पुरानी



जगद्गुरु शंकराचार्य, महात्मा बुद्ध और महात्मा गांधी— मानवता का पाठ पढ़ाने वाले युगपुरुष । संस्कृति और धर्म की कथा कहते तीन स्मारक ।

१. सांची (मध्य प्रदेश) : प्राचीन बौद्ध तीर्थ ।

यहां अशोक का बनवाया हुआ सांची स्तूप है ।

२. कांचीपुरम् (तमिलनाडु) : प्राचीन मंदिरों और ज्ञान का केंद्र । शंकराचार्य की लीलाभूमि ।

३. कन्याकुमारी : भारत के धुर दक्षिण में ।



मंदिर । जून १९९४ । ५५

व ह श क्ति जि स ने मी ना को ब ना या

कॅमल चैम्प

प्यारे दोस्तो,

आज स्कूल में पेंटिंग प्रतियोगिता का फर्स्ट प्राइज़ मुझे मिला. और जलनेवालों ने हमेशा की तरह सोचा कि किसी अदृश्य शक्ति ने मुझे जिताया है. उन्हें क्या मालूम मेरी असली शक्ति है मेरा प्यारा कॅमल फॅन्टसी वॉटर कलर बॉक्स. मेरे कॅमल फॅन्टसी वॉटर कलर ही तो मेरी

पेंटिंग में जगमगाते, खिलखिलाते,

इंद्रधनुषी रंग भरकर उसे बिल्कुल

जीता-जागता बना देते हैं. स्कूल में

मेरी पेंटिंग ने खूब रंग जमा रखा है.

इसीलिए पापा सोचते हैं मैं बड़ी होकर

हुसैन साहब जैसी महान चित्रकार बनूंगी.

आखिर कॅमल चैम्प हूँ न मैं.

इसके लिए शाबासी मिलनी चाहिए

कॅमल फॅन्टसी वॉटर कलर्स को.

तुम्हारी दोस्त,

मीना.



कॅमल

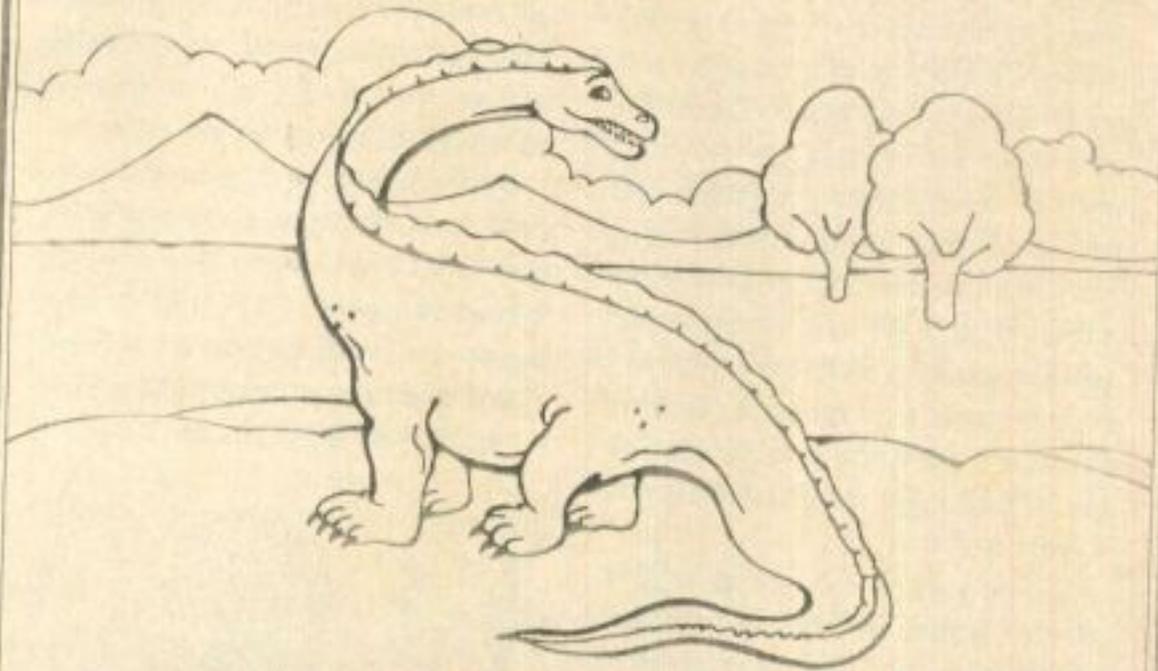
वि जे ता रं ग अ प ना ओ. कॅ म ल चै म्प ब न जा ओ.

कॅमल लिमिटेड, आर्ट मटीरियल डिपार्टमेंट, जे.पी. नगर, अहमदाबाद (गुजरात), पिन 380 014.

कॅमल लि
बस, कॅमल
कॅमल के
आकर्षक पुर
पैक (100 र
200 बेहत
है. कॅमल लि
क
ज का या
कून
किस ल डिपि
करी है. • कू
करी है. • कू
करी है. • कू
करी है. • कू
करी है. • कू

कैमल चैम्प

प्रतियोगिता



कैमल विजेता बनने और आकर्षक पुरस्कार जीतने की आपको है चाह तो उसकी राह है बहुत आसान। बस, कैमल के अनेक प्रकार के इन्धधनुषी रंगों की छटा से रंग दीजिए इस चित्र को रंगों की अपनी सजीली कल्पना से। अपने मन के मूर्खक आप कैमल के क्रायोन पेन्स, क्रायन्स ज़ायालस, अयिल पेस्टल्स, वाटर कलर या पोस्टर कलर्स का इस्तेमाल कर सकते हैं। जीतने के लिए है ढेर खारे आकर्षक पुरस्कार **पहला पुरस्कार** कैमल बम्पर मैगसी पैक (150 रु. मूल्य के कैमल के विभिन्न उत्पाद) **दूसरा पुरस्कार** कैमल मिडी पैक (100 रु. मूल्य के कैमल के विभिन्न उत्पाद) **तीसरा पुरस्कार** कैमल मिनी पैक (75 रु. मूल्य के कैमल के विभिन्न उत्पाद) इसके अलावा **200 बेहतरीन रंगीन पुरस्कार** - "आई एम ए कैमल चैम्प" 2- डी स्टिकर मुफ्त।

ह, मैं कैमल विजेता बनना चाहता हूँ, रंगों से भरपूर चित्र बनाने से।

नाम _____ उम्र _____ वर्ष, सड़क/गाँव/काली (कृपया विवरण भरना)

पता _____

मूल्य _____

विषय एवं विधियाँ: • जेता मुक्त रंगों, क्रायोन या कोई अन्य उपयुक्त रंगों। • इस प्रतियोगिता में 15 दिन की उम्र के बच्चे ही भाग ले सकते हैं। • पूरी तरह से साफ़ एवं चुरा चित्र को भेजना चाहिए। • जेता रंगों के रूप में इस चित्र की फोटोकॉपी का इस्तेमाल किया जा सकता है। • कैमल लि. और इन्टरनेट विज़न द्वारा एक-एक करके प्र. लि. के सर्वश्रेष्ठों के साथ इस प्रतियोगिता में भाग नहीं ले सकते। • प्रतियोगिता इस विभाग के इकायन के माध्यम से संचालित होने के 15 दिनों के अंदर कैमल लि. पोस्ट बॉक्स नं. 37488, जे. बी. नगर, अंधोरी (पु.) बम्बई-400 059, को भेजें। विजेताओं को इनाम से सूचित किया जाएगा। पुरस्कार भेजने के लिए चार सप्ताह तक इंतजार करने की कृपया करें। विजेताओं को निर्दिष्ट स्थान और समय पर इनाम प्राप्त करना होगा। इनाम इस कृपया को कैमल असेंबली में ही रहे।



कैमल
सफलता के रंग

कैमल लिमिटेड, आर्ट मॉटेरियल डिविजन, जे. बी. नगर, अंधोरी (पूर्व), बम्बई-400 059.

पुतले की लाठी

—विनोद पंत

बहुत पुरानी बात है। हिमालय की घाटियों में गरुड़ गंगा के किनारे एक गरीब किसान सगतसिंह, अपने बेटे हरू के साथ रहता था। नदी के पास सगतसिंह की थोड़ी-सी भूमि थी। यद्यपि सगतसिंह मेहनती और ईमानदार था, किंतु थोड़ी-सी भूमि होने से वह अपने लिए साल भर का अन्न भी नहीं जुटा पाता था। किसी तरह दिन कट रहे थे। खेतों के काम से निबटकर दोनों या तो जंगली फल और सब्जी ढूँढ़कर लाते या बरसात में नदी द्वारा बहाकर लाई लकड़ियाँ चुनते फिरते। कभी-कभार नदी से मछलियाँ भी पकड़ लाते। गरुड़ गंगा के किनारे दूर-दूर तक न तो कोई दूसरे खेत थे और न कोई गाँव। हरू वहाँ बिलकुल अकेला था। उसकी माँ बचपन में ही चल बसी थी। हरू के लिए उसके पिता ही सब कुछ थे। किसी दूसरे को उसने कभी ठीक से जाना ही नहीं था। अभी हरू आठ वर्ष का ही था, फिर भी वह अपने पिता के कामों में भरपूर मदद करता था।

एक बार कुमाऊँ के राजा भूदेव को आखेट से लौटते हुए सगतसिंह की झोंपड़ी में विश्राम करना पड़ा। सगतसिंह ने मोटे अनाज मडुवा और जंगली सब्जी कैरू से राजा का सत्कार किया। उस के विनम्र स्वभाव और अतिथि सत्कार से राजा भूदेव अत्यधिक प्रभावित हुए। उसकी विपन्नता देख, राजा ने नदी के किनारे की बहुत सारी भूमि सगतसिंह को इनाम में दे दी।

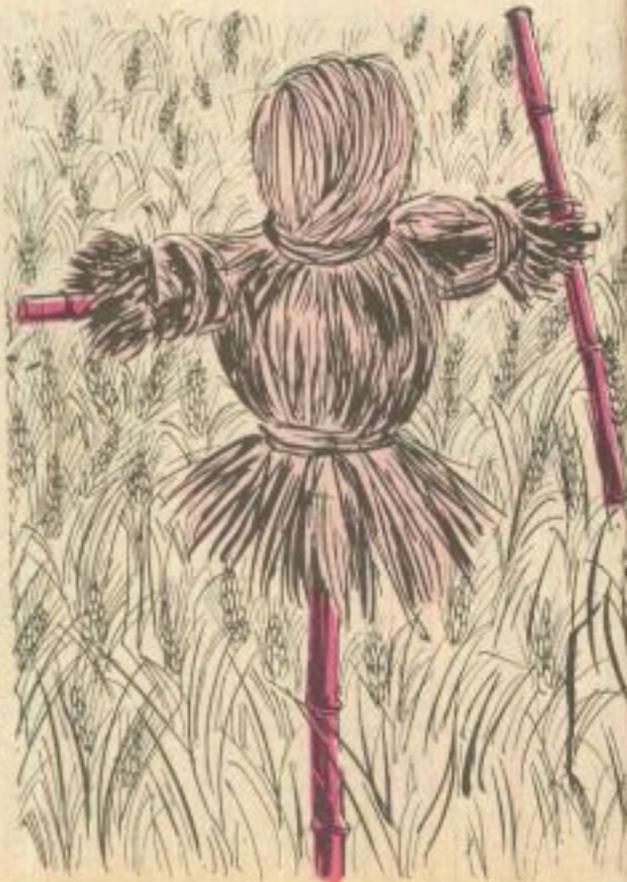
सगतसिंह भूमि पाकर उत्साहित हो उठा। उसने खूब परिश्रम किया। थोड़े ही समय में उसकी मेहनत रंग लाई। उसके खेत लहलहा उठे। भरपूर फसल होने लगी। लेकिन अब उसे दूर-दूर तक फैले खेतों की देखभाल की समस्या सताने लगी। यदि वह दिन में खेतों की रखवाली करता, तो रात को जंगली जानवर आकर उत्पात मचाते। अगर रात को जागता, तो दिन में हिमालय की बर्फीली पहाड़ियों से ढेर सारे पक्षी

नंदन । जून १९९४ । ५८

आकर खेत चुग जाते। अंत में सगतसिंह ने बहुत सोच-विचार कर खेतों के बीच घासफूस का एक पुतला बनाया। नाम दिया भेसौण। भेसौण के हाथ में एक लाठी भी थमा दी। तत्काल प्रभाव पड़ा। भेसौण के डर से पक्षियों ने खेत चुगने बंद कर दिए।

हरू को भी खेल का एक साधन मिल गया। पिता की अनुपस्थिति में वह भेसौण के पास बैठकर उससे बातें करता। कल्पना की ऊँची उड़ान भरता। भले ही भेसौण उसकी बातों का उत्तर नहीं देता था, पर हरू को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था। वह भेसौण की देखभाल वैसे ही करता था, जैसे कोई खिलौना हो।

एक दिन, साँझ के झुटपुटे में सगतसिंह अनाज बेचकर हाट से लौट रहा था। उसने जंगल में एक युवती को रोते देखा। सगतसिंह ने युवती के पास जाकर रोने का कारण पूछा। युवती ने रोते हुए बताया कि उसके माता-पिता की मृत्यु हो गई है। चाचा-चाची ने उसकी सम्पत्ति हड़प कर, उसे घर से निकाल दिया है। वह पिछले कई दिनों से इधर-उधर भटकती फिर



रही है। युवती का हृदय भर आया उससे विवाह कर

वास्तव में वह जिसके बुरे स्वभाव को निकाल दिया गया अपनी अलौकिक अपनी दुष्ट स्वभाव विवाह कर, वह आँख नहीं सुहाए स्वतंत्रता से इस पाएगी। सगतसिंह प्यार करने का डे की रखवाली के भेज देती। दो पकवान बनाकर

पिता की अनुपस्थिति में रहता था। दिन उसे डर लग अजीब-अजीब घर आ जाता, तो भेज देती। हरू आकर बैठ जाते

रही है। युवती की कथा सुनकर, नेक सगतसिंह का हृदय भर आया। वह उसे अपने घर ले आया और उससे विवाह कर लिया।

वास्तव में वह युवती एक दुष्ट परी चांचरी थी। जिसके बुरे स्वभाव के कारण उसे चांचरी लोक से निकाल दिया गया था। परी चांचरी धरती पर आकर अपनी अलौकिक शक्तियाँ खो बैठी थी, पर उसने अपना दुष्ट स्वभाव नहीं छोड़ा था। सगतसिंह से विवाह कर, वह फुली नहीं समाई, किंतु हरू उसे फूटी आंख नहीं सुहाया। उसे लगा हरू के रहते वह पूरी स्वतंत्रता से इस धन-दौलत का उपयोग नहीं कर पाएगी। सगतसिंह के सामने वह हरू से बहुत प्यार करने का ढोंग करती। उसके बाहर जाते ही खेतों की रखवाली के बहाने हरू को रूखा-सूखा खिलाकर भेज देती। दोनों की अनुपस्थिति में वह मनमाने पकवान बनाकर खाती रहती थी।

पिता की अनुपस्थिति में हरू रात-दिन खेतों में पड़ा रहता था। दिन तो किसी तरह कट जाता, पर रात में उसे डर लगता था। जंगली जानवरों की अजीब-अजीब आवाजों से भयभीत होकर, अगर वह घर आ जाता, तो चांचरी उसे डांटती। दोबारा खेतों में भेज देती। हरू रोता हुआ फिर पुतले भेसौण के पास आकर बैठ जाता। उसे अब केवल भेसौण का ही

सहारा रह गया था। वह भेसौण के हाथ की लाठी पकड़कर कल्पना की दुनिया में खो जाता।

एक दिन सगतसिंह की अनुपस्थिति में दुष्ट चांचरी ने उसे फिर खेतों की रखवाली के लिए भेज दिया। स्वयं अपने लिए नए-नए व्यंजन बनाने बैठ गई। सर्दों का मौसम था। रुई के फाहों जैसी बर्फ गिर रही थी। हरू ठंड से कंपता, रोता हुआ भेसौण के पास आकर बैठ गया। उसने कातर आंखों से भेसौण की ओर देखा — 'काश यह लम्बा-चौड़ा पुतला जीवित होता और अपने छाया में लेकर मुझे सर्दों से बचा लेता।' हरू ने सोचा। ठीक उसी समय आकाश मार्ग से परी चांचरियाँ हिमालय की एकांत ढलानों पर फिसलने का खेल खेलने निकलीं। छोटे-से हरू को सर्दों से टिढ़ुरते देख, उन्हें दया आ गई। वे यह भी जान गई कि हरू को सताने में दुष्ट चांचरी का हाथ है। बस देखते ही देखते चांचरियों की रानी ने अपनी जादुई छड़ी घुमा दी।

'हरू डर मत। मैं जाग गया हूँ।' — किसी ने मिसकते हुए हरू के कान के पास मधुर आवाज में कहा।

हरू ने इधर-उधर देखा। उसकी समझ में नहीं आया कि इस अंधेरी और बर्फीली रात में इतने प्यार से पुकार कर साहस बढ़ाने वाला कौन है? अचानक भेसौण पुतले की अपनी ओर झुककर शरीर ढांपते देख, वह चकित रह गया। 'तो क्या भेसौण सचमुच जीवित हो गया है। पर कैसे।' — उसने सोचा।

'हां हरू, परी चांचरियों की कृपा से मुझ में प्राण आ गए हैं। अब तू किसी प्रकार की चिंता मत कर।' भेसौण ने हसते हुए धीरे से कहा।

रात भर भेसौण और हरू खेतों की रखवाली करते, खेलते रहे। भेसौण ने अपनी करामती लाठी के प्रभाव से स्वादिष्ट भोजन निकालकर, उसे खिलाया। दिन निकलने से पहले ही भेसौण ने हरू को रात में मिलने का विश्वास दिलाते हुए, घर की ओर भेज दिया। स्वयं फिर पुतला बनकर खड़ा हो गया।

अब यह क्रम प्रतिदिन चलने लगा। रात को हरू



के आते ही भेसौण जाग जाता। दोनों खूब खेलते। स्वादिष्ट व्यंजन खाते। सुबह होते ही भेसौण फिर अपने पुराने रूप में आ जाता।

दुष्ट चांचरी हरू में आने वाले परिवर्तन को देखकर चींक उठी। यही सोचकर एक रात उसने हरू का छिपकर पीछा किया। खेत में जीते-जागते भेसौण को हरू के साथ खेलता देखकर वह हकी-बकी रह गई। चांचरी की दुष्ट बुद्धि चमकी। वह तेजी से घर की ओर लपकी। चूल्हे से जलती हुई लकड़ी लाकर भेसौण में आग लगा दी। घास फूस और चीथड़ों से बना भेसौण धु-धुकर जलने लगा।

हरू ने भेसौण को जलते देखा, तो उसकी लाठी पकड़कर चीख-चीख कर रोने लगा। विमाता चांचरी अपनी विजय पर अट्टहास करती हुई घर चली गई। उसने हरू की ओर मुड़कर भी नहीं देखा। पूरा भेसौण जलकर राख हो गया। केवल एक लाठी बची थी। हरू लाठी पकड़े-पकड़े रोता हुआ भेसौण की राख के पास ही हार-थककर सो गया। उसका सारा खेल ही समाप्त हो गया था।

धीरे-धीरे रात गहराने लगी। अचानक हरू की नींद टूट गई। उसे लगा, कोई उसे जगा रहा है। लाठी से आज्ञा आ रही थी—'तू रो मत हरू! लाठी ने कहा—'जो जला है वह घासफूस का पुतला था। मैं परी रानी द्वारा दी गई शक्तियों के साथ इस लाठी में आ गया हूँ। अब तू आंसू पीछे। मुझे झाड़ियों के बीच छिपाकर घर चला जा। तेरे पिता हाट से वापस आने



वाले हैं। आज अन्याय का अंत हो जाएगा।'

हरू ने लाठी के कहे अनुसार सारे कार्य किए और घर आकर चुपचाप एक कोने में बैठ गया। विमाता ने उसकी ओर देखा तक नहीं। वह प्रसन्न होकर सगतसिंह के लिए बढ़िया खाना बनाने में जुट गई थी। कुछ देर बाद, थका-हारा सगतसिंह घर लौटा। उसे घर का वातावरण कुछ बदला-बदला-सा नजर आया। हरू एक कोने में उदास बैठा था। भीतर आते ही दुष्ट चांचरी ने हरू की शिकायत करते हुए कहा कि हरू बहुत उपद्रवी हो गया है। उसका बिलकुल कहा नहीं मानता। आज बार-बार मना करने पर भी इसने खेत में खड़े भेसौण पुतले को जला दिया।

पत्नी की बात सुनकर सगतसिंह बहुत क्रोधित हुआ। हरू ने रो-रोकर बार-बार कहा कि भेसौण को उसने नहीं, माँ ने जलाया है। लेकिन सगतसिंह ने उसकी बात नहीं सुनी। वह हरू को घसीटता हुआ, खेत में ले गया। पीछे-पीछे दुष्ट चांचरी भी आ गई। जले हुए भेसौण को दिखा-दिखाकर हरू को कोसने लगी। विशाल भेसौण पुतले की हालत देखकर, सगतसिंह का पारा सातवें आसमान पर चढ़ गया। दुष्ट चांचरी के शब्दों ने आग में घी का काम किया। सगतसिंह क्रोध में आकर, हरू को पीटने के लिए आगे बढ़ा। हरू टौड़कर झाड़ियों में छिपाई भेसौण की लाठी उठा लाया।

हरू ने गरजकर अपने पिता से कहा—'रुक जाइए पिता जी! सच और झूठ का निर्णय आप नहीं, भेसौण की यह लाठी करेगी।' हरू ने लाठी को छोड़ दिया। लाठी हवा में तैरती हुई विमाता के पास पहुंच कर उसकी पिटाई करने लगी।

दुष्ट चांचरी लाठी की मार से चीखकर इधर-उधर भागने लगी। इस दृश्य को देखकर सगतसिंह हक्का-बक्का रह गया। चीखने के साथ ही चांचरी एक पक्षी और कुरूप औरत में बदलने लगी। उसने रोते-रोते सगतसिंह को सच्ची कहानी बता दी। कहानी खत्म होते ही दुष्ट चांचरी काले धुएँ में बदल कर हवा में विलीन हो गई।

नंदन । जून १९९४ । ६०

नंदन

- पहले में
- रजिस्ट्री से भ
- जाएगी।
- एक व्यक्ति क
- सर्वशुद्ध हल न
- पहले की पुर
- अथवा न कर
- पुरस्कार की रा
- बंट दी जाएगी
- निर्णय हर स्थि
- सम्पादक से
- किसी भी तरह
- ज सकता।
- यहां छपे कृप
- स्वीकार की
- सम्पादक, 'न
- हाउस, १८
- दिल्ली-११०
- एक नाम से,
- जाएगी।

संकेत

बाएं से दाएं

१. चल-चल-
२. — की सुद
- रजन !
४. अम्मा, चिं
८. सचमुच-
९. लो, मैं—
११. सिद्धराज,

नियम और शर्तें

- पहेली में १७ वर्ष तक के पाठक भाग ले सकते हैं।
- रजिस्ट्री से भेजी गई कोई भी पूर्ति स्वीकार नहीं की जाएगी।
- एक व्यक्ति को एक ही पुरस्कार मिलेगा।
- सर्वशुद्ध हल न आने पर, दो से अधिक गलतियाँ होने पर, पहेली को पुरस्कार राशि प्रतियोगियों में वितरित करने अथवा न करने का अधिकार सम्पादक को होगा।
- पुरस्कार की राशि गलतियों के अनुपात में प्रतियोगियों में बाँट दी जाएगी। इसका निर्णय सम्पादक करेंगे। उनका निर्णय हर स्थिति में मान्य होगा। किसी तरह की शिकायत सम्पादक से ही की जा सकती है।
- किसी भी तरह का कानूनी दावा, कहीं भी दापर नहीं किया जा सकता।
- यहाँ छपे कृपन को भस्कर, डाक द्वारा भेजी गई पहेली को स्वीकार की जाएगी। भेजने का पता है—
- सम्पादक, 'नंदन' (ज्ञान-पहेली), हिंदुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१
- एक नाम से, पाँच से अधिक पूर्तियाँ स्वीकार नहीं की जाएँगी।

संकेत

बाएं से दाएं

१. चल-चल—, नाव चलाएँ हैया रे हैया।
(राजा/राम)
२. — की सुंदरता की परख तो आप ही कर सकते हैं रजन।
(भाले/भाषा)
४. अम्मा, चिट्ठे को तो बस, हर वक्त—चाहिए।
(चीनी/चीकू)
८. सचमुच,—कितनी सुंदर है।
(रात/रानी)
९. लो, मैं—चला आया सोमदेव।
(भौं/ही)
११. सिद्धराज,—को लेकर तुम्हीं गए थे न।
(सोना/मैना)

१२. कभी खाकर देखो यह मिठाई !

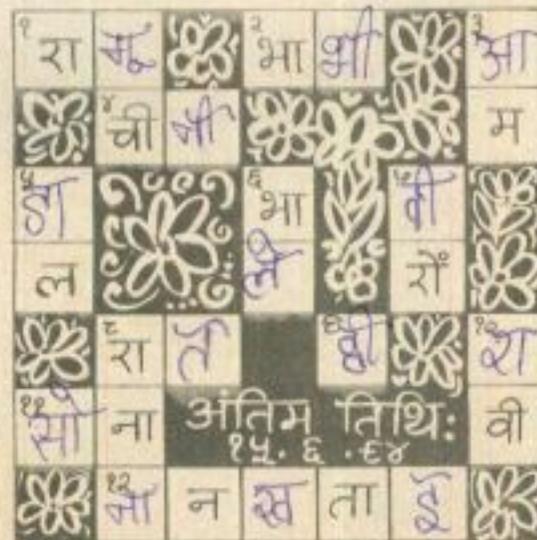
ऊपर से नीचे

३. गरमियों में—के पेड़ को छाया कितनी अच्छी लगती है !
(आम/नाम)
५. उस—पर इतने सितारे जड़े थे कि मैं चकित रह गया।
(डाल/भाल)
६. रंग-रंग के गुलाबों का मेला देखो— !
(भाई/भाभी)
७. उन—की याद हमारे दिल में कभी कम न होगी।
(बोरों/तीरों)
१०. भारत की एक प्रसिद्ध नदी।

नंदन ज्ञान-पहेली : ३०६

नाम राशि भोजन

उम्र ५ पता _____



न. ह. प. ३०६

नंदन । जून १९९४ । ६१



बोले नागराज

—सुनीति

महर्षि कश्यप की पत्नी कद्रू ने अपने सर्प पुत्रों को किसी कार्य की आज्ञा दी। पुत्रों ने उसकी बात नहीं मानी। कद्रू ने नाराज होकर उन्हें शाप दिया—“जाओ तुम कुछ वर्ष बाद सर्पयज्ञ में जलकर भस्म हो जाओगे।”—यह सुनकर सब सर्प बड़े घबराए।

नागराज वासुकि भागे-भागे देवताओं के पास गए। समुद्र मंथन के समय वासुकि को डोरी बनाकर देवताओं ने चौदह रत्न प्राप्त किए थे। इसलिए देवता उन्हें ब्रह्माजी के पास ले गए। ब्रह्माजी ने कुछ देर विचार कर वासुकि को बताया कि ‘सर्पयज्ञ में सर्पों का विनाश जरूर होगा। पर आपकी बहन का पुत्र ही इस यज्ञ को रुकवा देगा।’

उन्हीं दिनों जरत्कारु नाम के एक मुनि थे। जो जंगल में केवल वायु खाकर और पानी पीकर तपस्या कर रहे थे। एक दिन वह ऐसी जगह पहुंचे, जहां कुछ पितर एक गड्ढे में उलटे लटक रहे थे। ऊपर केवल एक छोटी-सी शाखा शेष थी। उसे भी चूहा कुतर रहा था।

जरत्कारु को उनकी यह दशा देखकर बहुत दया आई। उन्होंने उनसे पूछा—“भगवन, आप कौन हैं? इस दशा में क्यों लटक रहे हैं? ऊपर तो अब केवल एक ही पतली डाली बची है। उसे भी चूहा कुतर रहा है। अगर वह कट गई, तो आप निश्चित ही गड्ढे में गिर पड़ेंगे। अगर मैं आपके लिए कुछ कर सकूँ, तो अपना अहोभाग्य मानूंगा। आप कहें, तो मैं अपनी तपस्या का सारा फल आपके दे दूँ।”

पूर्वजों ने कहा—“बेटा, तपस्या की बात होती, तो हमने भी कम तपस्या नहीं की। पर यह तो हमारे वंश की बात है। अब हमारे वंशजों में केवल एक ही बेटा बचा है। वह भी शादी नहीं करता। तुम यह जो चूहा देख रहे हो, यह काल है। चूहा अर्थात् काल जब इसे भी काट देगा, तो हम सभी गड्ढे में गिर पड़ेंगे।”

—“महाभाग! आपके पुत्र का क्या नाम है?”

—“बेटा, हमारे पुत्र का नाम जरत्कारु है। तुम कभी उससे मिलो तो उसे हमारा यह संदेश कह देना!”

जरत्कारु ने हाथ जोड़कर क्षमा मांगी और कहा—“पितरों, मैंने निश्चय किया था इसी प्रकार

तपस्या करते हुए प्राणों का त्याग करूंगा। पर अब मैं विवाह जरूर करूंगा।”

इसके बाद जरत्कार मुनि वन में घूमने लगे। उन्होंने निश्चय किया था — मैं उसी लड़की के साथ विवाह करूंगा जिसका नाम जरत्कार हो। जिसका पालन-पोषण मुझे न करना पड़े। तीसरी बात यह है कि मैं किसी के द्वार पर जाकर लड़की नहीं मांगूंगा।”

जरत्कार मुनि ने जंगल में जाकर घोषणा की — “यहां रहने वाले प्राणों सुनें। मुझे संतान पाने के लिए पत्नी की आवश्यकता है। जिस किसी की भी गुणवती कन्या हो, वह मुझे ब्राह्मण को अपनी लड़की दे दे। उस लड़की का नाम भी जरत्कार होना चाहिए।”

नागराज वासुकि ने भी जरत्कार की घोषणा सुनी। उन्होंने इसी अवसर के लिए अपनी बहन जरत्कार को पाल-पोसकर खूब योग्य बनाया था।

वह अपनी बहन को लेकर जरत्कार की सेवा में उपस्थित हुए। यथा समय दोनों का विवाह हो गया।

दो-तीन वर्ष के बाद जरत्कार फिर से जंगल में चले गए। जाते-जाते पत्नी को आशीर्वाद दे गए कि — “तुम्हारा पुत्र बहुत तेजस्वी और विद्वान होगा।”

जरत्कार के वहां पुत्र हुआ। मामा वासुकि ने उसे गुरुकुल में भेजकर खूब पढ़ाया-लिखाता। उसका नाम था आस्तीक। महाभारत के युद्ध में अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु की मृत्यु हो गई थी। उनके पुत्र थे महाराज परीक्षित, जिनको छोटी-सी गलती के कारण शृंगी ऋषि ने तक्षक सांप से डंसे जाने का शाप दिया।

बहुत वर्षों के बाद महाराज परीक्षित के पुत्र

जनमेजय ने जब तक्षक को क्रूरता और चालाकी के बारे में सुना, तो उन्हें सांपों पर बड़ा गुस्सा आया।

उन्होंने सर्पयज्ञ किया। उसमें हजारों सर्प दिन-प्रतिदिन यज्ञकुंड में गिर-गिरकर भस्म होने लगे।

तब वासुकि ने आस्तीक से प्रार्थना की — “बेटा, इस विनाश को केवल तुम ही रोक सकते हो। ब्रह्माजी ने यही भविष्यवाणी की थी।”

आस्तीक यज्ञ में गए। वहां जाकर उन्होंने सबसे पहले यज्ञ की बड़े सुंदर शब्दों में प्रशंसा की। उसके बाद यज्ञ के पुरोहितों की स्तुति करते हुए कहा कि उनका मंत्रगायन बहुत ही मधुर है। उसके बाद यज्ञ में आनेवाले लोगों की स्तुति की सबसे अंत में महाराज जनमेजय के यज्ञ का खूब गुणगान किया।

आस्तीक ऋषि बहुत विद्वान तथा प्रभावशाली वक्ता थे। उनकी स्तुति भी इतनी मार्मिक थी कि राजा तथा ब्राह्मण सभी गद्गद् हो गए। सब एक स्वर से बोले — “इन्हें इसका पारितोषिक मिलना चाहिए।”

राजा ने कहा — “ऋषिवर, हम आपसे बहुत प्रसन्न हैं। आप जो चाहे मांग लें।”

आस्तीक ने कहा — “महाराज, सज्जन अपने कहे हुए वचनों से कभी नहीं मुकरते। अगर आप मुझसे प्रसन्न हैं, तो कृपा करके यह सर्पयज्ञ बंद करवा दीजिए।”

ऊपर अकाश में तक्षक दिखाई दिया। वह इन्द्र के भवन में छिपा हुआ था। यज्ञ के मंत्रबल से यज्ञ कुंड में गिरने ही वाला था।

आस्तीक ने हाथ बढ़ाकर उसे वहीं रोक दिया। कहा — “ठहर जा।” वह वहीं ठहर गया था। महाराज जनमेजय ने आस्तीक से कहा — “कोई और वर मांग लो।” आस्तीक ने कहा — “महाराज, मुझे धन-संपत्ति किसी वस्तु की आकांक्षा नहीं है। आप यह यज्ञ रुकवा दीजिए। मैं यही मांगता हूँ।”

राजा ने कहा — “तथास्तु।”

इस प्रकार सर्पयज्ञ रुक गया।

खुश होकर मामा वासुकि ने आस्तीक को गले लगा लिया।



चीटू-नीटू

प्यासे को पानी पिलाना पड़ोसियों की
घुण्य होता है, क्यों न मयारियां प्यासी
हम भी... हैं, क्यों न इनकी
प्यास...



थोड़ा दूध और चीनी भी डाल देते हैं,
ताकि कोई हाथ-पांव तो न...



बालटी में पानी समझ कर सास शर्बत
पी गई, अब मटके
में..



मारी बर्फ डाल देते हैं, जो
पिश् दुआएं दे



सुबह से पानी से खेल रहे हो,
एक मटका अपनी आंटी को
भी.. उपकार होगा



वाह! कितना ठंडा, बेठा हाथ, पांव
भी धुला दो और दो लोटे मेरे बदन
पर! भगवान
तुम्हें सुश रसे



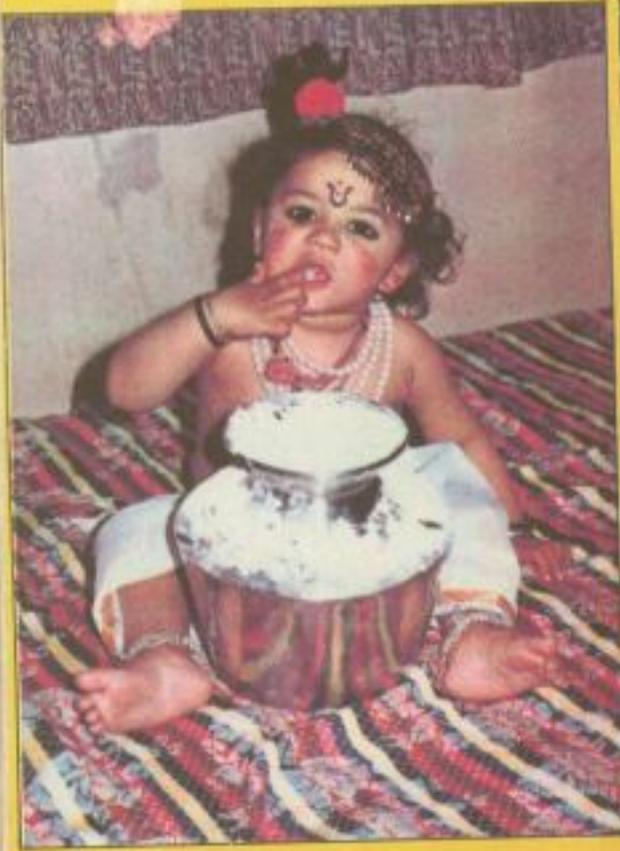
मारा पानी बाट दिया, अब एक
उपकार घरवालों पर भी..



शीर्षक बताइए

मैं नहीं माखन खायो : इस चित्र को ध्यान से देखिए। इस चित्र के ऐसे ही अनेक शीर्षक हो सकते हैं। आप भी सोचिए कोई सुंदर-सा छोटा शीर्षक। उसे पोस्टकार्ड पर लिखकर १५ जून, '९४ तक शीर्षक बताइए, नंदन मासिक, हिन्दुस्तान टाइम्स, १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ के पते पर भेज दीजिए। चुने गए शीर्षकों पर नकद पुरस्कार दिए जाएंगे।

परिणाम : अगस्त '९४ अंक



पुरस्कृत चित्र

फिलसीता द्वारा जेम्स मिज, सी-१३५, सर्वोदय एन्क्लेव, नई दिल्ली-११००१७

इनके चित्र भी पसंद आए—
संतोषकुमार, मुजफ्फरपुर;
गौरीकुमारी, नई दिल्ली-१८;
रसिका पुन्डीर, नानौता,
सहारनपुर; रूपेश विश्वनाथ,
फरीदाबाद; सौरभ गर्ग,
चकगुजरान, होशियारपुर (पं.)।

नंदन । जून १९९४ । ६६



पत्र मिला

□ कपिलदेव का चित्र इस अंक की सबसे बड़ी उपलब्धि थी। 'राजमाता', 'तीन वचन', 'पारसमणि', 'महाबली बेटा' तथा 'पहली रोटी' कहानियां बहुत अच्छी लगीं। 'तेनालीराम' के तो क्या कहने! —जयदीप काजल, नारनौद (हरि.)

□ हमें 'नंदन' का बहुत इंतजार करना पड़ता है, तो बहुत गुस्सा आता है। लेकिन पत्रिका मिलते ही गुस्सा झूमतर हो जाता है। यह हम बच्चों की सर्वश्रेष्ठ पत्रिका है।

—कुंदनकुमार, भूपतिपुर (बिहार)

□ अप्रैल अंक बहुत ही रोचक और ज्ञानवर्धक लगा। 'तीन वचन', 'हार का उपहार' तथा 'खुरी का दिन' कहानियां बहुत बढ़िया थीं। गेंदबाजी में विश्व कीर्तिमान बनाने वाले क्रिकेट खिलाड़ी कपिलदेव का चित्र अच्छा लगा।

—धर्मप्रकाश सिंहल, हिंडौन सिटी

□ इस अंक को एक बार पढ़ने के बाद दोबारा पढ़ने की चाहत रहती है। कहानियों में 'खुरी का दिन' बेजोड़ थी। कपिलदेव का चित्र छापकर आपने इस महान खिलाड़ी को सम्मान प्रदान किया है।

—मनीष सांखला, गंगरार (राज.)

□ मेरे मामी-पापा ने मुझसे 'नंदन' पढ़ने को कहा। मुझे यह पत्रिका बेहद अच्छी लगी। यह पत्रिका मनोरंजन और ज्ञान से भरपूर है। इसकी सभी रचनाएं मनमोहक होती हैं।

—राजू बादल, गुवाहटी (असम)

□ 'दंड को दंड' और 'पिकनिक' चित्रकथाएं मजेदार लगीं। 'हर दिन एक' और 'पहली रोटी' कहानियां बहुत शिक्षाप्रद लगीं।

—विनय मिश्र, नौबस्ता, कानपुर

□ आसमान का चांद रोशनी देता है अपार उसी तरह नंदन हमें कहानी देता हजार, हमें भी 'नंदन' प्यार है जो शिक्षा देता अजार, हर महीने 'नंदन' से आती खुशियों की बाँछार।

—दयानंद पुंडोरा, फरीदाबाद

□ यह पत्रिका किशोरों का अच्छा मार्गदर्शन करती है। आजकल बाजार में घटिया और सस्ते साहित्य की पुस्तकें छाई हुई हैं। ऐसे में 'नंदन' में उच्च कोटि का साहित्य पढ़ने को मिलता है।

—प्रेमशंकर, खगड़िया

□ 'नंदन' नियमित रूप से पढ़ता हूँ। इसे पढ़कर लगता है जैसे इंद्र के बगैचे में टहल रहा होऊँ।

—वाचस्पति मणि त्रिपाठी, महाराजगंज

□ उर्दू भाषी होते हुए भी 'नंदन' बहुत सौक से पढ़ता हूँ। मुझे अप्रैल अंक बहुत पसंद आया। 'पारसमणि', 'पहली रोटी' तथा 'पिजाड़े की तलवार' कहानियां विशेष पसंद आईं।

—मो. फाहद अंजुम, बिहारशरीफ

इनके पत्र भी उल्लेखनीय रहे : अमित सिंघल, बिसवां (उ. प्र.); संतोष गुप्ता, रायगढ़ (महा.); महेंद्र डामाणी, चित्तौड़गढ़।



आगामी अंक : परी-कथा विशेषांक

- देश-विदेश की बेजोड़ परी कथाएं
- सराय वाले की शर्त यही थी कि तीर्थ यात्री कहानियां सुनाएंगे—कैसी हैं पांच सौ साल पुरानी कथाएं ?
- पढ़िए—विश्व की महान कृतियां 'केंटरबरी टेल्स' में
- आरसीप्रसाद सिंह की मनभावन कविताएं—कवि एक रंग अनेक में
- कानपुर में रंग कलाश छलकाए बच्चों ने
- नंदन चित्रकला प्रतियोगिता के चुने हुए चित्र
- अधिक पृष्ठ—अधिक कहानियां—मूल्य वही

नंदन । जून १९९४ । ४७

शीर्षक बताइए परिणाम

'नंदन' अप्रैल' ९४ में छपे चित्र पर पुरस्कार के लिए ये शीर्षक चुने गए-



- इसमें धूमं दुनिया सारी, घेरी गाड़ी सबसे प्यारी ।
—धीरेंद्र वर्मा, टाइप III/७७ सेक्टर-१ बी. एच. ई. एल. टाउनशिप, झंसे ।
साइकिल पर मैं होकर सवार, चली अपनी गुड़िया के द्वार ।
—कुमारी पारमिता सुमंतभद्र, पो. बॉक्स नं. १२, चिचवड़, पूना घग्गी ने साइकिल दिलवाई, मैंने उस पर दौड़ लगाई ।
—शुभम् श्रीवास्तव, एस. के. श्रीवास्तव, असम काटन मिल, पो. चारद्वार, जि. शोणितपुर (असम) ।
कहाँ जाऊँ ? समझ न पाऊँ ।
—सौरभ, विनोद सिंह, सहायक निदेशक सामाजिक सुरक्षा, ज्ञान कालोनी, औरंगाबाद (वि.) ।
इन्के शीर्षक भी पसंद आए : मीनकश्री वरुण, बिजनौर, (उ. प्र.) ; अर्चि माधुर, गौतमनगर, नई दिल्ली ; रमेशचाम जोशी, चुरू (राज.) ; निर्मलसिंह सैनी, मोहाली, (पं.) ; विश्वकर्मा, गुडगांव (हरि.) ।

आप कितने बुद्धिमान हैं : उत्तर

- बाई दीवार पर चित्र को टांगने वाली डोरी और कील दिखाई दे रही है ।
- टेलीफोन में डायल नहीं है ।
- नर्स के बाल पीछे से अलग तरह के हैं ।
- डाक्टर का दायाँ पैर अधिक घूमा हुआ है ।
- कुर्सी में तीन पैडल लगे हैं ।
- उस पर बैठे मरीज का नैपकिन लम्बा है ।
- दाएं कोने में रखी बड़ी शीशी पर डाट नहीं है ।
- आर्क लैम्प का एक भाग काला है ।
- ड्रिल मशीन का सिरा घूमा हुआ है ।
- टोप टांगने की एक खूटी गायब है ।

नंदन । जून १९९४ । ६८

पुरस्कृत कथाएं

पेड़ बोला

असम चाय के बागानों से भरा है । आजादी के पहले बागानों के मालिक अंग्रेज थे । उनके मैनेजर भी अंग्रेज होते थे । आजादी के बाद भारतीयों ने वे बागान खरीद लिए । भारतीय प्रबंधकों ने बागानों का कार्यभार संभाला ।

बरपेटा चाय बागान का प्रबंधक भूपेन गोगोई दौमापुर का रहने वाला था । उसका एक लड़का आशु और दो लड़कियां मीना और मीनी थीं । तीनों बच्चे बड़े होशियार थे । स्कूल से आने के बाद वे अक्सर पिता जी के साथ चाय बागान जाते थे । वे खूब घूमते और मजदूरों को चाय की पत्ती तोड़ते देखा करते ।

चाय के बागानों से लगे जंगल में तरह-तरह के पेड़ भरे पड़े थे । जब से शहरों में पक्के मकान बनने शुरू हुए, इमारती लकड़ियों की कीमत बहुत बढ़ गई थी । ठेकेदारों के हाथ में जंगल आने से खूब कटाई हो रही थी और खूबसूरत जंगल उजड़ने लगे थे ।

बरपेटा से लगे जंगल को भी प्रबंधक गोगोई ठेकेदारों को बेचने की सोच रहा था । एक दिन तीनों बच्चे स्कूल से आकर जंगल की ओर घूमने निकल गए । अचानक उनकी नजर एक अनोखे पेड़ पर पड़ी । आदमी के हाथ की तरह उसके पत्तों की बनावट थी । वे दोनों हाथ जोड़े कुछ कह रहे थे । बच्चे उस पेड़ के नीचे जा पहुंचे । एक चिड़िया उस पेड़ पर बैठी थी । उसने कहना शुरू किया कि पेड़ों को न काटने दे । पेड़ों को भी दर्द होता है । वे फल-फूल और छाया देते हैं । फल बहुत मीठे और स्वादिष्ट होते हैं ।

यह सुनते ही तीनों बच्चे एक साथ कह उठे कि वे पेड़ नहीं काटने देंगे । उन्होंने अपने पिता से कहकर पेड़ों का जंगल ठेकेदार के हाथ बेचने से रुकवा दिया ।

आज बरपेटा के वे जंगल और गोगोई का वह चाय बागान उस क्षेत्र के सबसे खूबसूरत स्थानों में से एक है ।

—कृ. जोशलिन, जोरहाट



श्यामनगर में

दयालु

और छोटा ल

करते थे । इन

अपनी पत्नी से

जाने से वह प

दौर पड़ जाने

बहन-भाई बह

थे । वहां उन्

वे परेशान ह

बड़ी बा

थोड़ा बहुत रा

के यहां जाने

रहती थी जो

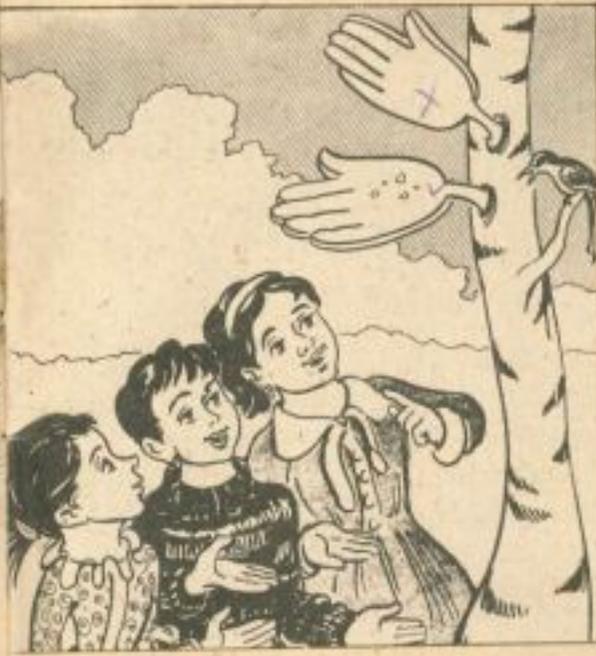
थोड़ा-सा घ

था । उस जं

को बहुत भूख

पेड़ के नीचे

सुबह



दयालु चिड़िया

श्यामनगर में एक धनी सेठ रहता था। वह बहुत दयालु था। उसके तीन बच्चे थे। सोना-मोना और छोटा लड़का जोन। ये तीनों बहुत प्रेम से रहा करते थे। इनकी मां की मृत्यु हो चुकी थी। सेठ को अपनी पत्नी से बहुत सहयोग मिलता था। उसके चले जाने से वह परेशान रहने लगा। एक दिन, दिल का दौरा पड़ जाने पर वह भी स्वर्ग सिंघार गया। तीनों बहन-भाई बहुत दुखी हुए। अब वे बिलकुल अकेले थे। वहां उनका कोई नजदीकी रिश्तेदार भी नहीं था। वे परेशान हुए कि किससे सहायता मांगें।

बड़ी बहन सोना अपनी नानी के यहां जाने का थोड़ा बहुत रास्ता जानती थी। अतः उन तीनों ने नानी के यहां जाने का निश्चय किया। उनकी नानी रामगढ़ में रहती थी जो कि श्यामनगर से बहुत दूर था। वे थोड़ा-सा धन लेकर चल पड़े। रास्ते में जंगल पड़ता था। उस जंगल में बहुत अनोखे पेड़ लगे थे। बच्चों को बहुत भूख लगी थी। वे थके हुए भी थे। वे एक पेड़ के नीचे बैठ गए और खा-पीकर वहीं लेट गए।

सुबह उठकर चले, तो उसी जंगल में एक बहुत

अजीब पेड़ देखा। जो बहुत लम्बा था। उस पर केवल एक शाख थी। पत्ती एक भी नहीं थी। शाख के अगले हिस्से में पेड़ पर दो हाथ थे। उन्होंने इसी पेड़ की शाख पर एक चिड़िया को मनुष्य की बोली में बोलते हुए देखा। वे तीनों हैरान थे और दुखी भी। इसलिए रोने लगे।

एक चिड़िया ने उनके दुखी होने का कारण पूछा। उन्होंने सारी बात बता दी। चिड़िया ने कहा कि तुम दुखी न हो। तुम पेड़ के इन हाथों में से एक हाथ पर तीन बड़े तथा दो छोटे पत्थर रख दो। ऐसा करने के बाद तुम अपनी नाक की सोंध में चलना। वहाँ तुम्हें एक विमान मिलेगा, जो तुम्हें तुम्हारी नानी के यहाँ पहुँचा देगा। तीनों ने उस पेड़ के एक हाथ पर उसी प्रकार कंकड़ रखे जैसे चिड़िया ने कहा था। फिर चिड़िया को अपने साथ लेकर चल दिए। बहुत दूर चलने के बाद उन्हें विमान मिला। चिड़िया की वजह से वे अपनी नानी के पास तक पहुँच सके थे। चिड़िया उनकी पत्नी सहेली बन गई थी।

—पूजा चौहान, सहारनपुर

इनकी कहानियाँ भी पसंद की गईं : मीनू मंत्ररी, जमालपुर; स्वाति कक्कड़, लखनऊ; रूपिंदर कौर, भुवनेश्वर।

घर बैठे नंदन मंगाइय

देश में

वार्षिक—५० रुपए; दो वर्ष का—९५ रुपए

विदेश में

भूटान, नेपाल, : वार्षिक

वायु सेवा से—२४० रुपए / ५ पौंड या ९.५० डॉलर

अन्य सभी देशों के लिए : वार्षिक

वायु सेवा से—३७५ रुपए / ८ पौंड या १५ डॉलर

शुल्क भेजने का पता— 'प्रसार व्यवस्थापक, 'नंदन', हिन्दुस्तान टाइम्स लि., १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१

नंदन । जून १९९४ । ६९

पधारो प्रभु

—डॉ. एम. एस. अग्रवाल

रामभक्त राजा सुरथ कुंडलपुर के राजा थे। जो कोई भी उनके पास आता, उससे धर्म और जीवन के बारे में अनेक प्रश्न पूछते। इससे प्रजा सही राह पर चलती थी।

एक बार स्वयं यमराज जटाधारी मुनि का रूप बनाकर उनकी भक्ति की परीक्षा लेने के लिए आए। दरबार में सभी के गले में तुलसी-माला पड़ी देखकर उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई। राजा ने तपस्वी मुनि को आदर से उच्च आसन दिया। प्रणाम करके उन्हें हरि की कथा सुनाने के लिए कहा।

मुनि ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा—“कैसी हरि कथा? तुम क्या मूर्खों जैसी बात करते हो? संसार में कर्म ही प्रधान है। जो जैसा करता है, वैसा फल प्राप्त करता है। फिर व्यर्थ हरि-जप में समय क्यों नष्ट करते हो?”

रामभक्त राजा सुरथ को मुनि की बात सुनकर दुःख हुआ। नम्रता पूर्वक बोले—“प्रभु, आप भगवान की निंदा क्यों करते हैं? ध्रुव और प्रह्लाद की कथा आपने सुनी होगी। फिर भी आप ऐसी बातें कर रहे हैं?”

राजा की भक्ति से प्रसन्न होकर यमराज अपने असली रूप में आ गए। उनसे वरदान मांगने को कहा। राजा सुरथ बोले—“जब तक श्रीराम अवतार लेकर यहां न पधारे, तब तक मेरी मृत्यु न हो।”

“तथास्तु!”—कहकर यमराज अंतर्धान हो गए।

राजा सुरथ को श्रीराम के अयोध्या में जन्म का समाचार मिल गया था। मिथिला में धनुष तोड़कर सीता-विवाह, वनवास और रावण वध आदि समाचार भी मिल गए थे। लेकिन मन में श्रीराम के अपने राज्य में दर्शन करने की इच्छा बहुत प्रबल हो चली थी।

दूतों ने समाचार दिया कि अयोध्यापति श्रीराम का अश्वमेध का घोड़ा उनके राज्य में प्रवेश कर गया

है। राजा को यह समाचार सुनकर आनंद अनुभव हुआ। सेवकों को उन्होंने अश्वमेध का घोड़ा पकड़ने का आदेश दे दिया। राजा सुरथ के दस पुत्र युद्ध क्षेत्र में आ डटे। शत्रु की विशाल सेना के नायक अंगद राजा सुरथ के पास गए और उनसे घोड़ा छोड़ देने के लिए कहा। राजा सुरथ बोले—“आप जो कह रहे हैं वह ठीक है। अयोध्या के प्रताप को कौन नहीं जानता? मेरा राज्य छोटा है लेकिन युद्ध के भय से मैं पीछे नहीं हटूंगा। दयामय राम के भरोसे मैं इस युद्ध के लिए तैयार हूँ। जब तक प्रभु स्वयं मेरे राज्य में नहीं आएंगे, तब तक मैं अपने परिवार सहित युद्ध करूंगा!”

अंगद इन बातों को सुनकर लौट गए। भयंकर युद्ध हुआ। इस युद्ध में शत्रु के साथ पुष्कल, अंगद, हनुमान आदि थे। राजा सुरथ ने अपने पराक्रम से सभी को बांध दिया। बंदी अवस्था में हनुमानजी ने श्रीराम का स्मरण किया। वह पुष्पक विमान में बैठकर भरत और लक्ष्मण सहित वहां आ गए। अनेक ऋषिगण भी इकट्ठे हो गए थे।

राजा सुरथ प्रभु श्रीराम को देखकर गद्गद हो उठे और उन्हें प्रणाम किया। श्रीराम ने प्रसन्न होकर उन्हें अपना चतुर्भुज रूप दिखाया और हृदय से लगा लिया।

“प्रभु, मैंने बहुत बड़ा अपराध किया। लेकिन पहले ही मैंने अंगद को सचेत कर दिया था कि जब तक प्रभु राम मेरे राज्य में नहीं आएंगे, तब तक मैं युद्ध करूंगा।”—राजा सुरथ ने हाथ जोड़कर कहा।

प्रभु मुसकराए। उन्होंने राजा सुरथ के शौर्य की प्रशंसा की।

चौथे दिन राजा सुरथ ने अपना राज्य अपने पुत्र चम्पक को सौंप दिया। स्वयं शत्रु की सेना के साथ अश्व की रक्षा के लिए चल दिए। ●

पत्र - मित्र

सम्पादक, 'नंदन', नई दिल्ली-१

नाम _____ आपु _____
 पूरा पता _____
 रुचि _____

पुस्तक पढ़ने और लेखन में रुचि :

१. रोहित मीना, १६ वर्ष, २२०, नसरुल्ला, खुर्जा, बुलंदशहर; २. राजेशकुमार पांडेय, १४, एम/३६-हरभू हाउसिंग कालोनी, रांची; ३. विकास गोयल, १७, १९१, खुडबुडा मुहल्ला, देहरादून; ४. अनेद सेठिया, १३, मदनलाल-अमरचंद सेठिया, सुजानगढ़, चुरू (राज.); ५. प्रमोद गुप्ता, १५, एच १५१ जे. जे. कालोनी, बखीरपुर, दिल्ली; ६. संजयकुमार अग्रवाल, १७, विश्वनाथ अग्रवाल, पो. बगोदर, जिला गिरिडीह (बि.); ७. गौरव अग्रवाल, १२, ४७बी, पोकेट ४ मयूर विहार फेज-१, दिल्ली; ८. यामिनी जैन, १०, सी ७२ वैशाली कामप्लेक्स, गढ़ रोड, मेरठ; ९. पूनमकुमारी जैन, १६, खेमराज नाइट्य, मुरली गंज, मधेपुरा (बि.); १०. प्रवीणकुमार मिश्र, १२, आदर्श फेज एंड हाईवेयर स्टोर, निकट तेल टैंकी, फेकना, बलिया; ११. रवि चंचल, बिदेधर सिंह, प्रा.+पो. खसरही, वाया पातेपुर, जि. वैशाली; १२. उपेंद्रकुमार यादव, १४, प्रा. दौलतपुर, पो. मुइठहीपुर, जि. फिरोजाबाद; १३. सुरेंद्रसोहन, ११, विपिनलाल कर्ण, प्रा.+पो. चतरा, जि. मधुबनी; १४. विकास सैनी, १६, म. नं. ८६, भगवतपुर, रेत काली गली, मेरठ; १५. मनीषकुमार, १३, एन. पी. सिंह (ए. टी.), जी. ए. उच्च विद्यालय, अरवल, जहानाबाद; १६. बृजेश यादव, १६, शांति निकेतन, प्रा.+पो. रसूलपुर, जौनपुर; १७. रामनारायण विश्वकर्मा, १६, प्रा.-माने गाँव, पो. मेख, जि. नरसिंहपुर (म.प्र.); १८. अमितकुमार, १६, डा. विश्वनाथ साहा, बी.सी.ई. सदीर, भागलपुर; १९. भावना माहेश्वरी, १६, मुहल्ला दीवान परमानंद, नजीबाबाद, जि. बिजनौर; २०. केशव चक्रवर्ती, १५, म.नं. १७२, टाडप-२ सी. आर. पी. एफ. दुर्गापुर; २१. मधुकुमारी, १३, बाबूलाल झा, श्रीकृष्णनगर, मोतिहारी; २२. दिनेशकुमार झा १५, अमरकांत झा, प्रा.+पो. भागा, जि. धनबाद; २३. अमरदीपकुमार, १७, खगेंद्रनारायण

झा, अमला टोला, मधुबनी, पूर्णिया; २४. विनयकुमार साब, १६, नदी बाजार, साहागंज, हुगली (प. बं.); २५. बसंतकुमार निगम, १५, ४७०, सती तालाब, उन्नाव; २६. शशिभूषण प्रसाद, १६, रामलखन प्रसाद, रोड नं. १३, राजेंद्रनगर, पटना; २७. विजया मनोज साहु, १४, दिवाकर पैकुजी कथरकर, तीसरा बस स्टॉप, गोपालनगर, नागपुर (महा.); २८. दिलीप महतो, १२, कल्याणनगर (टी.बी.सी.) म. नं. १५९, धनबाद; २९. सुनील सिंह, १७, १८६३ टाईप-१, सैक्टर २, न्यू व्हीकल इस्टेट, जबलपुर; ३०. सञ्जनकुमार सिन्हा, १४, रंजन वर्मा, धिन्नगुप्तनगर, खगड़िया।

खेल, संगीत और चित्रकला में रुचि :

१. भवेशकुमार गुप्ता, १६ वर्ष, महेशप्रसाद-भवेशकुमार, अस्थायी, नालंदा; २. ललित शर्मा, १५, १०४/१६४९ बलदेवनगर, अम्बाला; ३. रंजिता वर्मा, १२, विजय वर्मा, ८१, भगतसिंह नगर, कोच, जि. जालौन; ४. निधि गर्ग, १२, बी.-३/४०, अशोक विहार, फेज-२, दिल्ली; ५. ज्योत्सना गुप्ता, १४, रामदास गुप्ता, बहादुर एंड कम्पनी, पुखरावा, कानपुर; ६. विवेकवरुण, १०, डा. पी. एन. झा, धरमपुर, समस्तीपुर; ७. नेहा अग्रवाल, १३, नटवर बंगला स्टोर, मु. दुली, फिरोजाबाद; ८. पुरुषोत्तम नेंदर धाकड़, १०, दामोदर धाकड़, प्रा. पांचौर, पो. रामपुर (टैक) जि. मुन (म.प्र.); ९. चंद्रप्रकाश, १५, चंद्रदेवप्रसाद, अटा कुट्टी मिल, राजेंद्र आश्रम, कुशावाहा कालोनी, गया; १०. प्रदीप अग्रवाल, १५, अम्बिका वस्त्रालय, मेन रोड-१२, विराटनगर, (नेपाल); ११. पुनीतकुमार, १२, ७/११ चक्रवर्ती मुहल्ला, दयानंद गली, कुरुक्षेत्र (हरि.); १२. मुकेशकुमार चौधरी, १३, पी. एन. टी. कालोनी, १३/९ बोकरो स्टील सिटी; १३. वीरू चौधरी, १४, उपरलावास, प्रा.+पो. भावी, जि. जोधपुर; १४. रीतुकुमारी, १३, कौशलकिशोर यादव, प्रा.+पो. सैदपुर, वाया मानसी, जि. खगड़िया; १४. पुरूसिंह राजपुरोहित, १६, बबूसिंह राजपुरोहित, पो. गादाना वाया-रानावास, जि. पाली; १५. श्वेताकुमारी, १२, रेणुबिहारी लाल, सदर बाजार, दानापुर (बि.); १६. बंटीकुमार, १५, ठाकुरप्रसाद-ओमप्रकाश, खुदरा बख निकेतन, कृष्ण कटरा, सिवान; १७. सत्यप्रकाश, ८, सिद्धेश्वर मलिक, मलिक निवास, गंगजला, वार्ड-१३, सहरसा; १८. रवीराचंद्र रस्तोगी, १३, कमलकृष्ण रस्तोगी, जी. टी. रोड, सक्ती, जि. भभुआ; १९. शोहेल, १२, शोएब अंजाना, तीन पहाड़, साहेबगंज; २०. सतीशकुमार, १५, बलुआ चौक, मोतिहारी निकट चित्र मंदिर टाकीज, पूर्वी चम्पारण।

टी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेंद्र प्रसाद झाए हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेम, १८-२०, कन्दूबा

गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ से मुद्रित तथा प्रकाशित।

कार्यकारी अध्यक्ष : नरेश मोहन